@NewsRotary
/RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

February 2018

Vol.35, Issue 8 Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

Rotary

सचमुच अंतरराष्ट्रीय

एक आई ए क्षण

ताइवान में रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष बेरी रेसिन और पत्नी एस्थर (छाता पकड़े हुए), कोरिना हुआंग (चरम दाएं) और अन्य प्रतिनिधियों के साथ अंतरराष्ट्रीय असेंबली में।

विषयसूची

12 भारतीय क्रिकेट के फैशन गुरु और आईडिया वाले बाबा

मंडल 3131 सम्मेलन में आये ज़हीर खान और युवराज सिंह के साथ एक दिलचस्प बातचीत।

20 पैसा कभी मेरी प्राथमिकता नहीं

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेट्ज़ेल के साथ एक साक्षात्कार।

32 सतत नेतृत्व सुनिश्चित करें

के एल जोन इंस्टीट्यूट में रो ई निदेशक जॉन सी मेथ्यूस ने GETS सत्र में डीजीईयों को कुछ बहुमूल्य सुझाव दिए।

28 अंचल 4 & 5 टीआरएफ़ के शीर्ष 9 में सबसे ऊपर

के एल जोन संस्थान में फाउंडेशन संगोष्ठी का सारांश।

35 रोटरी ने मैमोग्राफी मोबाइल का निर्माण किया

रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन के कैंसर से महिलाओं को बचाने का प्रयास।

36 मेरा रोटरी एक रोटरी

पुणे के रोटेरियनों द्वारा देशभर की कार रैली पर एक लेख।

48 साइकिल चलाते हुए सशक्तिकरण की राह पर

रोटरी क्लब पुणे शिवजननगर के रोटेरियन लड़कियों को अपनी खुद की साइकिल पर स्कूल जाने की प्रेरणा देते हैं।

70 भावनाओं की धुंध को छंट जाने दो

पता करें कि कैसे आप आंतरिक शांति प्राप्त कर सकते हैं और अपनी असुरक्षाओं से कैसे ऊपर उठ सकते हैं।

52 हम्पी के विस्मयकारी खंडहर

विजयनगर की राजधानी की समृद्धि का पता लगाते एक दूसरे युग में चलिए।

कवर पर : मंडल 3202 के डीजीई ई के उम्मेर इंटरनेशनल असेंबली में अन्य प्रतिनिधियों के साथ।

चित्र : मोनिका लोजिंस्का / आरआई

ऊषा साबू द्वारा निर्भीक और सुस्पष्ट टिप्पणी

मेरे सामने जनवरी अंक है और मैं प्रकाशन की नियमितता, विषयों का चुनाव, व्याख्या, समग्र रूप-रेखा और प्रस्तुतीकरण से प्रभावित हूँ। हालाँकि सभी लेख पढ़ने योग्य है, फिर भी रशीदा भगत द्वारा लिखा गया लेख *डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस से तड़क-भड़क और शोबाजी को निकाल दूर करें* शानदार है। यही बात रोटेरियन, रोटरी बैठकों/समारोह के अंदर और बाहर फुसफुसाते रहते है। इसे अपने लेख में शामिल करना लेखिका की निर्भीकता को प्रदर्शित करता है। हमें ऊषा साबू की टिप्पणी पर ध्यान देते हुए उनकी कही बातों को अपनाना चाहिए। रोटरी की बैठकों में जिस प्रकार की फ़िज़ूलखर्ची और दिखावा होता है उसे सादगी और सेवा-उन्मुखीकरण से प्रतिस्थापित करना चाहिए, केवल शब्दों में ही नहीं व्यव्हार में भी।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम समुदाय की सहायता करने वाला एक सेवा संगठन है। संपादक और उनकी टीम को बधाइयाँ।

सी के सरदना,

रोटरी क्लब भोपाल मिडटाउन - मंडल 3040

एक गैर-रोटेरियन और PRIP राजेन्द्र साबू की पत्नी ऊषा साबू द्वारा पिछले 57 वर्षों से किये जा रहे सेवा कार्यों की मैं सराहना करता हूँ। उन्होंने मंडल बैठकों में होने वाले फ़िज़ूलखर्च और दिखावे को ईमानदारी और खुले दिल से स्वीकार किया, और दिवाली की पूर्वसंध्या पर भारतीय सैनिकों को मिठाई भेजकर एक महान कार्य किया। 82 वर्ष की उम्र में भी, उनके अंदर मानवता की सेवा करने का ज़ज्बा है। मैडम ऊषा साबू को सलाम।

डॉ डी हरीश्चन्द्र रामा

रोटरी क्लब अनंतपुर - मंडल 3160

आत्मविश्लेषण का समय

भारत के सभी रोटेरियनों को जनवरी अंक के लेख *बातचीत दिल खोल के* को जरूर पढ़ना चाहिए क्योंकि उसमें चर्चित विषय गंभीर और निराशाजनक है। यह शर्म की बात है कि अब भी रोटरी क्लब दंड से बचने के लिए सदस्यता की गलत जानकारी देने का सहारा ले रहे है। साथ ही, रोई द्वारा लाए गए अनेक बदलावों के बावजूद भी मंडल गवर्नरों के चुनाव पैसे की ताकत और बड़े-बड़े वादों के साथ लड़े जाते है। PRIP राजेन्द्र साबू कहते है, इस व्यव्हार के परिणामस्वरूप भारतीय रोटेरियनों द्वारा किये गए अच्छे कार्य लुप्त हो जाते है। मंडल कार्यक्रम - PETS, -SETS, आदि - बाहर आयोजित किये जाते है, यहाँ तक कि विदेशों में भी, तो ये अध्यक्षों और यात्रा के लिए निर्वाचित सचिवों पर अत्यधिक वित्तीय दबाव डालते है। इसी कारण रोटेरियन अध्यक्ष या सचिव का पद लेने से कतराते है।

साथ ही, कई मंडल चिकने काग़ज वाली 500 पन्नों की एक बड़ी डायरेक्टरी (कभी-कभी दो अंको में) प्रकाशित करते है। AGs और अध्यक्षों को मदद लेनी पड़ती है। आज के इस कागज़ रहित संचार के ज़माने में यह एक बड़ी बर्बादी है। मंडल की एक अच्छी वेबसाइट में यह सारी जानकारी आ सकती है। DDFs के इस्तेमाल को लेकर कोई पारदर्शिता नहीं है, और टीआरएफ को इस मामले की जांच करनी चाहिए।

आर शिवरामकृष्णन

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम नार्थ - मंडल 3211

कुशलतापूर्वक असाधारण सम्पादकीय

आपके जनवरी अंक, जिसे एक जादुई बक्सा भी कहा जा सकता है के लिए मेरी दिल से शुभकामनाएं। इसमें सूक्ष्मता के साथ कई संदेशों को सजाया गया है, जिसमें शीर्ष रोटेरियनों के कथन भी शामिल है जो दिमाग को हिला कर रख देने वाले है। ''शिकायत करने के लिए हमारे द्वारा लिखे गए पत्र और उसकी प्रतियों को सभी को भेजने की हमारी आदत पर हमें अंकुश लगाना चाहिए।'' इसकी बजाए, हमें साइबर मार्ग का इस्तेमाल किये बिना सम्मानित ढंग से समस्याओं का समाधान ढूंढना चाहिए।

सदस्यता आंकड़े बताने में की गई बेईमानी और महिला व्यवसायी एवं पेशेवर नेतृत्वकर्ताओं का अभाव, कुछ ऐसे मामले है जिनको प्राथमिकता मिलनी चाहिए। चार-मार्ग परीक्षण कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे दीवार पर टांग दिया जाए, रोई अध्यक्ष ने समुचित रूप से कहा।

वी के बंसल

रोटरी क्लब दिल्ली अपटाउन - मंडल 3012

जर्सी सिटी की अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के साथ मेरे क्लब का कवरेज शानदार था। लेख *वैश्विक अनुदान परियोजना स्कूलों का रूपांतरण करती है* रोटरी क्लब जर्सी सिटी की, भारत में उनकी प्रतिष्ठित परियोजना का हमारे द्वारा ध्यान रखे जाने के लिए हमारी तारीफ करने में मदद करेगा। मैगज़ीन को इतनी सावधानीपूर्वक प्रकाशित करने के लिए मैं *रोटरी समाचार* की प्रशंसा करता हूँ।

प्रदीप वाघ

रोटरी क्लब पुणे शिवाजी नगर - मंडल 3131

रोई निदेशक सी भास्कर का सन्देश - *चलिए अपने पेशे द्वारा सेवा करें* - आंखें खोल देने वाला है, खासतौर से उन लोगों के लिए जो जल्द ही सेवानिवृत्त होने जा रहे है, कि कैसे सेवानिवृत्ति के बाद के जीवन के दौरान क्रियाशील रहा जाए। 76 वर्षीय कल्याणसुन्दरम का उदाहरण सेवा के उदाहरणों में अपवाद है, जिन्होंने अपनी संपूर्ण कमाई और रु 30 करोड़ की पुरस्कार राशी अनाथों के कल्याण के लिए दान कर दी। जनवरी अंक के सभी लेख, खासतौर से डिस्ट्रिक्ट कांफ्रेंस से तड़क-भड़क और शोबाजी निकाल दूर करें और नेतृत्व पर साबू के दस मुख्य सन्देश पढ़ने योग्य थे। पत्रिका के स्टैण्डर्ड को बरकरार रखने के लिए टीम रोटरी न्यूज़ को बधाइयाँ।

एम टी फिलिप,

रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

मैं यह जानकर खुश हूँ कि के एल इंस्टिट्यूट में GETS के सत्र सुनियोजित थे और पीडीजी सैम मोव्वा के नेतृत्व में संचालित किये गए थे। उन्होंने कहा कि रोई निदेशक सी भास्कर इस प्रशिक्षण चक्र को मंडल स्तर पर ज़ारी रखना चाहते है। सैम और मंडल 3020 से उनकी टीम को बधाइयाँ और भास्कर एवं समारोह के अध्यक्ष आर. थीनाचंद्रण द्वारा के एल इंस्टिट्यूट को एक बड़ी सफलता बनाने के लिए सलाम।

एन जगथीसन

रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

छोटे क्लबों को अधिक मजबूती

एक सफल नेतृत्वकर्ता में तीन विशेषताएं होनी चाहिए - नियोजन, निरीक्षण और व्यक्तिगत योगदान। पाठक इस बात से सहमत होंगे कि रशीदा भगत में ये सभी खूबियाँ है। एक उत्कृष्ट लेखिका, जिनमें कलात्मक क्षमता है और यह शानदार तस्वीरों और पत्रिका में उनको दिए गए स्थान से साफ़ ज़ाहिर होता है। दिसंबर अंक की कवर फोटो एक उदाहरण है।

छोटे क्लबों तक पहुंचकर उनके मनोबल को बढ़ाना निश्चित रूप से एक प्रशंसनीय निर्णय है। रोई अध्यक्ष इयन राय्सली ने कहा था कि रोटरी पहले से बेहतर तरीके से स्थापित है जिससे कि यह हर क्षेत्र की सेवा द्वारा शान्ति पर एक वास्तविक और स्थिर प्रभाव डाल सकती है। जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक विकास, सभी संघर्ष को दूर कर सकते है।

पीआरआईपी कल्याण बैनर्जी ने एकदम सही कहा था, रोटरी में एक माता-पिता की स्नेहशीलता, कोमलता और दयालुता है और एक सरकार की ताकत है।

106 सरकारी प्राथमिक स्कूलों का नवीनीकरण कर हैप्पी स्कूलों में तब्दील करने हेतु सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए बैंगलोर का रोटरी क्लब प्रशंसा का हक़दार है।

डॉ सौम्या स्वामीनाथन का प्रत्येक शब्द (*टीबी के उन्मूलन की चुनौती को रोई को लेने दें*) पढ़ने योग्य और विचार उत्तेजक है। अगर रोटेरियन हाथ मिला ले तो पोलियो को जीतने के बाद टीबी का सामना करना कोई मुश्किल कार्य नहीं होगा।

राज कुमार कपूर

रोटरी क्लब रूपनगर - मंडल 3080

आपने *सेतुबंधन*, अगरतला में आयोजित हुआ एक बहु-मंडलीय सम्मेलन, का बेहतरीन तरीके से कवरेज किया। लेख के *साथ-साथ सेतु निर्माण* की तस्वीर और अपने नेत्र बैंक और डायलिसिस केंद्र द्वारा होसपेट के रोटेरियनों के समुदाय की सेवा करने के अथक प्रयास सराहनीय है। मुझे गर्व है कि रोटरी क्लब टिनेवेली ने इस वर्ष अपने 75 वर्ष पूर्ण कर लिए है। इसका सदस्य होने के नाते, क्लब के द्वारा की जा रही अच्छी परियोजनाएं मुझे ज्ञात है। उन्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। चेन्नई से सुदूर स्थित छोटे और ऊर्जावान क्लबों पर फोकस करने के लिए आपके द्वारा उठाया गया कदम, जैसा कि आपके सम्पादकीय से प्रदर्शित है, एकदम सही मौके पर एवं उचित दिशा में लिया गया है।

एस रंगराजन

रोटरी क्लब तिरुनेलवेली सबअर्बस - मंडल 3212

हमेशा की तरह, मैंने दिसंबर अंक की भी उत्सुकता से प्रतीक्षा की और पाया कि आपने अनेक विषयों को कवर किया है। हाँ, नार्थ ईस्ट बेशक एक शानदार जगह है क्योंकि हम दो वर्षों तक शिलॉन्ग में रहे। ऐसे अच्छे कार्य को ज़ारी रखे।

ग्रुप कैप्टेन देओधर

रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

सेतुबंधन पर कवर स्टोरी पढ़ना और पत्रिका के कवर पर रविन्द्रनाथ टैगोर ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह की एक बढ़िया तस्वीर को एक टैगलाइन *टेगोर के नक्शेकदम* में के साथ देखना संतोषप्रद था। यह उपयुक्त होता अगर आपने इस नोबेल विजेता, जो हमें हमारा राष्ट्रगान देने के कारण अमर है, के बारे में एक संक्षिप्त लेख लिखा होता।

ए एल पेरियानन षणमुगम

रोटरी कल्ब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

संपूर्ण भारत में पहुँचने की *रोटरी समाचार* की परिवर्तित नीति सकारात्मक एवं जबर्दस्त रूप से उन छोटे क्लबों को प्रोत्साहित करेगी जो अब तक बड़ी परियोजनाओं को अधिक महत्व मिलने के कारण उपेक्षित थे। रोटरी में अग्रसक्रिय परिवर्तनों के ऊपर लिखे गए लेखों में कुछ नयापन होता है। आपके विचार और प्रतिबद्धता रोटरी के वास्तविक राजदूत की अभिव्यक्तियाँ है।

रशीदा भगत का लेख रोटरी *टी बी उन्मूलन की चुनौती को स्वीकार करें* सराहनीय है क्योंकि रोटरी ने भारत और अन्य देशों में पोलियो उन्मूलन के लिए प्रशंसनीय कार्य किया है। अब समय टीबी पर ध्यान देने का है।

प्रोफेसर शिव सेठी, रोटरी क्लब फ़िरोज़पुर कैंटोनमेंट - मंडल 3090

रोई नेतृत्व की ओर से प्रबल संदेश

दिसंबर का अंक इस बात को स्पष्ट करता है कि ''महान लोग एक जैसा सोचते है'' क्योंकि रोई के तीन प्रतिष्ठित व्यक्ति - अध्यक्ष इयन राय्सली, निदेशक सी भास्कर और न्यासी अध्यक्ष पॉल नेटज़ेल - ने तीन परियोजनाओं पर अपने विचार केन्द्रित किये। अध्यक्ष ने कहा कि दुनिया को एक शांति प्रिय जगह होना चाहिए जहाँ पर युद्ध का कोई संकट ना हो। रोटरी अपने 'रोटरी पीस फेलोस' कार्यक्रम के माध्यम से स्थायी शांति प्रदान करने का एक उपयुक्त मंच है। निदेशक सी भास्कर ने कहा कि विश्व में दूसरे स्थान पर सबसे अधिक डायबिटिक लोग भारत में है और इसलिए उनके मंडलों में डायबिटीज जांच शिविर आयोजित किये जाने चाहिए। नेटज़ेल ने साझेदारी की शक्ति पर ज़ोर दिया।

जालना मिडटाउन का रोटरी क्लब, मंडल 3132, पानी को शुद्ध करने के लिए दो बड़ी परियोजनाएं (*शुद्ध जल*, नवम्बर अंक) लेकर आया। मैं भारत में सभी रोटेरियनों से इन परियोजनाओं को कार्यान्वित करने का अनुरोध करता हूँ ताकि बच्चों और ग्रामीणों को शुद्ध पेयजल प्राप्त हो सके।

जी वी सयागावी,

रोटरी क्लब दवानगेरे विद्यानगर - मंडल 3160

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

कीर्ति के पीछे दर्द और आंसू

अक्सर हम जब भी प्रतिष्ठित व्यक्तियों को देखते है, खासतौर से पेशेवर खिलाड़ियों को जो उनके विशिष्ट खेल में शिखर तक पहुँचते है और सहजता से खेल को खेलते है, तो हम उस प्रसिद्ध व्यक्ति की आभा के पीछे कहीं छुपे उस ज़खम और दर्द, साहस एवं संकल्प, लंबी और ख़ामोश पीड़ा को देखना भूल जाते है। इसलिए, पुणे में मंडल 3131 के मंडल सम्मेलन के दौरान भारतीय क्रिकेट के दो दिग्गजों - युवराज सिंह और ज़हीर खान के साथ विक्रम सथाये की खुलकर हुई बातचीत जितनी दिलचस्प थी, उतनी ही आँखें खोल देने वाली भी थी। बेशक जहाँ डैशिंग युवी का फैशन और नवीनतम ड्रेसिंग स्टाइल के प्रति झुकाव सुदृढ़ हुआ था, वहीं सौम्य ज़हीर खान के उद्यमिता कौशल भी मजबूत हुए थे जिसने अनेक रेस्टोरेंट एवं प्रो-स्पोर्ट फिटनेस केन्द्रों को खोलने में उनकी मदद की थी। लेकिन हमने उन दोनों के मध्य मौजूद दोस्ती के गहरे संबंध को भी जाना और यह भी कि कैसे ज़ेक, वह नाम जिससे टीम के साथी और दोस्त उन्हें बुलाते है, ने युवराज को उनकी अकड़ी गर्दन एवं सभी प्रकार की जटिल चोटों और अति कष्टदायक दर्दों से जीत पाने के लिए प्रेरित किया, या यूं कहे कि उन्हें आदेश दिया कि जाओ और 2011 का विश्व कप खेलों और भारत और स्वयं के लिए गौरव हासिल करो। युवराज याद करते है कि एक वर्ष पहले, बांग्लादेश में, उन्होंने उनकी कलाई तोड़ ली थी, और उसके भी पहले, लगातार 4-5 फ्रैक्चर झेले।

''मेरी गर्दन अकड़ गई थी, मुझे मेरे शरीर से हर प्रकार की समस्याएं थी और मैंने ज़ेक से मेरी शारीरिक चुनौतियों के बारे में बात की। मैंने सोचा की वह कहेगा जाओ और एक अच्छे डॉक्टर को दिखाओ लेकिन उसने कहा 'तू वर्ल्ड कप जितायेगा।' मैंने कहा भाई, वर्ल्ड कप एक साल में है। और उसने कहा बस बोल दिया।''

एक मित्र से ऐसी विचित्र सलाह पर मुँह सिकोड़ने के दौरान भी, उन्होंने खेलने का निश्चय किया। वर्ल्ड कप शुरू हुआ; उन्होंने दर्द और दबाव के कारण बिना नींद के कई रातें गुज़ारी और उन्होंने ज़ेक से कहा कि वह पीछे नहीं हटने वाले। इस बात पर उन्होंने फिर कहा ''तू मैच खेल।'' युवी ने खेला और वर्ल्ड कप की पहली 50 मारी, उसके बाद तीन और 50 फिर एक 100 और क्वार्टर फाइनल में एक और 50। लेकिन कैंसर से लड़ाई और भारतीय क्रिकेट में सफल वापसी का उभरता हुआ हर्ष कई अधिक अहम था। ''सवाल यह था कि मैं जीवित रह पाऊंगा या नहीं। जीवन समाप्त हो जाने का प्रश्न बहुत भारी होता है। और इस जंग को लड़ने के बाद, चोटें अब क्रोसिन लेकर बुखार को ठीक करने जैसी लगती है,'' तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा।

लगातार होने वाली कंधे की चोटों के बारे में ज़हीर ने कहा कि खेल मनोवैज्ञानिकों से विस्तृत बातचीत और अपने निजी अनुभव से उन्होंने सीखा कि जितना कम समय एक व्यक्ति ने इन अवस्थाओं में से प्रत्येक में व्यतीत किया, उतना ही जल्दी वह ठीक हुआ। 2008-09 में उनकी कंधे की सर्जरी के बाद, उन्होंने सोचा कि उनका कैरियर खत्म हो जाएगा क्योंकि उनका 80 प्रतिशत गेंदबाज़ी एक्शन कंधे पर निर्भर होता है। इस बात ने उन्हें बहुत अधिक निराश कर दिया, लेकिन पुनर्वास के दौरान, वह अपना हाथ उपचार एवं सकारात्मक सिहरन को हस्तांतरित करने के लिए कंधे पर रखते थे, और इससे काम बन गया!

वे बेशक राष्ट्र के प्रतीक है, लेकिन मुझे विश्वास है कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति, अपने निजी जीवन में, ऐसे साधारण लोगों की कहानियाँ बता सकता है जिन्होंने दर्द, बीमारी या मौत से सामना होने पर अद्भुत साहस का प्रदर्शन किया हो। वे सब भी हीरो है। और यदि हम लिंग, और अत्यधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों की बात करें तो, मेरा मत भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शक्तिशाली कप्तान मिताली राज को जाता है। जब उनसे एक रिपोर्टर ने वही घिसा-पिटा सवाल पूछा कि उनका पसंदीदा पुरुष क्रिकेटर कौन है, तो उन्होंने चट् से जवाब दिया: ''क्या आप यही सवाल पुरुष क्रिकेटरों से करते है? क्या आप उनसे पूछते है कि उनकी पसंदीदा महिला क्रिकेटर कौन है?'' बहुत खूब!

रशीदा भगत

रोटरी की जड़ों का स्मरण

प्रिय साथी रोटेरियन,

इस महीने आज से एक सौ तेरह वर्ष पहले, रोटरी के पहले क्लब के चार सदस्यों ने अपनी पहली बैठक आयोजित की थी। हालांकि बैठक का कोई कार्यवृत्त नहीं रखा गया था, इसकी बहुत कम संभावना है कि किसी ने भी सेवा के बारे में चर्चा की हो; क्लब ने कुछ और वर्षों तक समुदाय की जरूरतों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू नहीं किया।

बैठक किसी होटल या रेस्तरां में आयोजित नहीं की गई थी, बल्कि किसी सदस्य के कार्यालय में आयोजित की गई थी; जहाँ तक हम जानते हैं, कोई एजेंडा या घोषणाएं नहीं, किसी समिति की रिपोर्ट, वक्ता या नेमटैग्स नहीं थी। उस बैठक को उत्पादक रोटरी मीटिंग के लिए वर्तमान समय के सामान्य मानकों पर असफल घोषित कर दिया जाता। हालाँकि, यह आयोजित की गई सबसे अधिक उत्पादक रोटरी मीटिंग थी।

आज हम में से कई लोग जिन कारणों रोटरी से जुड़ने चाहते हैं, ठीक वैसे ही पॉल हैरिस ने सन 1905 में: मित्रता, संपर्क, और घर पर महसूस करने के लिए एक पहल को आगे बढ़ाया था। लेकिन, रोटरी उन शुरुआती दिनों में अपने सदस्यों को जितना दे सकता था, उसकी तुलना में यह कही अधिक हमें आज देता है। आज की रोटरी, 1.2 मिलियन से अधिक मजबूत सदस्यों के साथ, हमें न केवल हमारे साथियों के एक छोटे समूह में, बल्कि हमारे समुदायों के हमारे विविध क्लबों में और वास्तव में संपूर्ण विश्व में घर पर होने का एहसास कराता है। आज, रोटरी हम सभी को इस प्रकार से जोड़ता है कि पॉल हैरिस ने उस फरवरी शाम को कभी ऐसा होने के बारे में स्वपन में भी नहीं सोचा होगा। न केवल हम दुनिया में कहीं भी जा सकते हैं जहाँ एक रोटरी क्लब है और घर पर होने के समान महसूस करते हैं, बल्कि हम दुनिया में कहीं भी पहुँच सकते हैं, जहाँ एक रोटरी क्लब है और लोगों के जीवन में एक सकारात्मक अंतर ला सकते हैं।

उस पहली मीटिंग के 113 वर्षों के बाद, अपने संस्थापक सदस्यों की कल्पना की अपेक्षा रोटरी अब अधिक विशाल, और अधिक विविध, हो चुका है। पहले केवल श्वेत लोगों और पुरूषों का प्राबल्य वाले संगठन से आज हम एक ऐसे संगठन में रूपांतरित हो चुके हैं, जिसमें हर संभव पृष्ठभूमि के महिलाओं और पुरुषों का स्वागत किया जाता हैं। हम एक ऐसे संगठन बन गए हैं जिसका कथित उद्देश्य सेवा है, जो हमारे आदर्श वाक्य, स्वयं से ऊपर सेवा से प्रतिलक्षित होती है। और हम न केवल एक संगठन बन गए हैं जो संसार को बदलने में सक्षम है, लेकिन एक ऐसा संगठन जो पोलियो को खत्म करने के लिए अपने अभियान के माध्यम से पहले ही ऐसा कर चुका है।

रोटरी के भविष्य में क्या होने वाला हैं, इसके बारे में से कोई भी नहीं जान सकता हैं। पॉल हैरिस और उसके मित्रों द्वारा हमारे लिए रखी गई ठोस नींव पर आगे बढ़ना: सेवा और दोस्ती के बंधन का निर्माण करने और उसे सशक्त करते हुए: *रोटरी परिवर्तन ला रही हैं* में हम सभी के लिए शेष हैं।

इयन एच एस राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेश

शांति का प्रचार एवं संघर्ष की रोकथाम करें

प्रिय रोटेरियन,

रोटरी के लिए फरवरी एक महत्वपूर्ण माह है क्योंकि इसी माह में रोटरी स्थापित हुई थी। हम इस माह का शांति एवं संघर्ष रोकथाम/समाधान माह के रूप में उत्सव मनाते आ रहे है। दोस्तों, पहले स्वयं से पूछिए कि शांति क्या है? शांति तब होती है जब सभी की उनके हितों के लिए बुनियादी जरूरतों - भोजन, स्वच्छता, जल, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और एक स्थायी जीवन पर्यावरण - तक उचित और समान पहुँच होती है। शांति तब होती है जब सभी के पास कार्य के समान अवसर हो और वे वंश, रंग, जाती, पंथ, लिंग, नस्ल या पहचान के अन्य किसी पहलू पर ध्यान दिए बिना कमाई कर सकें।

संघर्ष आम तौर पर नकारात्मक मुठभेड़ के साथ संबंधित होता है। हमें इस बात का एहसास होना चाहिए कि संघर्ष इस जागरूकता को पोषित करता है कि समस्या मौजूद है। 1982 में, पहली बार, विश्व समझ एवं शांति समिति ने दुनिया में बेहतर समझ और शांति को बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा की थी। शांति कार्यक्रमों के गठन से पूर्व, रोटरी ने दक्षिण अमेरीका के देशों के मध्य सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए अपनी सेवा दी थी। उदाहरण के लिए, प्रशांत युद्ध के बाद पेरू और चिली के मध्य लगभग 50 वर्षों से शत्रुता थी। किसी स्तर पर कोई बातचीत नहीं हो। चिली के रोटेरियनों ने पेरू में अपने साथियों को क्रिसमस पर ग्रीटिंग भेजकर इसकी पहल की। बदले में, पेरू के रोटेरियनों ने उन्हें नव वर्ष के ग्रीटिंग भेजे और इस साधारण से कदम ने एक दरवाजा खोल दिया और एक रास्ता बन गया जिसके माध्यम से दोनों देशों के मध्य मैत्रीपूर्ण संबंधों की फिर से शुरुआत हुई।

ग्रान चाको में युद्ध के दौरान, बोलीविया के ला पाज़ और पेराग्वे के एसनसियन के रोटरी क्लबों ने अपने-अपने संबंधित देशों में युद्ध-बंदियों की देखभाल की, साथ ही अर्जेंटीना के कुछ रोटेरियनों ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई। रेड क्रॉस द्वारा इस कार्य की सराहना की गई, और शांति आयोग में सेवा देने वाले कई रोटेरियनों के प्रयासों के बाद इन देशों के मध्य घनिष्ठ संबंधों को स्थापित करने में मदद मिली। कई प्रतिष्ठित दक्षिण अमेरिकी रोटेरियनों ने कहा कि युद्ध के समय के दौरान, रोटरी लापेल पिन विरोधी देशों के मध्य यात्रा करने में अक्सर एक सुरक्षित ''पासपोर्ट'' की तरह कार्य करता था।

रोटरी विभिन्न तरीकों से अद्भुत चीज़ें करती है चाहे वह हमारी सेवा परियोजनाएं हो, शांति फ़ेलोशिप हो या छात्रवृत्ति हो, हमारे सदस्य संघर्षों के पीछे मौजूद कारणों का समाधान कर रहे है जिनमें गरीबी, असमानता, जातीय तनाव, शिक्षा तक पहुँच का अभाव, और स्रोतों का असमान वितरण शामिल है।

रोटेरियनों को छटवीं शताब्दी के चीनी दार्शनिक - लाओ जू के शब्दों का अनुसरण करना चाहिए ''शांति दिल में होनी चाहिए।'' केवल निस्वार्थ कार्य ही दिल में शांति ला सकता है और हम जरुरतमंदों के लए सहायता का एक हाथ बढ़ाकर और आसपास के समुदाय के कल्याण के लिए कार्य करके इसे हासिल कर सकते है।

If there is to be peace in the world,
There must be peace in the nations.

If there is to be peace in the nations,
There must be peace in the cities.

If there is to be peace in the cities,
There must be peace between neighbours.

If there is to be peace between neighbours,
There must be peace in the home.

If there is to be peace in the home,
There must be peace in the heart.

चलिए शांति प्राप्त करने के लिए कार्य करें और दुनिया को दिखा दें कि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है।*

C. Bask

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

शांति के लिए काम करें

फरवरी की 23 को रोटरी के स्थापना की 113 वीं वर्षगांठ को - रोटेरियन विश्व शांति और समझ दिवस के रूप में मनाएंगे। सबसे शुरुआती दिनों से शांति हमारे संगठन की आधारशिला रही है। हमने सं 1921 में एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड में रोटरी के चौथे ऑब्जेक्ट की स्थापना की। हम लंदन में थे जब द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत यूनेस्को का बीजरोपण किया गया था। सन 1940 में हवाना में, हमने ''स्वतंत्रता, न्याय, सत्य, वचनबद्ध शब्दों की पवित्रता, और मानवाधिकारों के प्रति सम्मान'' के लिए एक संकल्प को अंगीकृत किया, जो सन 1948 में संयुक्त राष्ट के मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा के लिए एक रूपरेखा बना।

हमने संयुक्त राष्ट के गठन में सक्रिय रूप से भाग लिया। सन 1945 में सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन में लगभग 50 रोटेरियनों ने प्रतिनिधि, परामर्शदाता और सलाहकार के रूप में अपनी सेवाएँ दी, जब यूएन चार्टर लिखा गया था। आज, लगभग 73 वर्षों के उपरांत, रोटरी संयुक्त राष्ट्र के साथ एक गैर-सरकारी संगठन के रूप में उच्चतम परामर्शदात्री संस्था का दर्जा रखता है। संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों में हमारे अनेक रोटरी शांति फैलो कार्यरत्त हैं। शांति स्थापित के लिए हमारी भागीदारी का उत्सव मनाने के लिए संयुक्त राष्ट में रोटरी के प्रतिनिधी प्रत्येक नवंबर में एक रोटरी दिवस भी आयोजित करते है।

आज हमारे साथ इंस्टिट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस के रूप में एक नया साझेदार है, जिसे तकनीकी उद्यमी स्टीव किलेलेआ ने ऑस्ट्रेलिया में स्थापित किया था। संस्थान आठ ''स्तंभों'': एक बेहतर तरीके से कार्य करने वाली सरकार, मजबूत व्यवसायिक माहौल, संसाधनों का न्यायसंगत वितरण, दूसरों के अधिकारों की स्वीकृति, पडोसियों के साथ बेहतर संबंध, सूचना का मुफ्त प्रवाह, उच्च मानव पूँजी का स्तर, और भ्रष्टाचार के निम्नतम स्तर के आधार पर सकारात्मक शांति स्थापित करने पर बल देती हैं।

अभी और जून के बीच, हमारे पास रोटरी के अध्यक्ष इयन एच एस राय्सली के दुनिया भर के छह शहरों में आयोजित होने वाले अध्यक्षीय शांति-निर्माण सम्मेलन में भाग लेने का अवसर है। इसके बारे में अधिक जानकारी के लिए *rotary.org/presidential-conferences* पर ऑनलाइन विजिट करें। हम इस बात का अन्वेषण करना जारी रखेंगे कि शांति के आठ स्तंभ हमारे फोकस क्षेत्रों के साथ कैसे समन्वित हो सकता है।

हम पाथवेज़ टू पीस,- शांति और संघर्ष की रोकथाम और संकल्प के क्षेत्र में प्रमुख विद्वानों, चिकित्सकों, रोटरी के शांति सदस्यों और विचारकों की एक वार्ताओं की श्रृंखला की मेजबानी करने के लिए शिकागो विश्वविद्यालय के साथ गठबंधन किया हैं। सितंबर में आयोजित किए गए पहली वार्ता को *bit.ly/2j9cSUh* पर देखें।

अपने सहयोगियों के साथ मिलकर, समझ, सद्भावना, और अंतर्राष्ट्रीय शांति को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हम स्वयं को वैश्विक विचारकों और नेताओं के रूप में स्थापित करने के लिए कार्य करेंगे।

आइए हम इस यात्रा पर एक साथ मिलकर कार्य करें।

पॉल ए नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

मैं आपकी शांति निर्माण परियोजनाओं के बारे में सूनना चाहता हूँ। Paul.netzel@rotary.org पर मेरे साथ साझा करें।

Häcker
kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

भारतीय क्रिकेट के फैशन गुरु और आईडिया वाले बाबा

रशीदा भगत

पुणे में रोटरी मंडल 3131 के मंडल सम्मेलन में सबसे ज्यादा मनोरंजक और रोमाँचक सत्र यकीनन *अध्याय 18* रहा जिसमें विक्रम साठे ने दो मशहूर क्रिकेटर युवराज सिंह और जहीर खान का साक्षात्कार लिया। बेहद मुखर और अच्छे दोस्त होने के अलावा, उन में एक समानता भी है ,दोनों ने डट कर शारीरिक चुनौतियों का सामना किया है - खान से ज़्यादा युवराज सिंह जिसने कैंसर जैसी भयंकर बीमारी से कठिन संघर्ष किया - पर हतोत्साहित नहीं हुआ ना ही हार मानी।

साठे ने इस वार्ता को बड़ी ही कुशलता से संचालित किया, जिस में क्रिकेटरों के कई पहलुओं का खुलासा हुआ तथा उनके साथी क्रिकेटर्स की चटपटी बातों ने इसे और दिलचस्प बना दिया।

एक तरफ हमने पाया कि खान या ज़ेक जैसाकि उनके दोस्त और साथी बुलाते है, फैशन की ज़बरदस्त

परख रखते है ''और ड्रेसिंग के बारे में वो मुझसे ज़रूर सलाह करता है। और अब तो वो स्टार स्पोर्ट्स चैनल पर कमेन्टेटर भी है और उसे सलीके से कपड़े पहनने पड़ते हैं। पहले, वह आकर मुझसे पूछता था: 'ये जैकेट कैसी है?' और मैं कहता कि 'ज़ेक, प्लीज, नहीं यार,' युवराज ने कहा। उसकी शर्ट और बेल्ट के बारे में भी यही था, जब कभी हम बाहर जाते वो मेरी ही शर्ट या बेल्ट पहने होता था!''

जहीर ने झट से कबूल किया, ''मैंने शायद ही कोई बेल्ट खरीदी हो; तक़रीबन सभी बेल्टस यूवी की हैं क्योंकि उनकी अलमारी में सर्वश्रेष्ठ बेल्टस रहती हैं !''

अद्भुत फील्डर युवी

इसके बाद, युवराजसे पूछा गया, जिस दौर में सिर्फ बैट्समैन और बॉलर ही प्रसिद्धि पाते थे और मिसाल भी उन्हीं की दी जाती थी तो उस समय आपने इतनी शानदार फील्डिंग कैसे की ? जब साठे ने पूछा कि मिथुन चक्रवर्ती की तरह डाइव लगाना कैसे सीखा, तो यूवी ने खुलासा किया कि जब वे 15 या 16 वर्ष के थे तब जोन्टी रोड्स का खेल बहुत ध्यान से देखते थे, उन्होंने कहा, जोन्टी बड़ी सहजता से डाइव लगाते थे और फील्ड पर ''मैं उन्ही की तरह उड़ना चाहता था।'' परन्तु कुछ मिसफील्डस की वजह से वो प्रथम श्रेणी क्रिकेट की शुरुआत 16 साल की उम्र में नहीं कर पाये। ''मैंने आज तक उस क्लिपिंग को संभाल कर रखा है, जब मुझे गेटवे ऑफ इंडिया कहा गया! मेरे पिताजी ने इसे पढ़ा और बहुत गंभीरता से लिया, जैसा वो मेरे सम्बन्ध में हमेशा करते हैं, और यह निर्णय किया कि मैं हर अभ्यास सत्र में कम से कम 50 से 100 कैच पकडूं। मैंने भी मैदान पर जम कर मेहनत की। मैं कुदरती फील्डर नहीं हूं, लेकिन फटाफट सीखता चला गया।''

लेकिन ज़ेक को एक सेफ कैचर माना जाता है, और यहां यूवी ने न्यूजीलैंड के मैच का एक वाक़या

मैंने आज तक उस क्लिपिंग को संभाल कर रखा है, जब मुझे गेटवे ऑफ इंडिया कहा गया! मेरे पिताजी ने इसे पढ़ा और बहुत गंभीरता से लिया, और यह निर्णय किया कि मैं हर अभ्यास सत्र में कम से कम 50 से100 कैच पकडूं।

युवराज सिंह

बताया जहां हवाएं बहुत तेज़ चलती हैं। ''तो ज़ेक गेंदबाजी कर रहा था और जैसे ही गेंद आसमान की ओर गई उन्होंने कहा, 'मेरा,' लेकिन जब गेंद मेरे नज़दीक आई तो बोले, 'तुम्हारा!' मैंने गोता लगाया, पर गेंद मेरे हाथ को छू कर जमीन पर गिर गई।

हंसी से लोट पोट होते हुए ज़ेक ने कहा, ''हाँ, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है; वेलिंगटन में हवा चलती ही इतनी तेज़ है कि गेंद हवा में स्विंग हो जाती है ... यह समझाना ज़रा मुश्किल है!''

दिमागी खेल

इस सत्र का अधिकांश हिस्सा दिमागी खेल को समर्पित था ;एक गेंदबाज कैसे सटीक गेंद फेंक कर बल्लेबाज को अपने इशारों पर नचा सकता है। सचिन तेंदुलकर का हवाला देते हुए, जिन्होंने ज़हीर खान के बारे में कहा की ''वह सबसे चतुर गेंदबाज है क्योंकि उसकी गेंद बोलती है, और हमेशा बल्लेबाज को आउट करने की साजिश कर रहा होता है,'' साठे ने पूछा: ''आप यह सब कैसे करते हैं।''

खान ने कहा यही जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि बल्लेबाज को कैसे मुश्किल में कैसे डाला जाए ''कभी-कभी,अपनी पूरी ताकत से बॉल करने के बावजूद आपको अपेक्षित परिणाम नहीं मिलते। तब आपको बल्लेबाज़ की कमजोरी से खेलना होता है, जो जानता तो हर कोई है लेकिन उसका फायदा उठाने के लिए तैयारी आपको करनी पड़ती है।''

उनकी तैयारी वीडियो के विश्लेषण साथ शुरू होती थी और वो हमेशा इस बात पर ध्यान देते थे कि बल्लेबाज अपने पैरों का प्रयोग किस प्रकार करता है। ''अगर उसके पैर ठीक तरह से चल रहे हैं, तो इसका मतलब है कि वह फालतू चीजों के बारे में नहीं सोच रहा और अगर पार्टनरशिप चल रही है, तो यहां स्मार्ट बनने की जरूरत है और उस समय रक्षात्मक नीति अपनानी चाहिए। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप विकेट लेने की सोचेंगे

कितनी बार आपने एक बल्लेबाज को एक अच्छी गेंद पर भी आउट होते देखा है? ज्यादातर बल्लेबाज अपनी गलतियों की वजह से ही आउट हो जाते हैं।

ज़हीर खान

ज़हीर खान

आईडिया वाले बाबा

2011 का विश्व कप जिसमें उन्होंने शानदार खेल दिखाया था के बारे में कुरेदने पर, और पहले की याद ताज़ा करते युवराज सिंह ने बताया कि एक साल पहले, बांग्लादेश में उनकी कलाई टूट गई थी। ''इससे पहले मुझे एक साल में 4–5 फ्रैक्चर हुए और मेरी गर्दन और मेरे शरीर में हर तरह की तकलीफें थीं। मैंने ज़ेक को वो तकलीफें बताईं और पूछा कि क्या करना चाहिए। मैंने सोचा था वो कहेंगे कि एक बढ़िया डॉक्टर को दिखाओ या कोई मरहम लगाओ। लेकिन उन्होंने कहा, 'तू वर्ल्ड कप जिताएगा' मैंने कहा भाई, 'वर्ल्ड कप को एक साल भी नहीं बचा,' उन्होंने कहा, 'बस बोल दिया ना।' मुझे बहुत अजीब लगा, कम से कम आपका दोस्त तो ऐसी सलाह नहीं देगा। ''और फिर विश्व कप शुरू हुआ; उनका स्वास्थ्य बहुत खराब था, दर्द और दबाव की वज़ह से रात रात भर नींद नहीं आती थी। मैंने कहा ज़ेक मैं नहीं खेल सकता क्योंकि मैं बॉलर का सामना नहीं कर पाउँगा, गैरी कर्स्टन से कह देता हूँ मैं नहीं खेल सकूंगा। लेकिन उन्होंने कहा, 'नहीं तुम ये मैच खेलोगे।' मैंने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि मेरी गर्दन की नस चढ़ गई है और सिर पर गेंद लगने का खतरा है। पर वो टस से मस नहीं हुए बोले, 'नहीं तू मैच खेल।' मैं और चिढ़ गया ... लेकिन वो ऐसे ही जवाब देते हैं!''

युवराज ने कहा, उनकी हालत इतनी खराब हो गयी थीं कि जब राष्ट्रगान चल रहा था, तब मेरे पास इसके अलावा कोई चारा नहीं था, कि स्टेडियम की दूसरी तरफ फिजियोथेरेपिस्ट के पास जा कर ,इलाज करवाऊं और लौट कर खेलूं। ''मुझे याद है जब मैं बल्लेबाजी करने गया तो (ग्रीम) स्वान गेंदबाजी कर रहा था और मैं स्पिनरों को थोड़ा बहुत ठीक ठाक खेल लेता था। जैसे जैसे शरीर थोड़ा गरम हुआ, मेरी गर्दन काफी ठीक हो गई। विश्वकप के पहले 50 मुझे उसी मैच से मिले, फिर तीन अर्ध शतक, उसके बाद सेंचुरी और क्वार्टर फाइनल में फिर से एक और अर्ध शतक। ज़ेक, मशवरे के लिए शुक्रिया !''

इस के पश्चात, साठे ने परिहास किया, ''यदि किसी को ज़हीर खान से भविष्य जानना हो तो मैं उनका मैनेजर हूं। युवराज की प्रतिक्रिया: ओह,'' हाँ, वास्तव में भारतीय टीम उन्हें आइडियावाले बाबा बुलाती है। किसी को हाथ–वात दिखाना हो तो ज़ेक सही आदमी है! क्योंकि उन घटनाओं के बाद हमेशा ज़िंदगी भर उनसे सलाह लूंगा।''

ही नहीं, बल्कि वो तो हमेशा दिमाग में रहेगा, परन्तु आप अपने इरादे ज़ाहिर नहीं होने देंगे।''

और उसी के अनुसार बॉलिंग की व्यूह रचना बनाई जाती है। लेकिन कोई भी गेंदबाज यह दावा नहीं कर सकता कि वह गेंद को जहां डालना या पिच करना चाहता था बॉल वहीं जाती थी। ''इसी लिए अच्छे परिणाम पाने के लिए मैंने कई तरह से अलग - अलग प्रयोग किए।''

दिमाग से खेलने के बारे में पूछने पर, विशेषकर मैथ्यू हेडन के बारे में, खान ने कहा, ''लोग हमेशा छींटाकशी की बात करते हैं, लेकिन यह केवल गाली गलौज तक ही सीमित नहीं रहती; यह बल्लेबाज पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी डालती है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बहुत ज़्यादा दबाव और ज़िम्मेदारी रहती है जो आपको सही फैसले लेने में प्रभावित करती है । इसलिए आपको बल्लेबाजों पर उस तरह तरह का दबाव डालना पड़ता है जहां वो गलती करे। कितनी बार आपने एक बल्लेबाज को एक अच्छी गेंद पर भी आउट होते देखा है? ज्यादातर बल्लेबाज अपनी गलतियों की वजह से ही आउट हो जाते हैं।''

बल्लेबाजों को गलतियां करने पर मजबूर करना ही इसकी चाबी है; गेंद सही जगह डाल कर बल्लेबाज की कमज़ोरी पर वार करना लेकिन साथ ही उसे कुछ ना कुछ बोलना भी । उदाहरण के लिए, ''मैं जानता था कि ग्राहम स्मिथ मेरी गेंदबाजी के सामने हमेशा असहज हो जाते थे, क्योंकि मैं उन्हें कई बार आउट कर चुका हूँ, जब भी वो मेरा सामना करते, मैं हर बार उन्हें याद दिलाता कि मैंने उन्हें आउट किया था । मैं कहता हूं, मुझे आपकी कमजोरी मालूम है, मुझे पता है कि आप मेरा सामना करना पसंद नहीं करते। आप ये सब इसलिए कहते हैं ताकि वो नकारात्मक मानसिकता में आ जाए और छोटी छोटी गलतियां करे।''

मैथ्यू हेडन के बारे में, खान ने कहा कि 2008 में ऑस्ट्रेलिया श्रृंखला का पहला मैच बेंगलुरु में था और दूसरा मोहाली में, चार पारियों में उन्होंने हेडन को तीन बार आउट किया था। ''मेरे पास एक योजना थी। लेकिन जिस सामंजस्य के साथ बल्लेबाज हेडन खेलते हैं, मैं जानता था कि उनका मन जवाबी हमले की तैयारी कर रहा है।'' अगला मैच दिल्ली में था, जो बल्लेबाजों के लिये स्वर्ग है, इसका विकेट फ्लैट है जिससे गेंदबाजों को बहुत कम मदद मिलती है। ''जब मोहाली में खेल समाप्त हो गया, तभी उन्होंने इशारा कर दिया था कि वह मेरे खिलाफ हमला बोलेंगे और मैंने बहुत सोचा कि उन जैसे महान बल्लेबाज़ का सामना कैसे किया जाए जहां सारे हालात मेरे खिलाफ होंगे।''

दिल्ली मैच के ठीक पहले एक कार्यक्रम के दौरान जब उनसे पसंदीदा बैट्समैन का नाम पूछा गया तो खान ने इस मौके को हाथ से नहीं जाने दिया। ''मैंने कहा हेडन, क्योंकि उन्हें बॉल करना सबसे आसान है। अगले दिन उन्होंने बल्लेबाजी की शुरुआत की। उन्होंने ठान लिया था चाहे किसी भी भारतीय बॉलर से हो जाऊं पर मैं ज़हीर खान से आउट नहीं होऊंगा। इसीलिए वो आक्रामक स्ट्रोक नहीं खेल पाए और लगातार गेंद छोड़ते रहे। वह ये साबित करना चाहते थे कि तुम कुछ नहीं हो और मैं तुम्हे आसानी से खेल सकता हूँ। लेकिन इसमें उनका स्वाभाविक और आक्रामक खेल गायब हो गया था!''

बाद में युवराज से पूछा गया कि क्या वो ज़ेक को खेल पाते हैं

आरआईपीआर पूर्व रो ई निदेशक सवालोक रत्तनविच के साथ डीजी अभय गड़गिल।

तो उन्होंने चट से जवाब दिया, ''जंगल मे मोर नाचा, किसने देखा! जहीर खान ने मुझे घरेलू क्रिकेट में कई बार आउट किया है लेकिन इस बारे में कोई नहीं जानता।''

अपने बॉलिंग एक्शन के बारे में और युवराज को जब भी विकेट लेने के लिए बुलाया गया वो हमेशा सफल रहे, इस बारे में पूछा तो यूवराज ने कहा, ''मेरे पास एक अनूठी तरकीब है और यह वैसी पारम्परिक नहीं है जैसी दिखती है क्योंकि मैंने इसी तरकीब से केविन पीटरसन को दो-चार बार आउट किया है। वो मेरी गेंदबाजी नापसंद करते थे उन्होंने कहा कि मैं उन्हें

लापरवाही से बॉल कर रहा हूं; उन्होंने मुझे पाई-चकर कह कर भी बुलाया और वास्तव में मुझे भी उस नाम में खूब मज़ा आया!''

लेकिन, उन्होंने अपनी गेंदबाजी के बारे में एक बात और जोड़ी कि ''मैं हमेशा अपने आप को अंशकालिक बॉलर समझता था। जिस दिन मैं एक बॉलर की तरह सोचने लगूंगा, बाहर हो जाऊंगा। इसलिए मैं सिर्फ अपनी गेंदबाजी का मज़ा लेता और उस दौरान जो मौके मिलते, उनका फायदा उठा लेता था।''

छः छक्के

आखिरी एक ओवर में, युवराज के विख्यात छः छक्कों पर, क्रिकेट दिग्गज ने कहा कि कुछ ही लोगों को पता है कि टी -20 विश्वकप से पहले, उन्होंने एक ओवर में पांच छक्के बना चुके थे। 2007 में उस मैच में बनाये गए उनके छः छक्कों पर, युवराज ने कहा कि ''उन दिनों इंग्लैंड के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा चल रही थी, हम उनके साथ कई सीरीज खेल रहे थे। एमएस (धोनी) मुझसे पहले बैटिंग कर के जा चुके थे अब मेरे पास सिर्फ आख़िरी तीन ओवर बचे थे। (एंड्रयू) फ्लिंटॉफ ने दो बहुत अच्छी गेंद की ... एक यार्कर और दूसरी ''बैक ऑन लेंथ और दोनों को मैंने बॉउंड्री के बाहर भेज दिया। उसे बहुत गुस्सा आया कि मैंने दो बेहतरीन गेंदों पर चौके जड़ दिए।''

आखिरी ओवर से ठीक पहले, उन्होंने एक रन लिया और दूसरे छोर पर आ गये, यहीं उनके और फ्लिंटॉफ के बीच झड़प हो गई। ''उन्होंने ऐसे शब्द कहे जो यहां दोहराए नहीं जा सकते, मैंने अपना बल्ला उठाया और इशारा किया, मैं बल्ले से मारूंगा । वास्तव में वहां माहौल गर्म हो गया था और अंपायर ने बीच बचाव किया और उन्होंने खेल जारी रखने को कहा। मैं बहुत उत्तेजित था, पर कभी-कभी यह उत्तेजना आपका फायदा भी पहुंचाती है! उस दिन यही हुआ और मैंने अपने बल्ले के बीच से स्टुअर्ट ब्रॉड की हर गेंद पर छक्का लगाया।''

युवराज सिंह

जंगल मे मोर नाचा, किसने देखा! जहीर खान ने मुझे घरेलू क्रिकेट में कई बार आउट किया है लेकिन इस बारे में कोई नहीं जानता।

युवराज सिंह

अंग्रेजी संकट

युवराज सिंह ने याद किया, हालांकि कैरियर के शुरुआत में वे रन तो बढ़िया बनाते थे, ''पर हमें अंग्रेजी बोलने में डर लगता था। 2001 के हमारे दक्षिण अफ्रीकी दौरे में, हम बहुत छोटे थे और ख़राब अंग्रेजी बोलते थे। हमें दस्तानों में कुछ पैडिंग की ज़रुरत थी और फिज़ियो ने वीरू (वीरेन्द्र सहवाग) से पूछा कि आप किस दस्ताने में ज़्यादा पैडिंग चाहते हैं? उन्होंने दो मिनट सोचा और कहा कि ''हम दोनों के लिये प्लीज़!'' एक और मौके पर न्यूज़ीलैंड में ''वीरू और मैं बर्गर खा रहे थे, एक आदमी आया और पूछा: 'वीरेंद्र सहवाग?' और वीरू ने कहा, 'यप।' इसके बाद उन्होंने कहा कि आपको न्यूज़ीलैंड कैसा लगा और वीरू ने फिर से कहा 'यप!' लेकिन बाद में हमने ऐसी समस्याओं से निजात पा ली थी।''

दिमागी ताक़त

ज़हीर खान को परेशान कर चुकी कंधे की गंभीर चोटों के बारे में पूछे जाने पर जिसकी वजह से आखिरकार क्रिकेट में उनका कैरियर समाप्त हो गया था, साथ ही ऐसी प्रमुख शारीरिक समस्याओं से उपजे मानसिक तनाव पर काबू पाने के लिए उन्होंने क्या किया, खान ने कहा कि जब भी खिलाड़ियों को चोट लगती है, तो वे उस से निपटने में गलतीयाँ करते हैं। ''एक खिलाड़ी के लिए, सबसे ज़रूरी है खेलना और मैदान पर डटे रहना। अक्सर आपको लगता है कि अगर मैं इसे अलग ढंग से खेलता तो शायद चोट नहीं लगती। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है इस सच्चाई को स्वीकार कर लेना कि चोट लग चुकी है।''

उन्होंने कहा कि गत वर्षों में खेल मनोवैज्ञानिकों के साथ विस्तृत बातचीत और व्यक्तिगत अनुभव के ज़रिये उन्होंने सीखा कि बीमारी की विभिन्न अवस्थाओं में जितना कम समय लगेगा, ठीक भी उतनी ही जल्दी होंगे। ''2008-09 में लगी मेरी पहली गहरी चोट के लिए मैंने कंधे का ऑपरेशन करवाया था, तब मुझे लगा कि मेरा कैरियर यहीं ख़त्म हो जाएगा। चूंकि मेरी गेंदबाजी ही ऐसी है कि उसमें 80 प्रतिशत काम कंधों से होता है। इस चोट ने मुझे बहुत ही निराशाजनक मनस्थिति में पहुँचा दिया था।''

सर्जरी के बाद सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्वास्थ्य लाभ की है। ''उस दौरान अपने कंधे पर दूसरे हाथ से सकारात्मक भाव प्रवाहित कर इलाज किया, मैंने महसूस किया कि इससे काफी फर्क पड़ा था और मैं सामान्य से भी कम समय में ठीक हो गया। इसे समझाया नहीं जा सकता है, लेकिन इसका असर निश्चित पड़ा था।''

किस प्रकार की मानसिक शक्ति से यह लड़ाई लड़ी और कैंसर के सन्ताप पर विजय पायी, युवराज ने कहा, ''विश्वास कीजिये, यह इतना

बाएं से : पीडीजी सुबोध जोशी, युवराज सिंह, पीडीजी विनय कुलकर्णी, ज़हीर खान और डीजी अभय गाड़गिल।

आसान नहीं था कि चलो ये हो गया अब इसे ठीक करते हैं । ज़ख्मों से कहीं ज्यादा तकलीफदेह था; मैं ज़िंदा भी रहूंगा या नही। ज़िंदगी ख़त्म होने का यह सवाल बहुत ही संजीदा है। पर इस लड़ाई से गुजरने के बाद, कैंसर ऐसा लगता हैं जैसे बुखार हुआ था और ठीक होने के लिए क्रोसिन ली थी।''

उन्होंने कहा कि इस बीमारी का सबसे मुश्किल हिस्सा है यह स्वीकार करना कि आपको कैंसर है; ''शुरू के 6 से12 महीने मैं लगातार कहता रहा कि डॉक्टर झूठ बोल रहे हैं,वो कुछ नहीं जानते। एक आदमी जो खिलाड़ी है, कड़ी मेहनत से प्रशिक्षित हुआ है, खान पान संतुलित है और जीवन शैली भी बढ़िया है ..... मेरे साथ यह कैसे हो सकता है? और यह सब उस वक़्त हुआ जब मैं कैरियर के शिखर पर था; कैंसर की वजह से अपने शिखर के पांच साल गवाँ दिए। तभी से, मैं मैदान पर लौटने का प्रयास कर रहा हूं। एक संदेश है: कभी उम्मीद ना छोड़ें। मैं अपना वन डे का सर्वोच्च स्कोर बनाने के लिए वापस आया।''

रोटेरियनों से एक अपील:

जीवन में आए इस विशाल परिवर्तन के बाद उन्होंने कैंसर रोगियों के लिए एक धर्मार्थ संस्था की स्थापना की। ''जागरूकता फैलाना एक बात है,लेकिन जाँच के बाद जब आप किसी को बताते हैं की उसे कैंसर है, तो वह मुड़ता है और पूछता है, अब मैं इलाज के लिए पैसे कहाँ से लाऊँ?''

इसलिए उन्होंने गैर सरकारी संगठन (NGO) की स्थापना की: लेकिन भारत में दान के लिए धनराशि एकत्रित करना आसान नहीं क्योंकि अधिकांश कंपनियों ने खुद की संस्थाएँ बना रखी हैं ''तो कुछ समय बाद मुझे लगा कि अपना NGO चलाने के लिए कोई ना कोई व्यवसाय तो करना ही होगा। फैशन चूंकि मेरे स्वभाव में है, इसलिए मैंने एक फैशन लेबल की स्थापना की है। मैं रोटेरियन्स से अपील करता हूँ की वे कृपया ऑनलाइन *www.youwecan.com* पर जाएं, कुछ खरीदें और किसी की मदद करें। हमारे सामान बढ़िया हैं और इसमें आप किसी की ज़िन्दगी बचाने की खुशी महसूस करेंगे।''

श्रेष्ठ और भव्य

इसके हरे भरे मैदान और झिलमिलाते हुए जलाशयों के साथ, पुणे के भव्य अमानोरा क्लब हाउस के विशाल परिप्रदेश में अत्यंत श्रेष्ठता, स्वाद और भव्यता के साथ आयोजित हुए सम्मेलन में रिकॉर्ड 2,000 लोगों ने पंजीकरण करवाया। इसमें प्रख्यात वक्ताओं जैसे अनुपम खेर, चेतन भगत और स्वामी सुखबोधानंद आए थे।

वहाँ नृत्य एवं संगीत, एक लोक संगीत का प्रदर्शन हुआ और साल भर की गई सेवा परियोजनाओं को प्रदर्शित किया गया। थाईलैंड के RIPR पूर्व रोई निदेशक साओवलक रत्तानाविच ने डीजी अभय गाडगिल की अत्यधिक प्रशंसा की और कहा कि उन्होंने दुनियाभर के अनेक मंडल सम्मेलनों में भाग लिया है, लेकिन पुणे में ध्यानपूर्वक आयोजित किये गए इस सम्मेलन ने उन्हें अचंभित कर दिया।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

District Wise TRF Contributions as on December 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	23,612	1,090	0	0	24,703	142	3.3
2982	29,879	70	2,725	0	32,674	141	5.2
3000	22,379	6,753	88,541	0	117,673	781	15.4
3011	59,725	284	39,598	0	99,607	156	5.1
3012	37,722	6,693	16,590	3,016	64,021	210	6.0
3020	19,744	5,036	19,950	42,478	87,209	65	1.5
3030	203	22,724	1,050	0	23,977	1	0.0
3040	448	0	26,185	0	26,634	16	0.7
3053	4,383	0	11,550	0	15,933	12	0.4
3054	(1,414)	102	162,650	0	161,338	6	0.1
3060	32,776	640	206	18,000	51,622	333	8.7
3070	21,766	148	24,219	789	46,923	95	3.2
3080	87,915	5,155	10,500	92	103,662	148	4.5
3090	508	0	0	0	508	2	0.1
3100*	5,975	0	0	0	5,975	32	2.0
3110	61,022	2,543	60,631	0	124,196	152	4.0
3120	70,693	508	0	0	71,201	83	2.8
3131	165,368	(4,400)	169,045	58,094	388,107	485	9.5
3132	26,233	906	2,625	0	29,764	105	2.4
3141	229,740	11,585	177,910	4,000	423,234	522	10.2
3142	165,263	2,686	350	(1,000)	167,299	358	13.3
3150	44,019	11,357	9,050	61,000	125,425	235	6.6
3160	45,110	1,000	0	0	46,110	94	4.0
3170	21,182	7,765	17,707	0	46,654	267	5.0
3181	35,635	481	0	78	36,194	194	6.4
3182	32,528	0	20,843	0	53,372	313	10.0
3190	73,130	300	36,095	16	109,540	61	1.2
3201	60,468	2,421	111,195	15	174,099	129	2.5
3202	19,141	1,778	0	0	20,919	55	1.1
3211	46,046	0	0	43,846	89,892	59	1.4
3212	184,069	32,365	0	1,000	217,433	236	6.4
3231	61,317	462	61,250	16,000	139,030	63	2.5
3232	48,955	11,300	75,750	500	136,505	141	3.8
3240	56,061	225	0	555	56,840	200	6.8
3250	38,768	0	0	0	38,768	102	2.9
3261	23,769	100	0	0	23,869	90	3.8
3262	71,932	100	0	0	72,032	247	7.5
3291	34,900	24,973	56,306	3,077	119,256	37	1.0
India Total	**1,960,968**	**157,148**	**1,202,522**	**251,556**	**3,572,194**	**6,368**	**4.6**
3220 **Sri Lanka**	21,949	10,092	0	1,217	33,258	129	6.8
3271 **Pakistan**	28,277	31,706	0	0	59,983	66	4.6
3272 **Pakistan**	8,472	577	0	1,000	10,049	13	0.5
3281 **Bangladesh**	283,351	11,216	167,308	40,225	502,100	393	7.0
3282 **Bangladesh**	62,296	1,401	500	1,000	65,198	297	7.9
3292 **Nepal**	110,096	18,703	132,523	0	261,322	326	7.4
South Asia Total	**2,475,410**	**230,843**	**1,502,853**	**294,998**	**4,504,104**	**7,592**	**4.8**
World Total	**57,284,679**	**19,738,940**	**7,646,328**	**11,855,762**	**96,525,709**		

** Non-districted*

Source: RI South Asia Office

रशीदा भगत

रो ई की वित्त व्यवस्था अच्छी स्थिति में

रशीदा भगत

FY2018 EXPENSE BREAKDOWN

कुआला लंपुर ज़ोन इंस्टिट्यूट में पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के राजस्व का विश्लेषण प्रस्तुत किया, यह प्रदर्शित करने के लिए कि रोई की वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी है, और वर्ष 2017 के अंत तक इसके पास 29 मिलियन डॉलर का अधिशेष होने का अनुमान है।

उन्होंने कहा रोई के राजस्व का पहला और सबसे महत्वपूर्ण स्रोत सदस्यता देय राशी होती है; 2018 में, रोटरी के कुल राजस्व में सदस्यता देय राशी की हिस्सेदारी 70 प्रतिशत से अधिक होने की सम्भावना है।

''चूंकि शुद्ध निवेश आय मुनाफ़ा बहुत ही अस्थिर होता है, इसलिये रोटरी परंपरागत ढंग से योजना तैयार करती है और इस स्रोत से बहुत ही कम आय प्राप्त करती है।''

संयुक्त क्लब देय राशी और शुद्ध आय मुनाफ़े का उपयोग सदस्य सेवाओं एवं कार्यक्रम, विपणन और निदेशक मंडल के भत्ते जैसी परिचालन लागत के लिए किया जाता है। इस राशी का उपयोग वार्षिक वित्तीय विवरण दाखिल करने जैसी अनुपालन गतिविधियों के लिए भी किया जाता है।

प्रमुख रोटरी कार्यक्रमों जैसे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, दी रोटेरियन मैगज़ीन और वन रोटरी सेंटर नामक इवेंसटन स्थित रोई मुख्यालय के कार्यालय की जगह का किराया, राजस्व का तीसरा स्रोत है।

हर साल, मंडल निदेशकों का यह दायित्व होता है कि वे एक संतुलित बजट पास करें और यह सुनिश्चित करें कि व्यय आय के बराबर या उससे कम हो। हालाँकि, रोटरी के उपनियमों में से एक उपनियम मंडल को संचित कोष में से सामरिक रूप से खर्च करने की अनुमति देता है। पूर्व में, इस राशी का उपयोग क्षेत्रीय सदस्यता योजनाओं का भुगतान करने, पोलियो संचार और टीआरएफ में योगदान देने हेतु किया जाता था। इस संचित कोष को सामान्य अधिशेष निधि के नाम से जाना जाता है।

एक अन्य उपनियम के अनुसार, रोटरी के पास पिछले तीन वर्षों में रोई द्वारा खर्च किये गए सबसे बड़े व्ययों का 85 प्रतिशत के बराबर संचित कोष होना चाहिए। ''रोई मंडल एक परंपरागत संचित लक्ष्य निर्धारित करता है, और पूर्व सम्मेलनों से प्राप्त राजस्व का उपयोग आगामी सम्मेलनों के लिए उस मात्रा में किया जा सकता है जिससे कि लाभ-अलाभ की स्थिति तक ना पहुँचा जा सके,'' प्रभाकर ने कहा।

निवेश के लिए भी मंडल एक संचित कोष बनाये रखता है ताकि निवेश से प्राप्त आय के निर्धारित लक्ष्य से कम होने की स्थिति में पर्याप्त निधीयन सुनिश्चित किया जा सके।

अच्छी तरह से अंशशोधित और परंपरागत खर्च एवं निवेश के रवैये की वजह से, ''2017 के अंत तक रोटरी के पास मंडल के लक्ष्य से ऊपर 29 मिलियन डॉलर का अधिशेष होगा,'' उन्होंने आगे कहा।■

पैसा कभी मेरी प्राथमिकता नहीं

रशीदा भगत

वसंती तिनाचंद्रन के एल जोन इंस्टीट्यूट में टीआरएफ ट्रस्टी पॉल नेटज़ल का स्वागत एक गुलदस्ते के साथ करते हुए।

वह 26 वर्ष की आयु में रोटरी से जुड़े, और कैसे जुड़े, यह एक रोचक कहानी है। टीआरएफ न्यासी अध्यक्ष पॉल नेटज़ेल कैलिफ़ोर्निया के कल्वर शहर में YMCA के युवा कार्यकारी अधिकारी थे, ''और अगर आप एक कार्यकारी पद पर है, तो आप रोटरी के लिए एक बड़े प्रतियोगी है।'' जब वह 26 वर्ष के हुए, शहर के अधिकतर सेवा क्लब उनको अपना सदस्य बनाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने रोटरी से जुड़ने का निर्णय लिया।

और ऐसा इसलिए क्योंकि, उन्हें जुड़ने के लिए आमंत्रित करने वाले सभी क्लबों का दौरा करने के बाद, उन्होंने जाना कि समुदाय के प्रमुख व्यापारी और अन्य नेतृत्वकर्ता एवं निर्णयकर्ता रोटरी में थे! साथ ही YMCA मंडल के कई सदस्य भी रोटरी में थे। ''तो यह एक आसान निर्णय था। लेकिन रोटरी के पास भी चार-मार्गी परीक्षण था जो धचउ- के मूल्यों से काफी मिलता था, और यहाँ भी समुदाय की सेवा और व्यवसाय पर ही फोकस था,'' वह कहते है।

न्यासी अध्यक्ष की कहानी थोड़ी असामान्य है... उनकी युवावस्था से ही, वह निर्लाभ-संगठन में जाना चाहते थे। लेकिन क्यों, मैंने उनसे पूछा, जब हम कुआलालंपुर ज़ोन इंस्टिट्यूट में बात कर रहे थे। ''क्योंकि एक लड़के के रूप में मैं YMCA के साथ बड़ा हुआ था, हर साल उनके ग्रीष्मकालीन शिविर में शामिल होता था। और जब मैं हाई स्कूल में था, YMCA ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके साथ पार्ट टाइम काम करूंगा।'' और वह मान गए; और जल्द ही वहाँ के पेशेवर स्टाफ़ ने कहा कि उन्हें फुल टाइम काम करने के बारे में सोचना चाहिए और इसे अपना कैरियर बनाना चाहिए। वह मान गए और उन लोगों ने उनसे शिकागो के एक स्कूल में जाने की अनुशंसा की जो लाभ-निरपेक्ष पेशेवरों को प्रशिक्षण देने में महारती है।

दिलचस्प रूप से, उनकी पत्नी डिएन का भी पिट्सबर्ग में YMCA के साथ समान अनुभव था। वह भी उसी स्कूल में आई थी और वे वहाँ मिले।

कोई भी कभी भी किसी संस्था का वास्तव में तब तक हिस्सा नहीं बन सकता जब तक आप उसके लिए कुछ ना करें, क्योंकि मेरा मानना है कि यही उस संस्थान में शामिल होने की कीमत है।

वहाँ पढ़ने की शर्त यह थी कि आपको किसी निर्लाभ संगठन के लिए पार्ट टाइम काम करना होगा। ''मैंने दो साल पॉलिश प्यूर्टो रिकन समुदाय के साथ कार्य किया जो शिकागो के उत्तर की तरफ स्थित एक सड़क, जिसे डिवीज़न स्ट्रीट कहते है, से विभाजित था। और वहाँ का YMCA बीचोंबीच स्थित था, एक सुरक्षित ठिकाने के रूप में! दोनों समुदाय हमेशा लड़ने के लिए आतुर रहते थे लेकिन जब वे YMCA में आते थे, तो यह एक सुरक्षित और निष्पक्ष जगह होती थी। इस अनुभव ने मेरे दृष्टिकोण और इच्छा को जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के लिए तैयार करने में बहुत मदद की।''

ग्रेजुएशन के पहले ही, पॉल और डाएन ने 1963 में शिकागो में शादी कर ली। ग्रेजुएशन के बाद उन्होंने लॉस एंजेलिस के YMCA के लिए काम किया और अंततः उसके सबसे युवा आधिकारिक निदेशक बने। तब वह मात्र 25 वर्ष के थे!

बाद में, जब वह YMCA के कार्यकारी उपाध्यक्ष बने, उन्हें लॉस एंजेलिस जाना पड़ा जो दुनियाभर के सबसे बड़े YMCA में से एक था। यहाँ पर वह लॉस एंजेलिस के रोटरी क्लब से जुड़े, जो पांचवां सबसे पुराना और दुनियाभर के सबसे बड़े रोटरी क्लबों में से एक था।

नेटज़ेल का संपूर्ण कैरियर निर्लाभ संगठनों में रहा है; एक नौजवान के लिए यह बड़ा असामान्य है कि वह सफलता और पैसे कमाने के बारे में ना सोचे। तो मैंने ज़ोर देकर पूछा कि कैसे उनका ध्यान निर्लाभ संगठनों पर केन्द्रित हुआ। उनका उत्तर था: ''लेकिन मैं युवा था और मेरे पास सीखने के लिए बहुत कुछ था। और पैसा कमाना कभी भी मेरा लक्ष्य नहीं था। रोटरी ने मुझे एक छोटे बच्चे से वयस्क बना दिया और मेरा उद्देश्य हमेशा से वही था जो रोटरी का बुनियादी सिद्धांत है - दूसरों की सेवा के लिए अपने पेशे का इस्तेमाल करें,'' वह मुस्कुराते है।

1985 में, उन्होंने नेटज़ेल ग्रिग्स्बी एसोसिएट्स इनकॉर्पोरेट नामक एक अग्रणी प्रबंधन परामर्शदाता फर्म की शुरुआत की, जिसे निर्लाभ संगठनों और पश्चिमी यूएस के संस्थानों के साथ कार्य करने में विशेषज्ञता प्राप्त है। उन्होंने इसकी शुरुआत अधिक पैसा कमाने

बाएं से : *रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली, रो ई निदेशक सी भास्कर, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ल और रो ई निदेशक जॉन सी मेथ्यूज़।*

के लिए नहीं की थी... यह कभी भी मेरी प्राथमिकता नहीं था लेकिन इसलिए की ''क्योंकि मैं सोचता था कि मैं अधिक सेवा कर सकता हूँ। इसका उद्देश्य पश्चिमी यूएस में हमारे प्रकार की सबसे नैतिक और सबसे सफल फर्म के रूप में माने जाने का था।''

मगर डिएन और वह कल्वर शहर में ही रहते थे जहाँ उनका बेटा और बेटी पैदा हुए और पले-बढ़े थे। उनसे कई लोगों ने कल्वर शहर के बोर्ड ऑफ़ एजुकेशन के लिए चुनाव लड़ने के लिए कहा, ''जिसके पास 1970 के दशक में कैलिफ़ोर्निया की सर्वोच्च शिक्षा प्रणालियाँ थी। क्या आपको पता था,'' उन्होंने प्रफुल्लित लहजे में पूछा, कि वर्ष ''1972 तक अधिकतर चलित सिनेमा पूरी दुनिया को छोड़कर कल्वर शहर पर आधारित होता था? बेशक जब तक बॉलीवुड शुरू नहीं हुआ था तब तक,'' वह मजाक में कहते है। ''*गॉन विथ दी विंड* लगभग पूरी तरह कल्वर शहर में फिल्मायी गई थी। और *विज़र्ड ऑफ़ ओज़* भी यहीं फिल्मायी गई थी! तो इसका एक लम्बा और समृद्ध इतिहास है और आज भी यह एक महत्वपूर्ण शहर है।''

वह बोर्ड ऑफ़ एजुकेशन के लिए चुने गए, और उन्होंने चार सालों तक वहाँ उनकी सेवा दी। उन्होंने जब चुनाव में पुनः भाग लेने का निश्चय किया तब उनसे नगर परिषद् का चुनाव लड़ने के लिए कहा गया और वह दो बार मेयर चुने गए।

मज़े की बात यह है कि, कई लोगों ने नेटज़ेल से राजनीती में बने रहने और संसदीय चुनाव लड़ने का आग्रह किया ''लेकिन राजनीती में कभी भी मेरी रूचि नहीं थी,'' वह ज़ोर देकर आगे कहते है, ''सेवा ही हमेशा से मेरा उद्देश्य था। मैं मानता था और आज भी मानता हूँ, कि हमारी एक गहन जिम्मेदारी है... चाहे आप कोई भी देश के हो, हमें समुदाय की सेवा करनी है और परिवर्तन लाना है। मेरा मानना है कि लौटाना हमारी एक जिम्मेदारी है और इसकी सुन्दरता इस बात में है कि ऐसा करने के लिए आपको किसी ऊँचे पद की कामना करने की आवश्यकता नहीं है।''

नेटज़ेल आगे कहते है कि रोटरी में भी उन्होंने कभी किसी पद, जैसे कि लॉस एंजिलस के रोटरी क्लब का अध्यक्ष बनना, की अभिलाषा नहीं की थी। उनका एक कट्टर विश्वास है कि ''कोई भी कभी भी किसी संस्था का वास्तव में तब तक हिस्सा नहीं बन सकता जब तक आप उसके लिए कुछ ना करें, क्योंकि मेरा मानना है कि यही उस संस्थान में शामिल होने की कीमत है। तो मैंने कहा कि मैं मेरे समुदाय की सेवा करने हेतु कुछ समय देने जा रहा हूँ। हर समय रोटरी मेरी प्रथम प्राथमिकता रही।''

नेटज़ेल की ज़बानी

संवहनीयता

अयंत गंभीर है। क्योंकि एक बात हमने सीखी है कि आप बहुत सारा पैसा निवेश कर सकते है... मैं म्यांमार में था और मैंने कल्याण (बेनर्जी) के साथ तब काम किया था जब वह रोई अध्यक्ष थे और हम म्यांमार को पुनः रोटरी की दुनिया में शामिल करना चाहते थे। मेरे क्लब, लॉस एंजेलिस का रोटरी क्लब, के एक सदस्य गाँवों में जल परियोजनाओं करके वहाँ एक प्रेरक शक्ति बने हुए थे। 2008 में आए प्रचंड तूफ़ान नर्गिस के कारण हुई तबाही के बाद रोटेरियनों ने मदद की थी। और म्यांमार सरकार ने हमसे कहा था कि प्राकृतिक आपदा के समय जितने भी छत्रछ्ज मदद के लिए आगे आए थे वे मुश्किल से 12-18 माह रहे, लेकिन रोटरी अकेली शुरुआत से अंत तक साथ थी। और अनेक देशों में रोटरी की यही कहानी है। अच्छा करने के लिए लम्बे समय तक वहाँ मौजूद रहना संवहनीयता का एक अन्य प्रकार है।

मगर यह भी देखा गया कि कुछ क्षेत्रों में 3-4 सालों तक अनुदान परियोजनाएं की गई और उसके बाद रोटेरियन छोड़कर चले गए और जो निवेश हमने किया था उसका इस्तेमाल नहीं किया जा रहा था। और वहाँ पर जल और सफाई व्यवस्था अत्यावश्यक क्षेत्रों में से एक थी। संवहनीयता का अर्थ यह भी होता है कि निवेश पर कुछ प्रतिफल मिले और निर्लाभ एवं लोकोपकार की अपनी पेशेवर दक्षता द्वारा, मैं जानता हूँ कि टीआरएफ ने फ्यूचर विज़न के माध्यम से पहले जो स्थापित किया, और जो अभी भी अलग-अलग तरीकों से ज़ारी है, वह एक अत्याधुनिक एवं सुविज्ञ प्रणाली है। तो जब कोई अन्य संस्थान या संगठन किसी निर्लाभ संस्थान के साथ जुड़ने एवं उसे अपना पैसा देने के बारे में सोचता है, तो वे आमतौर पर प्रशंसात्मक ढंग से टीआरएफ और रोटरी की ओर देखते है क्योंकि हम अपनी पारदर्शिता, अपनी संवहनीयता और अपनी स्वयंसेवक संरचना के कारण आने वाली लागत प्रभावशीलता के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत में उडठ अवसर

यह एक बड़ा अवसर है; फरवरी 2017 में पुणे में, मैंने स्थानीय चैम्बर ऑफ़ कॉमर्स के कुछ 25 कार्यकारी सदस्यों से बात की। मेरा उनसे बात करने का मुख्य उद्देश्य उन्हें यह बताना था कि भारत में उनके CSR पैसे को खर्च करने के लिए शायद रोटरी से बेहतर अन्य कोई संस्थान नहीं है। मैंने हमारे इतिहास और पोलियो के लिए हमारी प्रतिबद्धता के बारे में बात की।

पसंदीदा धर्मार्थ संस्था

पिछले 100 सालों में हमने 4.3 बिलियन डॉलर इकठ्ठा करके खर्च किये है और इसकी अधिकतर राशी पिछले 50-55 सालों में आई है। तो निश्चित रूप से हम पसंदीदा धर्मार्थ संस्था है।

2025 तक 2025

वर्ष 2025 तक 2 बिलियन और 25 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करना एक बड़ा लक्ष्य है लेकिन हम बिना किसी परेशानी के लगभग आधे रास्ते तक पहुँच चुके है।

भविष्य

रोटरी में हर स्तर - क्लब, मंडल और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर - नेतृत्वकर्ता की भूमिका में रहने का यह सबसे रोचक समय है और आगामी 5-7 वर्ष तक ऐसा ही रहेगा। क्योंकि: जब दुनिया पोलियो मुक्त घोषित होगी, जो जल्द ही होने जा रहा है, रोटरी के साथ टीआरएफ भी अपनी क्षमता और हमारे कार्य के बाद यह जो भी चुनती है के संबंध में शीर्ष स्थान पर होंगे।

अगला ध्यानाकर्षण क्षेत्र

अगली बड़ी परियोजना शायद हमारे ध्यान केन्द्रण क्षेत्र के दायरे में ही होगी, और मैं आशा करता हूँ कि इसमें शांति का एक पहलू अवश्य होगा क्योंकि हर वह चीज़ जो हम करते है शांति की छत्रछाया में करते है। हम विचारक नेता है और हम सकारात्मक चीज़ों को लाभकारी तरीके से करते है। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि जो भी अगला ध्यानाकर्षण क्षेत्र होगा हम उसका नेतृत्व करें।

और भारतीय रोटेरियनों ने उन्हें गहन रूप से प्रभावित किया था। मैंने पाया कि उनका ऊर्जा स्तर इतना अधिक इसलिए था क्योंकि वे अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के मुद्दों के बीच ही रह रहे थे।

मिलियन डॉलर के प्रश्न पर कि पोलियो के बाद आगे क्या, नेटज़ेल याद करते है वर्ष 2007 में साल्ट लेक सिटी सम्मेलन में, वरिष्ठ बिल गेट्स, सीएटल से एक रोटेरियन एवं बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के अध्यक्ष, ने कहा था ''जब आपके पास पोलियो के आगे कुछ करने का समय आएगा, कुछ बड़ा और साहसिक सोचिएगा क्योंकि अभी तक आपने जो कुछ भी हासिल किया है उसके कारण तब तक आपके पास कुछ भी कर सकने के लिए असीमित क्षमता होगी। तो हम उस पर विचार कर रहे है, और जैसे-जैसे हम पोलियो का आखरी मामला मिलने से 36-माह की अंतिम समय सीमा के पूर्ण होने के बाद दुनिया को पोलियो मुक्त घोषित होने के करीब पहुँचेंगे, हम दुनियाभर के रोटेरियनों के साथ और अधिक व्यस्त होंगे जो हमें सुझाव और सहयोग प्रदान करेंगे।''

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में टीआरएफ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ल सभा को संबोधित करते हुए।

रोटरी और भारत

के एल इंस्टिट्यूट में नेटज़ेल ने कई बार इस बात का उल्लेख किया कि भारत के प्रत्येक दौरे ने उन्हें खुश एवं उत्साहित किया। तो भारत में क्या खास बात है? और रोटरी जगत के लिए यह कितना महत्वपूर्ण है?

''मैं सोचता हूँ यह गंभीर रूप से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले, यह वह ऊर्जा है जो भारतीय रोटेरियन प्रदान करते है। दूसरा तथ्य समझाने के लिए, वह नवम्बर 1997 में डीजी के रूप में भारत के अपने प्रथम दौरे को याद करते है जब वह एक पोलियो सुधारक सर्जरी परियोजना के लिए मुंबई और पुणे आए थे। और भारतीय रोटेरियनों ने उन्हें गहन रूप से प्रभावित किया था। मैंने पाया कि उनका ऊर्जा स्तर इतना अधिक इसलिए था क्योंकि वे अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के मुद्दों के बीच ही रह रहे थे। मैंने ऐसी कई जगहों का दौरा किया जहाँ अगर उस समुदाय के लिए रोटेरियन नहीं होते तो उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्कूल एवं स्वास्थ्य सुविधा, ब्लड बैंक... जैसी सुविधाएं नहीं मिल पाती। और जब मैंने 2007 में भारत (चेन्नई) का दौरा किया था तब भी स्थिति समान थी और आज भी यह वैसी ही है।''

पोलियो सुधारक सर्जरी 250,000 डॉलर के चार वर्ष के 3क अनुदान द्वारा की गई थी, जिसमें उनका मंडल साझेदार था। ''मेरे वहाँ होने का कारण था कि मैं भारतीय रोटेरियनों को दिखाना चाहता था कि हम सिर्फ पैसा नहीं भेजते, हम यहाँ आकर, आपके साथ सम्मिलित होकर प्रत्यक्ष रूप से देखना चाहते है कि क्या हो रहा है और जिस भी तरह से हो सके आपकी मदद करना चाहते है।''

वह इस बात से द्रवित और प्रभावित थे जब भारतीय रोटेरियनों ने उनसे पूछा हम बदले में आपके क्षेत्र में क्या कर सकते है। ''हमें विश्वास है आपके क्षेत्र में आपकी अपनी जरूरतें होंगी।'' इसलिए समय के साथ, और उनके गवर्नर के कार्यकाल की समाप्ति के बाद, उन्होंने कुछ और परियोजनाएं की।

_गॉन विथ दी विंड_ लगभग पूरी तरह कल्वर शहर में फिल्मायी गई थी। और _विज़र्ड ऑफ़ ओज़_ भी यहीं फिल्मायी गई थी! तो इसका एक लम्बा और समृद्ध इतिहास है।

क्या उन्होंने कभी सोचा था कि भारत टीआरएफ में दान देने वाला दूसरा सबसे बड़ा दानकर्ता हो सकता है?

सर्वप्रथम, दिसंबर 2007-09 में जब तक मैं निदेशक नहीं बना था तब तक मैं इस दृष्टिकोण से सोचने वालों में वास्तव में शामिल नहीं था; अशोक महाजन मेरे साथ रो ई निदेशक थे।'' तब उन्हें टीआरएफ के बारे में बेहतर वैश्विक समझ प्राप्त हुई; इस बार वह डाएन के साथ लौटे और भारत ने उनके समक्ष रोटरी का नया पहलू सामने रखा। और इस बार यह भयानक था।

''सदस्यता वृद्धि तब एक मुख्य प्राथमिकता थी और हम चुनावों में भयानक राजनीतिक दखल का सामना कर रहे थे और चुनावों को चुनौती दी जा रही थी, और चुनौतियां एक महामारी का रूप ले रही थी इसलिए रोई मंडल को कुछ कार्यवाही करके इस मुद्दे को नियंत्रित करना पड़ा।''

लेकिन इसके बावजूद भी, उनका विश्वास था कि ''भारत एक दिन दुनिया के शीर्ष रोटरी देशों में शामिल होगा। क्योंकि यह हमारे द्वारा देखी गई प्रतिबद्धता और समर्पण से सुस्पष्ट था।''

चत्र: रशीदा भगत और रोटेरियन श्रीधर भारती
एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी को अधिक
महिला सदस्यों की ज़रूरत हैं

नारायणन सुरेश

बेंगलुरु के रोटरी हाउस ऑफ़ फ्रेंडशिप में बैंगलोर के रोटरी क्लब (RCB) और मंडल 3190 के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों को संबोधित करते हुए, पीआरआईपी के आर रविन्द्रन ने इस बात को बलपूर्वक कहा कि रोटरी का भविष्य महिला सदस्यों के हाथों में है।

दो सौ से अधिक देशों में 35,000 से भी अधिक रोटरी क्लबों में 1.2 मिलियन सदस्यों के साथ रोटरी अंतर्राष्ट्रीय ने वर्ष 1987 में पहली बार महिला सदस्यों की भर्ती करना शुरू किया था। विश्व भर में, अब रोटरी क्लब के सदस्यों में लगभग 27 प्रतिशत महिलाएं है। उन्होंने वहाँ मौजूद डीजी आशा प्रसन्ना कुमार की, 140 से अधिक क्लबों पर उनके प्रेरणात्मक नेतृत्व के लिये प्रशंसा की।

दो सौ से भी अधिक रोटेरियनों के साथ एक आकर्षक वार्तालाप, जिसे पीआरआईपी के. आर. रविन्द्रन के साथ आमने-सामने कहा गया, में व्यस्त होकर पीआरआईपी रविन्द्रन ने कहा कि रोटरी को अधिक महिला सदस्यों की आवश्यकता है क्योंकि वे सामुदायिक सेवा गतिविधियों को लेकर अत्यंत जोशीली होती है। उन्होंने कहा कि रोई में पहले से ही कई वरिष्ठ महिला निदेशक है। ''अब वह समय अधिक दूर नहीं जब रोटरी अंतर्राष्ट्रीय को उसकी पहली महिला अध्यक्ष मिलेगी,'' उन्होंने कहा।

बैंगलोर का रोटरी क्लब, कर्नाटक का पहला और सबसे पुराना रोटरी क्लब, जिसकी स्थापना 1934 में हुई थी, के 255 सदस्यों में लगभग 15 प्रतिशत महिला सदस्य है।

RCB के अध्यक्ष ज़रीर बाथा और पूर्व अध्यक्ष राम कुमार द्वारा संयमित इस एक घंटे तक चलने वाली गुफ़्तगू के दौरान, पीआरआईपी रविन्द्रन ने उनकी नेतृत्व विधि, रोटरी की अंतर्राष्ट्रीय पहुँच एवं गतिविधियाँ, अल्प प्रशासनिक लागत और संगठन के हर स्तर पर पारदर्शिता के साथ दुनिया भर में अच्छा करने के अनवरत प्रयासों के बारे में सवालों की विशाल श्रृंखला का उत्तर दिया।

पीआरआईपी रविन्द्रन ने कहा, यूएस-आधारित चैरिटी नेविगेटर नामक संस्था ने उसके द्वारा हाल ही में किये गए एक अध्ययन में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय को निधि का इस्तेमाल करने में दुनिया का सबसे कुशल NGO होने का स्थान दिया और 97.3 प्रतिशत सत्यता के साथ सबसे अधिक पारदर्शिता से वित्तीय जानकारी देने के लिए इसे सर्वोच्च स्थान पर रखा। रोटरी का नाम दुनिया के अन्य प्रतिष्ठित छत्रक्ष जैसे वर्ल्ड विज़न, रेड क्रॉस और सेव दी चिल्ड्रन से भी आगे था।

RCB के प्रतिष्ठित सदस्य और पीआरआईडी एम के पांडुरंगा शेट्टी और डीजी आशा ने पीआरआईपी रविन्द्रन को सम्मानित किया जिन्होंने अपने जादू, हाज़िरजवाबी, स्पष्ट सोच और रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा किये गए अच्छे कार्यों की अभिव्यक्ति के माध्यम से श्रोतागणों को मंत्रमुग्ध किया।

लेखक रोटरी क्लब बैंगलोर के संयुक्त सचिव है।

पीआरआईपी के आर रविद्रंन, RCB के अध्यक्ष ज़रीर बाता (दाएं) और नियंत्रक राम कुमार शेशू (बाएं) के साथ चर्चा में।

अच्छे कार्य हेतु रात्रिभोज

टीम रोटरी न्यूज़

बाएं से दाएं : *RILM के अध्यक्ष शेखर मेहता, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, लूम्बा फाउंडेशन की अध्यक्ष शेरी ब्लेयर , लॉर्ड लुम्बा, सेना के पूर्व चीफ जनरल जोगिंदर जसवंत सिंह और उनकी पत्नी अनुपमा सिंह।*

दी लूम्बा फाउंडेशन, एक वैश्विक NGO (गैर सरकारी संगठन) जो विधवाओं के कल्याण और उनके बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करता है, ने उसकी 20वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए और रोटरी इंडिया साक्षरता मिशन (RILM) के साथ आधिकारिक तौर पर अपनी साझेदारी की शुरुआत करने के लिए हाल ही में गुरुग्राम और मुंबई में अनुदान संचयन के लिए धर्मार्थ रात्रिभोजों का आयोजन किया। NGO के अध्यक्ष, चेरी ब्लेयर, सम्मानित अतिथि थे।

RILM के मुख्य सलाहकार पीआरआई पी कल्याण बेनर्जी, लुम्बा फाउंडेशन की अध्यक्ष शेरी ब्लेयर के साथ।

RILM और इस फाउंडेशन ने 30,000 विधवाओं को बुनियादी शिक्षा और आजीविका कौशल प्रदान करने के लिए हाथ मिलाया है ताकि वे गरिमामय जीवन जी सकें। यह साझेदारी इन विधवाओं के 2000 बच्चों को वापस स्कूल भी भेजेगी जिन्होंने स्कूल छोड़ दिया था या कभी स्कूल गए ही नहीं थे।

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर, गुरुग्राम के रात्रिभोज पर मुख्य अतिथि थे। पूर्व रोई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी, जो RILM के प्रमुख सलाहकार भी है, मुंबई के समारोह में शामिल हुए। उन्होंने पूर्व में संस्थान के साथ जून 2017 में लन्दन में इस अनुबंध को हस्ताक्षरित किया था।

इस कार्यक्रम के लिए रोटरी क्लब अपने मंडलों में लाभार्थियों की पहचान कर सकते है। RILM के प्रशिक्षक इन विधवाओं को विभिन्न व्यावसायिक कौशलों में प्रशिक्षण देंगे और कोर्स के सफलतापूर्वक पूर्ण होने के बाद, उन्हें नौकरी दिलवायी जाएगी या स्वयं का लघु व्यवसाय स्थापित करने में उनकी मदद की जाएगी।■

BE THE INSPIRATION

प्रेरणा बनिए
रोटरी थीम
2018-19

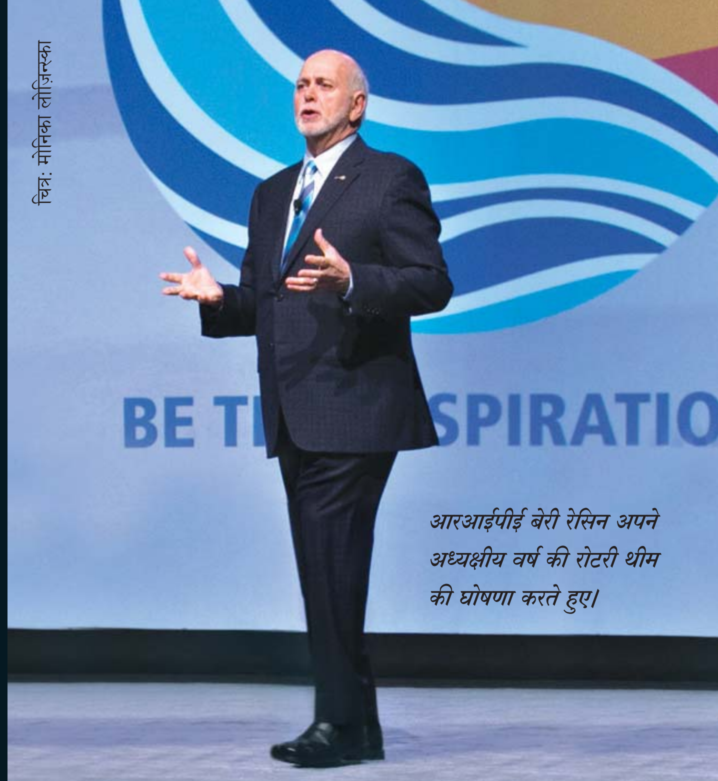

चित्र: मोनिका लोज़िन्स्का

आरआईपीई बेरी रेसिन अपने अध्यक्षीय वर्ष की रोटरी थीम की घोषणा करते हुए।

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के अध्यक्ष-निर्वाचित बेरी रेसिन ने सेन डिएगो, यूएसए, की रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सभा में संगठन के भविष्य के बारे में अपने विचार पेश किए और नेतृत्वकर्ताओं से संवहनीय भविष्य के लिए कार्य करने एवं बड़े पैमाने पर रोटेरियनों एवं समुदाय को प्रेरित करने की अपील की।

रेसिन, जो बहमास के न्यू प्रोविडेंस के ईस्ट नासाउ रोटरी क्लब के एक सदस्य है, ने वर्ष 2018-19 की अध्यक्षीय थीम, *प्रेरणा बनिए,* को आगामी मंडल गवर्नरों के समक्ष अनावरित किया। ''मैं चाहता हूँ आप अपने क्लबों, अपने रोटेरियनों को प्रेरित करें जो कुछ बड़ा करने की इच्छा रखते है। अधिक करने, अधिक बनने, कुछ सृजन करने की अभिलाषा जो हम में से हर एक के परे रहेगी।''

उन्होंने रोटरी के नए लक्ष्य विवरण की शक्ति पर बल दिया, ''एक साथ मिलकर, हम एक ऐसी दुनिया देखते है जहाँ लोग संगठित होकर - दुनियाभर में, हमारे समुदाय में और स्वयं के अंदर - स्थायी परिवर्तन लाने के लिए कार्य करते है।'' यह रोटरी को परिभाषित करती है कि नेतृत्वकर्ताओं को सृजन में मदद करनी चाहिए, उन्होंने कहा।

''हम सर्वप्रथम एक सदस्यता संगठन है। और अगर हम सेवा के योग्य बनना चाहते है, अगर हम अपने लक्ष्यों में सफल होना चाहते है - तो हमें सर्वप्रथम अपने सदस्यों का ख्याल रखना होगा।''

रेसिन ने नवनिर्वाचित मंडल गवर्नरों से कहा कि अगर वह परिवर्तन लाना चाहते है, और अधिक कार्य करना चाहते है, अगर वे अपने स्वयं के सामर्थ्य की सीमा तक पहुँचना चाहते है, तो उन्हें ''अपने क्लब के अध्यक्षों और अपने मंडल के रोटेरियनों को प्रेरित करना होगा। यह आपका काम है कि उन्हें प्रेरित करें - और उनके स्वयं के बलबूते आगे बढ़ने में उनकी सहायता करें।''

पोलियो पर प्रगति

अध्यक्ष-निर्वाचित ने ध्यान दिलाया कि रोटरी का पोलियो उन्मूलन के लिए किया गया कार्य एक प्रेरणा स्रोत रहा है। उन्होंने पिछले तीन दशक की अतुलनीय प्रगति के बारे में बताया। 1998 में, अनुमानित 350,000 लोग निरंकुश पोलियोवायरस द्वारा लकवाग्रस्त थे; 27 दिसम्बर 2017 तक मात्र 20 मामले सामने आए। ''हम अविश्वसनीय रूप से पोलियो उन्मूलन के एक रोमांचक समय में है,'' उन्होंने कहा, ''एक ऐसा समय जहाँ पर सामने आने वाला पोलियो का हर एक नया मामला आसानी से अंतिम मामला बन सकता है।''

उन्होंने ज़ोर दिया कि पोलियो का वह अंतिम मामला दर्ज किये जाने पर भी, काम खत्म नहीं होगा। ''पोलियो तब तक खत्म नहीं होगा जब तक प्रमाणीकरण आयोग ना कह दे कि पोलियो खत्म हो गया है - जब एक भी पोलियो वायरस किसी नदी, नाले या किसी लकवाग्रस्त बच्चे में कम से कम तीन साल तक नहीं मिलेगा,'' उन्होंने कहा। तब तक, ''हमें वो सब करते रहना होगा जो हम अभी कर रहे है।'' उन्होंने टीकाकरण और रोग निरीक्षण कार्यक्रमों के प्रति निरंतर समर्पित रहने पर ज़ोर दिया।

पर्यावरण को संभाले रखना

हाल ही के वर्षों में अपने मानवीय कार्य में रोटरी ने संवहनीयता पर अधिक ध्यान दिया है। अब रोटेरियनों को प्रदूषण, पर्यावरण अपकर्षण और जलवायु परिवर्तन के बारे में कुछ कड़वी सच्चाइयों को स्वीकार करना होगा, रेसिन ने कहा। उन्होंने ध्यान दिलाया कि उनके स्वयं के देश का 80 प्रतिशत हिस्सा समुद्र तल से एक मीटर की सीमा में है। समुद्र तल का वर्ष 2100 तक दो मीटर ऊँचा उठने का अनुमान है, उन्होंने कहा, मेरा देश, कैरीबियन के अनेक द्वीपों और तटीय नगरों एवं पूरी दुनिया के निचले स्तर पर स्थित क्षेत्रों के साथ, आने वाले 50 सालों में खत्म होने जा रहा है।

रेसिन ने नेतृत्वकर्ताओं से रोटरी की सभी सेवाओं को विश्वस्तर की एक बड़ी प्रणाली के हिस्से के रूप में देखने पर ज़ोर दिया, हम स्थायी कल्याण करना चाहते है। ''हम दुनिया को एक बेहतर जगह बनाना चाहते है। केवल यहाँ ही नहीं, केवल हमारे लिए ही नहीं, बल्कि हर जगह, सभी के लिए, आने वाली पीढ़ियों के लिए।''

स्रोत: www.rotary.org

अंचल 4 & 5 टीआरएफ़ के शीर्ष 9 में सबसे ऊपर

रशीदा भगत

विभिन्न पदों पर आसीन रोटरी के वर्तमान, भूतपूर्व, और आगामी नेताओं और वे सभी जो भविष्य में नेतृत्व करना चाहते हैं के लिए यह समय सबसे रोमांचक समय है । आगामी 5-7 साल रोटरी के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि अगली शताब्दी में यही हमारे फाउंडेशन की दिशा तय करेंगे।

केएल जोन(अंचल) इंस्टीट्यूट में फाउंडेशन सेमिनार को संबोधित करते हुए, ट्रस्टी चेयर पॉल नेट्ज़ेल ने कहा कि पिछले 10-12 वर्षों में, हमने अपने छह क्षेत्रों को इतनी भली भांति परिभाषित किया है, और ये सात हो भी सकते हैं अगर हमारे रो इ अध्यक्ष (इयन राय्सली) अपने फ़ोकस क्षेत्र (पर्यावरण संरक्षण के) कुछ सुझावों को भी सम्मिलित कराने का तरीका ढूंढ निकालें। अपनी दूसरी शताब्दी के पहले वर्ष में हमने जबरदस्त विश्वसनीयता के साथ शुरुआत की है।

उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में इस वर्ष अपना टीआरएफ व्यापक लक्ष्य 315 मिलियन डॉलर निर्धारित किया था, लेकिन पोलियो उन्मूलन के लिए गेट्स ने अपनी अनुदान राशि 70 मिलियन से बढ़ाकर 100 मिलियन डॉलर कर दी वहीं रोटेरियनों ने भी राशि को 35 मिलियन से बढ़ाकर 50 मिलियन डॉलर कर दिया, इसलिए उन्होंने भी अपना लक्ष्य 360 मिलियन डॉलर कर दिया ।

नेटज़ेल ने अपने से पूर्व चेयर रह चुके कल्याण बेनर्जी को टीआरएफ़ शताब्दी वर्ष में ''असाधारण नेतृत्व'' के लिए धन्यवाद दिया, और कई मौलिक विचारों के साथ फण्ड इकठ्ठा करने की विभिन्न मदों और पहल के माध्यम से अपने लक्ष्य में ज़बरदस्त वृद्धि करते हुए कहा कि ''हमने इसका सबूत भी दे दिया है कि किस प्रकार हम एक संगठन के रूप में परिपक्व हुए हैं। पिछले साल बेनर्जी ने 300 मिलियन डॉलर का अभूतपूर्व लक्ष्य रखा था और जिसकी एवज़ में हमने 304 मिलियन डॉलर इकट्ठे कर दिखाये। और आपने अपने अंचल 4,5 और 6 ए में 20.89 मिलियन डॉलर और अकेले भारत ने 20.04 मिलियन डॉलर जुटाए हैं। 15.24 मिलियन डॉलर योगदान के साथ विश्व के नौ अंचलों में अंचल 4 और 5 सबसे शीर्ष पर हैं।''

आपने अपने अंचल 4,5 और 6 ए में 20.89 मिलियन डॉलर और अकेले भारत ने 20.04 मिलियन डॉलर जुटाए हैं।

ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल

नेटज़ेल ने कहा कि संक्षेप में, रोटेरियन शांति रक्षक और शांति-निर्माता दोनों ही थे। पिछले कुछ वर्षों में हमने सीखा है कि जब हम स्वच्छ पानी के साथ साथ सफ़ाई व्यवस्था भी मुहैया कराते हैं, निरक्षरता हटाते हैं, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर को कम करते हैं, लड़कियों और महिलाओं को शिक्षित करते हैं और आर्थिक रूप से समुदायों को समृद्ध बनाते हैं,तो हम संघर्ष और गरीबी को समूल नष्ट करने की दिशा में ही अग्रसर होते हैं जो अंततः शान्ति स्थापित करने में सहायक होंगे।''

टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने भी टीआरएफ शताब्दी वर्ष में बेनर्जी के नेतृत्व को पूरा सम्मान दिया और 300 मिलियन डॉलर के साहसिक लक्ष्य के लिए उन्हें बधाई दी, जो शुरूआत में असंभव लग रहा था परन्तु इसे भी प्राप्त कर लिया गया।

रशीदा भगत

सभी लोग रोटरी इंटरनेशनल और फाउंडेशन की तरफ देख रहे हैं कि रोटरी अब कौन सी बड़ी चुनौती लेगा। ''पर हाँ एक बात स्पष्ट है ... रोटरी वर्ल्ड एक ऐसी महान परियोजना के लिए तैयार नहीं है जिसमें 30 साल लगें और करोड़ों डॉलर खर्च हों । फिर भी हमें सचेत रहना होगा और खुद से यह प्रश्न पूछना होगा कि यदि हमारे पास पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम नहीं होता तो रोटरी कहाँ पर होती? अगर आज हमारे पीछे इस सफलता की कहानी नहीं होती, तो क्या हम इतना पैसा जुठा सकते थे? लेकिन रोटरी वर्ल्ड आगे जिस किसी भी परियोजना को चुनता है, मुझे यकीन है, वह मापनीय, पूर्ण करने योग्य और टिकाऊ भी होगी

सेमिनार में एक खुला सत्र रखा गया था और ट्रस्टी इलेक्ट गुलाम वहानवटी ने टीआरएफ में आगामी सभी डीजी से अपने आप को नवीनतम जानकारी से मुस्तैद रहने के लिए कहा तथा आग्रह किया कि ऐसे अवसरों का पूरा फायदा उठाएं और खुले फोरम का उपयोग प्रश्न पूछने और अपने विचार साझा करने के लिए करें। ''मुझे याद है जब फ्यूचर विज़न अपने तीसरे वर्ष के शुरूआती चरण में था, इसी तरह के ओपन हाउस में उस पर कईयों ने अपनी चिन्ता व्यक्त की थीं। इन सब को सुना गया और उपयुक्त बदलाव किए गए थे। इसलिए कृपया बोलें ज़रूर। और टीआरएफ योगदान को हमेशा अपने दिमाग में रखें। जब भगवान आपको धन दौलत से आपकी झोली भरते हैं, तो अपना - रहने का स्तर नहीं बल्कि अपना - दान देने का स्तर बढ़ाएं।''

रोटेरियन श्रीधर भारती

टीआरएफ़ ट्रस्टी चेयर पॉल नेटज़ेल (दाएं) और पीआरआईपी के आर रविंद्रन।

एक अन्य सत्र में पीडीजी और आईपीपीसी चेयर दीपक कपूर ने रोटेरियनों से आग्रह किया कि वे कभी भी इतिहास को अपनी दृष्टि से ओझल होने दें क्योंकि उन्होंने ही विश्व को पोलियो मुक्त बनाया है। उन्हें हमेशा याद रखना चाहिए कि पोलियोप्लस कार्यक्रम ने रोटेरियनों को आदर, सम्मान, स्वीकृति और विश्वसनीयता दी है। ''इसी की वजह से हमारे सम्मान में राष्ट्रपति भवन ने अपने द्वार खोल दिए, प्रधान मंत्री ने रोटेरियनों से मिल कर प्रसन्नता दिखाई; हमें बिल गेट्स, राजश्री बिड़ला, अमिताभ बचन जैसे महान परोपकारियों की विश्वसनीयता मिली, सर्वोच्च अधिकारियों से श्रद्धा और सम्मान मिला और मंदिरों, मस्जिदों, चर्चों में धार्मिक नेताओं ने हमें अंगीकार किया।''

बाएं से : टीआरएफ़ ट्रस्टी इलेक्ट गुलाम वाहनवटी, टीआरएफ़ ट्रस्टी सुशील गुप्ता, रो ई निदेशक सी भास्कर, जुलियट और रो ई अध्यक्ष इयन रायसली।

उन्होंने कहा कि ''कई वर्षों से भोजन के लंगर, स्वास्थ्य शिविर और अन्य धर्मार्थ कार्यक्रमों के बावजूद रोटरी आदर सम्मान से दूर ही रही। जब बर्नार्ड शॉ से पूछा गया रोटरी कहाँ है, उन्होंने कहा कि रोटरी लंच पर गई है! भारत में अभी भी मीडिया रोटरी क्लब को रोटी क्लब कहते हैं ... एक ऐसा क्लब जो एक पांच सितारा होटल में कई पकवानों पर फ़िज़ूलख़र्ची करते हुए विधवाओं में सिलाई की चार मशीनें दान करता है!'' ■

विचार करने योग्य कुछ पल

जयश्री

"अपने क्लब की सफलता के लिए, स्थानीय दक्षता, स्रोतों और विश्वसनीयता को उधार लीजिये," डॉ ए टी कुमाराराजा ने कहा, जो मलेशिया के SEDIC के आर्थिक एवं मानव पूँजी विकास के निदेशक है और भारतीय उद्यमियों के सशक्तिकरण के सचिवालय के संस्थापक सीईओ है। वह रोटरी क्लब ग्रेटर कुआला लम्पुर के पूर्व अध्यक्ष भी है।

के एल इंस्टिट्यूट में सामरिक साझेदारी का लाभ लेने पर उनके विचार, उनके अनुभवों और सरकार एवं स्वयं प्रधानमंत्री से प्रत्यक्ष बातचीत पर आधारित थे। कुमारराजा ने सात स्तंभों के माध्यम से अपनी शिक्षा का सार प्रस्तुत किया जो मजबूत सामरिक साझेदारियों का निर्माण करने में रोटरी क्लबों की भी मदद कर सकता है।

- स्थानीय व्यक्ति बनिये। समुदाय की स्थानीय जरुरतों को जाने।
- उचित साझेदार का चुनाव करें।
- किसी प्रमुख व्यक्ति को काम पर लगाए।
- अच्छा करने की एक साझी खासियत के साथ कार्य करें। कोई ऐसी पद्धति अपनानी चाहिए जिससे दोनों सहयोगी लाभान्वित हो सकें। मलेशिया में एक डायलिसिस केंद्र की स्थापना करने के लिए उनके क्लब द्वारा हाल ही में जुटाए गए एक सरकारी अनुदान का ज़िक्र करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे मलेशियाई सरकार का उद्देश्य भी समान था और सरकार ने "500,000 मलेशियाई रिंग्गिट का योगदान दिया और हमने भी उतनी ही राशी मिलाई।"
- उद्देश्य और निष्पादन की योजना तय कीजिये। "आपके साझेदार आपके साथ दोबारा भी जुड़ना पसंद करेंगे यदि आप अपने लक्ष्य पर निगाह रखेंगे और एक बढ़िया रूपरेखा के साथ कार्य करेंगे।"
- प्रवेश और निकास बिंदु को स्पष्ट कीजिये। कुछ भी हमेशा नहीं रहता। हर परियोजना को उसके स्वयं के दम पर संवहनीय बनाइये और सही समय पर प्रस्थान कर जाइये। "कोई भी स्थायी समझौता नहीं किया जा सकता क्योंकि सुपुर्द करने की कोई जल्दबाज़ी नहीं होती है।"
- अपने सदस्यों की रूचि को बनाए रखे। हालाँकि रोटरी श्रेष्ठ पाँच सेवा संगठनों में

PRID वाई पी दास के साथ डॉ ए टी कुमाराराजा और निपुण मेहता

शामिल है, फिर भी सदस्यों की रूचि बनाए रखने के लिए कोई माध्यम होना चाहिए, कोई ऐसा कारण जिससे वे संगठन से जुड़े रहे। ''विश्व शासन की इस नई व्यवस्था में, कोई भी व्यक्ति किसी विशेष क्लब के प्रति निष्ठा और प्रतिष्ठा की आशा नहीं कर सकता। इसके बजाय, सहस्त्राब्दी के लोग एक अवधारणा से मजबूती से जुड़े रहते है,'' कुमारराजा ने समापन करते हुए कहा।

डीजी प्रफुल्ल शर्मा, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता की उपस्ति में शिव खेड़ा का स्वागत करते हुए।

सेवा के लिए डिज़ाइन बनाना

''मेरी ज़िंदगी एक कोशिश है दुनिया में मुस्कुराहट और मेरे दिल में शांति लाने की। सच्चे मन से प्यार करना चाहता हूँ और निडरता के साथ दान करना चाहता हूँ। सेवा तब शुरू नहीं होती जब आपके पास देने के लिए कुछ होता है; यह स्वाभाविक रूप से तब खिलती है जब आपके पास लेने के लिए कुछ नहीं बचता।''

ऐसा निपुण मेहता ने कहा जो *servicespace.org*, एक निर्लाभ संगठन जो स्वयंसेवा और उदारता की संस्कृति को प्राकृतिक ढंग से प्रोत्साहित करता है, के संस्थापक है। उनकी बातें महात्मा गाँधी और मदर टेरेसा जैसे लोगों के दयालुता के कार्यों की कहानियों से प्रभावित थी।

'स्वार्थी बनिए; दयालु बनिए,' वह सिद्धांत है जिसे उन्होंने प्रसारित किया। ''आपकी देने की क्रिया, लेने वाले को लाभान्वित करने के साथ ही आपके ऑक्सीटोसिन और सेरोटोनिन के स्तर को बढ़ाती है जिससे आप अच्छा महसूस करते है। बिना लिए देना असंभव है।''

उन्होंने देने के कुछ बुनियादी परिज्ञान को सूचीबद्ध किया:

- सभी लोग किसी ना किसी चीज़ में बेहतर होते है।
- सभी लोग बड़ी मात्रा में दे सकते है।
- जैसे-जैसे देना सम्बद्ध होता जाता है, उपहार की एक पारिस्थितिकी उभरती है - यह एक-एक करके जोड़ती है और आप उदारता में विकसित होने लगते है।
- सभी लोग सभी चीज़ों से जुड़े होते है।
- अगर आप हर चीज़ का मूल्य देखने लग जाएँगे, तो आप 'अमूल्य चीज़ों' से जुड़ाव खो देंगे।

स्माइल कार्ड के बारे में बात करते हुए, उन्होंने प्रतिनिधियों से इसे आजमाने और इससे मिलने वाली खुशियों का अनुभव करने का आग्रह किया। ''यह एक खेल है जिसमें आप दूसरे व्यक्ति के भोजन को प्रायोजित करते है या किसी के लिए दयालुता का कोई भी गुमनाम कार्य करते है; पीछे एक स्माइल कार्ड छोड़ दीजिये ताकि वह उसे आगे बढ़ा सकें,'' उन्होंने समझाया।

जीत के लिए एकजुट

''आप सब को यहाँ देखकर, मुझे एक विचार आया है: मैं 40 साल पहले ही रोटरी से आधिकारिक तौर पर क्यूँ नहीं जुड़ा? मैं एक सम्मानित रोटेरियन रहा हूँ लेकिन वह वैसा नहीं था,'' जीत के तरीकों पर इंस्टिट्यूट को संबोधित करने से पूर्व शिव खेड़ा ने कहा। उन्होंने बताया कैसे उन्होंने उनकी बेटी, जो हाल ही में सिंगापुर में जाकर बसी है, को दोस्त बनाने के लिए रोटरी क्लब से जुड़ने की सलाह दी थी। उनके संबोधन के कुछ अंश:

अगर आप हतोत्साहित है, तो बाहर जाएं और किसी ऐसे इन्सान की मदद करें जिसे मदद की बहुत आवश्यकता है।

ऐसे लोगों के लिए कुछ करें जो बदले में आपको कुछ नहीं दे सकते और देखें कि कैसे आपका आत्म-सम्मान तेजी से बढ़ता है।

दूसरों के लिए अच्छा करने के बाद अच्छा महसूस करने पर आत्म-सम्मान प्राप्त होता है।

बिना विनम्रता के आत्मविश्वास घमंड को जन्म देता है।

जहाँ परिवर्तन स्थिर है, तीन चीज़ें स्थिर रहती है: लोगों का कौशल, अनुनय कौशल और प्राथमिकता कौशल।

वादा वह है जो आप दूसरों से करते है और प्रतिबद्धता वह है जो आप खुद से करते है।

उन्होंने समय की महत्ता पर एक सन्देश के साथ समापन किया। ''हम अक्सर कहते है 'समय उड़ता है।' अगर समय उड़ता है, तो यह एक हवाई जहाज है और आप इसके पायलट। यदि आप इसे नियंत्रित नहीं कर सकते, तो आप इसके यात्री बन जाते है।''

चित्र: रोटेरियन श्रीधर भारती

सतत नेतृत्व सुनिश्चित करें

रशीदा भगत

मैं GETS के कई कार्यक्रमों में गया हूं, लेकिन ऐसी शानदार पार्टी में कभी नहीं गया जैसी कल शाम को हुई थी। हम कभी भी ऐसी पार्टीयाँ आयोजित नहीं करते, लिहाजा आप बहुत खास हैं। और मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं रो ई निदेशक सी भास्कर का आभारी हूँ..... आगामी गवर्नर्स से बातचीत का कोई भी मौक़ा विशेष होता है,'' ये कहना था रो ई निदेशक जॉन मेथ्यूज़ का, कुआ लालम्पुर अंचल इंस्टिट्यूट में,GETS के सत्र को संबोधित करते हुए।

शुरूआत में उन्होंने आगामी गवर्नर्स को वर्तमान गवर्नर्स की जिम्मेदारियों को आगे बढ़ कर उठाने के लिए धन्यवाद किया। ''आप के उत्साह और प्रतिबद्धता के बगैर रोटरी की मशीन को आगे बढ़ने के लिए ऊर्जा नहीं मिलेगी।'' रो ई निदेशक ने विशेष रूप से, आगामी गवर्नर्स के साझेदारों को कृतज्ञता के साथ कहा, ''आप की सेवा बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप अपने सहयोगियों का समर्थन करने के साथ साथ उनका प्रोत्साहन भी करते हैं, और प्रोजेक्ट्स में उनके साथ कंधे से कन्धा मिला कर खड़े रहते हैं।''

उनका प्रशिक्षण सैन डिएगो के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में और भी बेहतर होने वाला था, ''जहां हम आपके साथ रोटरी की भावी रणनीति पर विचार करेंगे, जिसे हम नये प्रारूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहे हैं - पीपल ऑफ़ एक्शन - जहां आप स्थाई परिवर्तन की रचना करेंगे - विश्व में, समाज में और खुद में।''

मेथ्यूज़ ने कहा कि रोटरी में किसी भी स्तर पर नेतृत्व करने का सबसे अहम पहलू ये है कि सामाजिक कार्यों में व्यस्त रहते हुए, हमें पता ही नहीं चलता कि अगर किसी में सबसे ज्यादा परिवर्तन हुआ है तो वो आप स्वयँ हैं। हम दूसरों की सेवा और सहायता के लिए आते हैं, लेकिन यह तो इसके परोक्ष प्रभाव हैं ... वास्तव में होता यह है- अधिक उन्नत आप, ज़्यादा बेहतर आप।''

उन्होंने कहा कि अपनी भूमिकाओं के लिए प्रशिक्षण के दौरान धीरे-धीरे पता चलेगा, उन्हें लगने लगेगा कि अपने मंडल में परस्पर बातचीत के तरीके से हम, काफी कुछ बदल सकते हैं। ''आई ए प्रशिक्षण बहुत ही अदभुत होने जा रहा है, आईए में शामिल हो चुके सभी रोटेरियनों का मानना है उनके जीवन में यह अभी तक की सर्वश्रेष्ठ मीटिंग रही है। बाकी सभाओं की तुलना में अधिक ज़ोरदार, सार्थक, प्रभावशाली और अति महत्वपूर्ण थी !''

सैन डिएगो में वे अपने से बिलकुल पृथक योग्यता रखने वाले व्यक्तियों से मिलते हैं, ''और उन में से कुछ को देख कर लगता है मैं उन जैसा

बाएं से : रो ई निदेशक सी भास्कर, रो ई निदेशक जॉन सी मेथ्यूज़, मैरी एलेन मेथ्यूज़ और माला भास्कर।

बनना चाहता हूं। लेकिन यह सिर्फ एक छलावा है, क्योंकि आपको अपना अस्तित्व बनाये रखना है।'' निश्चय ही ये तजुर्बा उनके हुनर को परवान चढाने में मददगार हो सकता है, लेकिन अगर आप मौलिक बने रहे, तो मेरा विश्वास कीजिए, आप सही रास्ते पर हैं।

मेथ्यूज़ ने निर्वाचित मंडलाध्यक्षों को बताया कि कोई भी नेता, चाहे वो रोटरी में हो, व्यापार में हो या कहीं और, वे भी इस प्रयोग को कर सकते थे। ''अपनी आँखें बंद करें और अपने जीवनकाल में आए उस व्यक्ति के बारे में सोचें जो आपके लिए अतिविशिष्ट था, अतिप्रिय था ...वह जिस तरह से बात करता था, उसकी हाजिर जवाबी, कोई बुरी ख़बर मिलने पर उनकी प्रतिक्रया क्या होती थी, वो कभी भी चिल्लाया नहीं बल्कि जिस तरीके से इसे संभाला वो काबिले तारीफ था।''

इसी तरह, उनमें से प्रत्येक को इसके विपरीत भी करना चाहिए, और उन के बारे में सोचना चाहिए जो ''मेरा काम ले लेते थे पर ठीक से नहीं कर पाते थे, और कहने में भी कठिनाई होती थी, अप्रिय बात होती तो शोर मचाते थे, उन्होंने अपनी सहजता और विनोदप्रियता खो दी थी। वे बुरे लोग नहीं थे वे काम में संघर्ष कर रहे थे।''

दोनों को समझने के बाद; डीजीई को उन्हें संदर्भ के रूप में प्रयोग करना चाहिए, ''और यहां से जाने के बाद आप जब कभी भी आप किसी कठिन परिस्थिति में पड़ जाएं, तो रुकें और खुद से पूछें कि ऐसी स्थिति में इस व्यक्ति ने क्या किया होगा। इन दोनों के अनुभव आपको निर्णय लेने में सहायक होंगे कि क्या करना है और किससे बचना है।''

बहुमूल्य परख

मेथ्यूज़ ने डीजीई को बहुमूल्य परख के बारे में बताया जब उन्हें अमेरिकी नौसेना में लेफ्टिनेंट से लेफ्टिनेंट कमांडर के लिए पदोन्नत किया जा

हमें पता ही नहीं चलता कि अगर किसी में सबसे ज्यादा परिवर्तन हुआ है तो वो आप स्वयँ हैं। हम दूसरों की सेवा और सहायता के लिए आते हैं, लेकिन यह तो इसके परोक्ष प्रभाव हैं ... वास्तव में होता यह है– अधिक उन्नत आप, ज़्यादा बेहतर आप।

सदस्यता - गंभीर समस्या

जब आगामी गवर्नरों में से एक ने पूछा कि सदस्यता कम क्यों हो रही है या अमेरिका में स्थिर क्यों है, रो इ निदेशक जॉन मैथ्यूज ने कहा कि सदस्यता सम्बन्धित प्रश्नों को पुनर्निरीक्षण की आवश्यकता है। जब रोटेरियनों को टीआरएफ़ के लिए राशि देने को कहा जाता है,तो हमेशा कुछ अपेक्षाओं और लक्ष्यों को तय किया जाता है। ''लेकिन सदस्यता के सन्दर्भ में, रोटरी में कहीं भी कोई अपेक्षा नहीं है कि इसमें हम न केवल वृद्धि करें बल्कि उस बढ़त को बनाए भी रखें। PETS या GETS के दौरान अपनी बातचीत में लोगों के सामने हमें यह अपेक्षा रखनी ही होगी, साथ ही हमारे क्लब अध्यक्षों और मण्डलाध्यक्षों को बताना होगा कि वृद्धि नहीं करना या नए क्लब की घोषणा नहीं करना पूरी तरह अवाँछनीय है। पर ऐसा होता नहीं है।''

उन्होंने संदेह व्यक्त किया कि कई क्लब अध्यक्ष यह सोचते हैं ''सदस्यता तो कोई और बढ़ा लेगा। मैं यहाँ आराम से हूँ। हमें सुनिश्चित करना है की प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य का पालन करे। जब तक हम ईमानदारी से उसे आगे नहीं लाएंगे तब तक कुछ नहीं होगा।''

पिछले 23 वर्षों से रोटरी की वैश्विक सदस्यता 1.2 मिलियन थी, लेकिन विगत 10 वर्षों में क्लब का औसत आकार भी 42 से घट कर 34 रह गया है। ''यह अत्यन्त निराशाजनक है कि मौजूदा क्लब न तो नए क्लबों की घोषणा कर रहे हैं और न ही खुद का विस्तार। हमारे पास बहुत से ऐसे क्लब हैं जो इस धारणा के हैं कि मेरे पास 20 लोग हैं। मैं इन 20 को पसंद करता हूं, उनके साथ आराम से हूं और मैं आगे नहीं बढ़ना चाहता और ना ही सदस्य बढ़ाना चाहता हूं।''

यही मुख्य समस्या व्यापार की उस कहावत को चुनौती देती है, ''या तो आप प्रगति कर रहे हैं या फिर खत्म हो रहे हैंफ़ और इन क्लबों को यह भी एहसास नहीं है कि जब वे कहते हैं कि मैं 20 साल का हूँ, वे मर रहे हैं। क्योंकि अब से 20 साल बाद, वे नहीं रहेंगे। उनके क्लब के विकास का एकमात्र तरीका है,'' आगे बढ़ते रहना, मैथ्यूज ने कहा।

एक सवाल और था कि क्या डीजी की भूमिका संचालक की है या प्रशासनिक। मैथ्यू ने कहा ''यह सभी कुछ है, लेकिन यह आप पर निर्भर है आप इसे कैसे करते हैं। यदि आप किसी कंपनी के संगठन पर नज़र डालें, तो शीर्ष पर सीईओ है, उसके नीचे बोर्ड आता है और उसके बाद कर्मचारी, ग्राहक, इत्यादि।'' यह एक त्रिकोण है।

रोटरी क्लब में इसके विपरीत है। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है सदस्य। बोर्ड और अध्यक्ष सदस्यों का समर्थन करते हैं और नेता के रूप में डीजी की भूमिका सबसे नीचे है।

जिस एडमिरल ने मुझे पदोन्नत किया था, उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा और बोला: 'जॉन, मैंने अभी तक आप का मूल्यांकन आप द्वारा किये कार्यों से किया है। यहां से आगे, आपका मूल्यांकन इस पर निर्भर करेगा कि आप दूसरों से क्या निष्पादित करवा सकते हैं।

रो ई निदेशक जॉन मेथ्यूज़ के साथ बातचीत में पीडीजी आर राजाराम।

रहा था, जहां उन्होंने पूरे सम्मान के साथ 20 वर्ष बिताए। ''जिस एडमिरल ने मुझे पदोन्नत किया था, उसने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा और बोला: 'जॉन, मैंने अभी तक आप का मूल्यांकन आप द्वारा किये कार्यों से किया है। यहां से आगे, आपका मूल्यांकन इस पर निर्भर करेगा कि आप दूसरों से क्या निष्पादित करवा सकते हैं।' आने वाले डीजी भी उसी स्थिति में थे; उन्होंने बहुत सारे काम किये हैं; पर अब जब आप गवर्नर बनने जा रहे हैं, तो आपको अलग-अलग तरीकों से काम करने का मौका मिलेगा और दूसरों के माध्यम से, यह ज़रूरी नहीं है कि खुद क्या कर सकते हैं।''

मंडल अधिनायक के रूप में कुछ और चीजें करनी होंगी जैसे अपने क्लब लीडर्स को दिशा प्रदान करना, सदस्यता और टीआरएफ योगदान में वृद्धि करवाना और अपने निर्देशन में सामुदायिक परियोजनाओं को सुचारु रूप से संचालित करवाना। ये सब ठीक है। ''लेकिन एक गवर्नर और रोटरी लीडर के रूप में सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो आप करेंगे,वो है अपने पीछे खड़े लोगों का उत्थान। रोटरी में हमारा व्यवसाय मॉडल हमारे पीछे खड़े लोगों को विकसित करने पर आधारित है। अगर कभी हमने इसे रोक दिया तो पूरी मशीनरी रूक जाएगी। क्या किसी ने ऐसे क्लब के बारे में सुना है जिसने क्लब के अगले अध्यक्ष के लिए अखबार में विज्ञापन दिया हो? यह ख़्याल ही बेतुका है। हम उनका आन्तरिक विकास उसी तरह से करते हैं जैसे अपने नेताओं का।'' सफल व्यवसायों ने ऐसा ही किया।

मेथ्यूज़ ने कहा कि जब भास्कर ने उन्हें क्लबों से न्यूज़लेटर्स छापने का आग्रह किया था, ''तो आपको क्या लगता है, वे यह चाहते हैं कि आप सिर्फ कुछ जानकारी छापें या वो ये चाहते हैं कि न्यूज़लेटर के माध्यम से रोटरी के आकर्षण और इसकी आश्चर्यजनक चीजों को आप रोटरियन्स तक पहुँचाएं? आपको उन्हें कहानियां सुनानी पड़ेंगी। यदि आप सिर्फ न्यूज़लेटर छापते हैं तो आप मौका गवाँ देते हैं लेकिन अगर आप उस न्यूज़लेटर का उपयोग लोगों को रोटरी के जादू और आश्चर्य महसूस करवाने में करते हैं, तो आप अपने साथ साथ लोगों को भी तैयार कर रहे हैं।''

मिसाल के तौर पर, रो इ निदेशक ने कहा, अगर गवर्नर्स रोटरियन्स को सिर्फ यही बताएं कि चैरिटी नेविगेटर ने टीआरएफ़ को फोर स्टार रेटिंग दी है, तो उन्हें गर्व महसूस होगा। ''लेकिन क्या यह बेहतर नहीं होगा, आप उन्हें बताएं कि फाउंडेशन कितना उत्कृष्ट है, आप यह भी बताते हैं कि चार सितारा रेटिंग प्राप्त करने के लिए हमने क्या-क्या किया? आप दोनों में अंतर समझ रहे हैं ?''

मेथ्यूज़ ने कहा कि डीजीई के रूप में, जब वे उनकी टीम के सदस्यों में नेतृत्व का विकास करेंगे, ''वर्ष के अंत में आज की तुलना में आप अधिक चतुर और कुशाग्र होंगे।''

निरंतरता

दूसरा महत्वपूर्ण संदेश निरंतरता पर था। एक बात जिस में रोटरी इन वर्षों में संघर्षरत रही वो है सतत नेतृत्व। इसका प्रमाण हैं 112 एक - वर्षीय योजनाएं; ''ये आकर्षक हैं क्योंकि हर योजना अद्वितीय है और भिन्न है, लेकिन इनमें परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं है। पिछले कुछ वर्षों से एक सामरिक योजना विकसित हुई है ; पहली बार आपने देखा कि रवि (पीआरआईपी के आर रवींद्रन) ने कोई शुरूआत की जिसे जॉन जर्म ने जारी रखा और अध्यक्ष इयान राय्सली और रो इ अध्यक्ष निर्वाचित बैरी रसिन के माध्यम से उन्होंने उसी निरंतरता को आदर्श बनाया है। हमारे मंडलों में इसी आदर्श की जरूरत है।''

दुनिया के कई हिस्सों में आईपीडीजी, डीजी, डीजीई और डीजीएन के बीच निरंतरता क़ायम थी। ''और जब मंडल में सवाल आते है तो आप अकेले नहीं होते, आपकी टीम जवाब देती है। डीजीई और डीजीएन को यह अनुमति देने से वे भी सीखते हैं कि जवाब क्या हो सकता है।'' आप अपने पीछे लोगों को विकसित कर रहे हैं क्लब स्तर पर भी ऐसा करना आवश्यक है, इसी में जोड़ते हुए उन्होंने कहा, ''ऐसा करने से आप क्लबों और मंडल में बेहतर और प्रभावी दिशा निर्देश का सृजन कर सकेंगे।''

चित्र: रशीदा भगत

रोटरी ने मैमोग्राफी मोबाइल का निर्माण किया

किरण ज़ेहरा

सभी लोग प्रत्येक वस्तु को गुलाबी रंग से रंगने के लिए अक्टूबर माह का इंतजार करते है। ''लेकिन कैंसर इसकी परवाह नहीं करता है कि यह कौन-सा महीना है। हम केवल अक्टूबर में ही कैंसर पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकते हैं,'' यह कहना है मंडल 3030 के पूर्व गवर्नर किशोर केडिया और रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन के मैमोग्राफी वैन के परियोजना समन्वयक का। वैन का परिचालन पंजाब राव देशमुख मेडिकल कॉलेज द्वारा किया जाता हैं। महाराष्ट्र के ग्रामीण गांवों में स्तन कैंसर की जांच करने में असमर्थ महिलाएं अब अपने दरवाजे पर जांच करवा रही हैं।

इस अभियान का उद्घाटन पुणे के रायगढ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने 3 जनवरी को किया। अपनी शुरूआत के पहले महीने के भीतर, इसने 3,000 ग्रामीण महिलाओं की सफलतापूर्वक जांच की हैं। वैन, जिसे ब्रिटेन से आयात किया गया है, आत्मनिर्भर और नवीनतम डिजिटल मैमोग्राफी उपकरणों से लैस हैं। वैन आरामदायक प्रतीक्षा क्षेत्र और एक निजी ड्रेसिंग रूम से भी लैस है। ''प्राथमिक चिकित्सा और, विशेष मामलों में, छोटे सर्जरी और प्रसव वैन के अंदर भी कराए जा सकते हैं,'' वे आगे कहते है।

''रोकथाम और आरंभिक स्थिति में पता लगाना कैंसर के विरुद्ध एक महिलाओं के लिए सबसे अच्छा मौका है,'' डॉ. दिपाली कहती हैं, जिन्हें वैन के चिकित्सा प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया है, जो ''जांच के माध्यम से संभावित कैंसर के खतरों का पता लगाने और ग्रामीणों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य के साथ गांव से गांव की यात्रा करती है,'' वह आगे कहती है।

मेमोग्राम के लिए पंजीकरण कराने के लिए, महिलाओं को व्हाट्सएप और मौखिक प्रचार के माध्यम से सूचित किया जाता है। कुछ जगहों पर जहां कनेक्टिविटी कम है, वहां संदेश प्रसारित करने के लिए नर्सिंग होम या स्कूलों से संपर्क किया जाता है। यह वैन एक गांव में सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे के बीच में तैनात रहती है और लगभग 100 महिलाओं की जांच की जाती हैं। ''ज्यादातर महिलाएं परीक्षण के बारे में अनभिज्ञ हैं; उन्हें इसके बारे में बताया जाने के बाद, वे महसूस करती हैं कि यह एक रक्त परीक्षण नहीं है।'' कुछ महिलाएं आखिरी समय में पीछे हट जाती हैं क्योंकि वैन में अपने कपडे बदलने मेन शर्मिंदगी महसूस करती हैं, और दूसरे मैनुअल जांच के साथ वे सहज महसूस नहीं करती हैं, हालांकि जांच एक महिला चिकित्सक द्वारा किया जाता है।

भारत की पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल (उनके बाएं) पीडीजी किशोर केडिया और मंडल 3131 के पीडीजी दीपक शिखरपुर, वैन के उद्घाटन के बाद।

यदि परीक्षण परिणाम सकारात्मक पाया जाता है तो मरीजों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जाता है और उन्हें आगे के इलाज के लिए शिर्डी ट्रस्ट भेजा जाता है, जो कि क्लब से संबंधित है, और जहां उपचार तथा सर्जरी मुफ्त में की जाती है।

वर्ष 2013-14 में डीजी के रूप में, केडिया का लक्ष्य महिलाओं से संबंधित कार्यक्रमों को शुरू करना और पूरा करना था। इस वैन के लिए धनराशि रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन के रोटरियनों से प्राप्त हुई जिसमें उनका दस लाख का दान भी जुड़ा हुआ था। ''हम ग्रामीण महिलाओं तक सीधे मैमोग्राफी ला कर बहुत उत्साहित हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि उनकी परिस्थितियां कैसी है, चाहे वह पैसे की कमी हो या मेडिकल सेंटर तक पहुंचने के लिए उचित परिवहन की व्यवस्था, हम यह सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं कि हमारे क्षेत्र में सभी महिलाएं इस लाइफ-सेविंग स्क्रीनिंग तक पहुंचने में सक्षम हो,'' वह कहते है।■

PEOPLE OF ACTION

मेरा रोटरी एक रोटरी

जयश्री

मंडल 3131 के पीडीजी सुबोध जोशी कहते है, ''यह संबंध और आनंद की एक अद्भुत यात्रा थी। सीमाओं और जातियों से परे जीवन भर की दोस्ती हमारी अपूर्व उपलब्धि है।''

उन्होंने भारत के सभी 36 मंडलों में एक 30-सदस्यीय कार रैली का नेतृत्व किया जिसने 21 दिनों में 10,000 किलोमीटर की दूरी तय की। यात्रा को 10 दिसम्बर को पुणे में डीजी अभय गाडगील ने झंडी दिखाकर रवाना किया और प्रत्येक मंडल से होकर काफिले के गुजरने पर, टीम का जोरदार स्वागत किया गया। पीआरआईडी अशोक महाजन ने मुंबई में रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया, जबकि टीआरएफ के ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने दिल्ली में और चेन्नई में रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया, उन्हें पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने सम्मानित किया। 31 दिसंबर को यात्रा के समापन पर, पुणे में अपने गृह-मंडल में टीम का शानदार स्वागत हीरों के रूप में किया गया। वे मंडल सम्मेलन के प्रमुख आकर्षण थे।

संदेश

यह मूल रूप से एक सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने का कार्यक्रम था; ''हमने संदेश का प्रचार किया: *मेरा रोटरी एक रोटरी*; प्रत्येक मंडल में रोटेरियनों और सामान्य जनता द्वारा इस तरह गर्मजोशी से मेजबानी

पीआरआईडी पी टी प्रभाकर और उनकी पत्नी नलिनी और पीडीजी सी आर राजु चेन्नई की रेली का प्रारंभ करते हुए। डीजीई बाबु पेराम और डीजीएन जी चन्द्रमोहन (चरम बाएं), पीडीजी सुबोध जोशी और उनकी टीम के साथ चित्र में शामिल हैं।

करना वास्तव में हृदय को भावविभोर कर देने वाला अनुभव था। हम उन सभी स्थानों से प्रमुदित और आनंदित यादों को अपने दिल में संजोकर लाएं हैं, जिनका दौरा हमने किया था,'' जोशी कहते है।

छवि निर्माण के अलावा, टीम ने सडक़ सुरक्षा, रोटरी के साक्षरता कार्यक्रमों, स्वच्छता और पोलियो उन्मूलन के पहल के बारे में लोगों को जागरूक बनाया। ''जहां कहीं भी हम रुके, चाय-स्टालों या ढाबा के किनारे पर, हमने रोटरी का पोस्टर लगाया। जैसे-जैसे हम छोटे शहरों और गांवों से गुजरते गए, हमने साक्षरता के महत्व पर लोगों से बात की और शिशुओं को पोलियो की बूंद देना जारी रखने के लिए माताओं से आग्रह किया। हम ट्रकों के हेडलाइट पर स्टिकर चिपकाया और दुर्घटनाओं से बचने के लिए ड्राइविंग करते समय ड्राइवरों से सतर्क रहने का अनुरोध किया,'' उन्होंने कहा।

टीम

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण यह था कि प्रत्येक प्रतिभागी ने लागतों को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत रूप से 1 लाख रुपये का योगदान दिया। ''यह एक क्लब प्रायोजित परियोजना नहीं थी।''

रैली में शामिल लोग मंडल 3131 के विभिन्न क्लबों के थे, और इसमें एक रोटरियन की पत्नि (एन्न) और रोटरियन के तीन बच्चें (ऐनेट्स) शामिल थे। रोटरी क्लब पूना के कैलाश मोंगा के सुपुत्र राकेश मोंगा, विशेष रूप से रैली में भाग लेने के लिए इंग्लैंड से आए थे। रोटरी क्लब पुणे सेंट्रल के अजय चिटनीस की धर्मपत्नी दीप्ती जी ने कहा, ''ये 21 दिन अत्यंत मजेदार और सीखने का अनुभव प्रदान करने वाला रहा हैं'' जबकि स्मृति जोशी, जिन्हें ''कार चलाना बहुत पसंद हैं'' ने कहा कि उन्होंने हर पल भरपूर लुफ्त उठाया। वह पीडीजी सुबोध जोशी की बेटी हैं; उसने अनेक रैलियों में भाग लिया हैं।

जोशी, जो एक पर्वतारोही भी हैं, ने अक्षम लोगों के लिए चलने के अभियान के भाग के रूप में 2,000 रोटरियनों के हिमालय की अपनी यात्रा के दौरान नेतृत्व को याद करते हुए कहा, ''हम साहसिक-कार्यों को प्यार करने वाले परिवार हैं।''

आरएनटी के अतिथि

चेन्नई में, रोटरी न्यूज ट्रस्ट कार्यालय ने रैली के 16वें दिन, टीम का स्वागत किया। पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, पीडीजी सी आर राजू, डीजीई बाबू पेराम, डीजीएन जी चंद्रमोहन और मंडल 3232 के विभिन्न रोटरी क्लबों के रोटेरियन उनके स्वागत के लिए उपस्थित थे।

पीआरआईडी प्रभाकर ने पहल की सराहना की। ''हम यकीनन सबसे बडी सेवा संगठनों में से एक हैं फिर भी बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि हम क्या करते हैं। किसी आम आदमी को नाइके या मेर्क का लोगो दिखाएं, वह आसानी से पहचान लेगा लेकिन रोटरी के पहिया को दिखाएं, बहुत से लोग जवाब देने में असमर्थ होते है। उन्होंने टीम को किए गए कार्यों को रेखांकित करने के लिए रोटेरियनों के प्रयासों, और तथ्य कि'' उन्होंने रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढावा देने के लिए अपना निजी राशि खर्च किया की सराहना की।

जोशी जी ने वर्ष 2015-16 के अपने साथियों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने प्रत्येक मंडल में टीम के लिए आवास सुविधाओं की पहचान करने में उनकी म दद की। ''उदयपुर (मंडल 3053) में हमें 16-बेडरूम के महल में हमारे ठहरने की व्यवस्था की थी। बीकानेर में, पीडीजी अरुण गुप्ता ने 100 कारों के साथ हमारा स्वागत किया और यह एक मेगा रैली के रूप में सामने आया, क्योंकि हम रोटरी के झंडे को लहराते हुए संपूर्ण शहर का भ्रमण किया।'' जोधपुर में, पीडीजी अनिल बेनीवाल ने उनका शानदार स्वागत किया, जबकि पीडीजी सट्टिश जिंदल ने पानीपत में रात भर रहने के लिए अपने कॉलेज के छात्रावास उपलब्ध कराया।

जोशी अब शीर्ष 100 परियोजनाओं को प्रदर्शित करने वाली एक कॉफी-बुक प्रकाशित करने की योजना पर कार्य कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने देश भर में उन्हें और उनकी टीम को प्रभावित करने वाली परियोजनाओं को शामिल किया है। वह ''उन सभी क्लबों को इसे देने की योजना बना रहा है जिन्होंने हमारी मेजबानी की थी और उन्हें पुस्तकालयों को भी उपलब्ध कराएंगे ताकि लोग रोटरी के बारे में जान सकें।''

रैली में भाग होने वाले अधिकांश कार्यकर्त्ता पहली बार शामिल हुए थे। ''हम एक-दूसरे के इतने करीब आ चुके हैं। जम्मू से कन्याकुमारी तक सभी स्थानों पर हमारे दोस्त हैं,'' उत्साहित जोशी जी कहते है, और आगे जोड़ते हुए बताते है कि किस प्रकार से लखनऊ के रोटरियनों ने प्रदीप मुल्य (आरसी पुणे पाषाण) के कार की जल्दी से मरम्मत करने में मदद की, जो पठानकोट में एक ट्रक से दुर्घटनाग्रस्त हो गया थों उन्हें तीन दिन के भीतर विशाखापत्तनम में कार सौंप दिया गया। जब जोशी जी की कार गुंटूर में एक मामूली दुर्घटना का शिकार हो गई थी, तो वहां दो स्थानीय रोटरियनों ने ''एक मैकेनिक दुकान के लिए खोज की, हालांकि उस दिन क्रिसमस की छुट्टी थी और अधिकांश दुकानें बंद थीं; जब वे 11 बजे नेल्लोर में पहुंचे तो मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। यह रोटरी फेलोशिप की ताकत है और हम इसे सम्पूर्ण यात्रा में पूरी तरह से अनुभव करते रहे हैं।''

मंडल 3131 के डिसकोन में सफल समापन के बाद कार रेली की टीम।

प्रचार -प्रसार

विभिन्न प्रकार के रोटरी लॉगो से सुसज्जित आठ कारों के साथ रोटरी के काफिले ने हर जगह लोगों का ध्यान आकर्षित किया। ''लोगों ने रोटरी के बारे में पूछ-ताछ करने के लिए हमें यातायात जंक्शनों और टोल फाटकों पर रोकों टीवी चैनलों पर हमारा साक्षात्कार लिया गया और अखबारों में भी हमारे बारे में खबरें छपी थीं।'' इसके अलावा, मंडल की वेबसाइट पूरे दिन रैली टीम के बारे में सूचनाओं को अद्यतन करता रहा।

चित्र: वी. मुत्तुकुमारण

सबसे बड़ी मानव पैर की छवी

टीम रोटरी न्यूज़

बेरहमपुर, मंडल 3262 के रोटरी क्लब ने विश्व पोलियो दिवस (24 अक्टूबर) के उपलक्ष्य में एक मेगा सार्वजनिक जागरूकता अभियान का आयोजन किया, जिसमें शहर के स्कूलों और कॉलेजों के 1,700 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

सबसे बड़े मानव पैर की छवि का निर्माण करने के लिए छात्र ब्रह्मपुर स्टेडियम में एकत्र हुए। 132' x 53' आकार के छवि का निर्माण 34 मिनट और 13 सेकंड के भीतर किया गया, जो 60 मिनट की निर्धारित समय सीमा से बहुत ही कम था। ड्रोन और अनेक कमरों ने इस कार्यक्रम को अनेक कोणों से रिकॉर्ड किया कोण कैमरे ने घटना पर कब्जा कर लिया।

परियोजना के अध्यक्ष विजय बागरिया ने कहा कि इस कार्यक्रम में 1,729 छात्रों ने भाग लिया था, और यह 1,290 लोगों के पहले गिनीज़ रिकार्ड को पार कर सकता था। इंडिया बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स और एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिकारियों ने इस घटना की निगरानी की और नए रिकॉर्ड को प्रमाणित किया। उन्होंने आगे कहा, ''अभी तक गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स से हमें आधिकारिक प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं हुआ है।''

क्लब के अध्यक्ष तपस पाणिग्रही ने इस आयोजन की अध्यक्षता की; मंडल कलेक्टर प्रेमचंद चौधरी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। एमपी सिद्धेंद्र मोहपात्रो, एमएलए रमेश चंद्र चौपटनीक, उप-कलेक्टर सिद्धार्थ स्वेन, नगर आयुक्त निखिल पवन कल्याण, रोटरैक्टर्स और अन्य मंडल के अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।■

संस्थान के साथ जुड़ाव

टीम रोटरी न्यूज़

AKS सदस्य सुधी जब्बर को EMGA के पी नागेश, डीजी सुरेश मैथ्यू, पीडीजी रेगुनाथ, मंडल टीआरएफ चेयर के बाबुमोन और मंडल 3231 के डीजी जवारिलाल जैन ने सम्मानित किया।

मंडल 3211 का टीआरएफ सेमीनार - समर्पण - अल्लेप्पी में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य दानकर्ता और AKS सदस्यों को मिलाकर कुल 850 रोटेरियनों ने भाग लिया था। मंडल टीआरएफ अध्यक्ष के बाबुमोन द्वारा इसका नेतृत्व किया गया और केरल के वित्त मंत्री टी एम थॉमस द्वारा इसका उद्घाटन किया गया।

डीजी सुरेश मैथ्यू ने मंडल द्वारा समुदाय के कल्याण के लिए किये गए विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डाला। ''हम अस्पतालों को आधारिक संरचना और उपकरण प्रदान करके राज्य सरकार की 'आर्द्रम' पहल का समर्थन कर रहे है, और हाल ही में हमने एक अस्पताल के 4500 वर्ग फीट के महिला वार्ड के नवीनीकरण का कार्य पूर्ण किया है।'' टीआरएफ द्वारा स्वीकृत रु 1 करोड़ के अनुदान द्वारा मंडल 40 स्कूलों में शौचालय का निर्माण करेगा और रु 1.3 करोड़ की लागत से एक अन्य इकाई का डिजिटलीकरण करने के अलावा मंडल ने एक मैमोग्राफी इकाई की स्थापना करने के लिए रु 25 लाख जमा कर लिए है। पिछले पाँच सालों में रु 7 करोड़ की टीआरएफ निधि प्राप्त कर लेने के साथ, मंडल अनेक वैश्विक अनुदान परियोजना करने के लिए अग्रसक्रिय रहा है, उन्होंने आगे कहा।मैथ्यू ने पद्मती अस्पताल के अध्यक्ष, रोटेरियन डॉ सुमित्रण, के साथ हृदयतालम परियोजना के अंतर्गत जरुरतमंदों की मुफ्त में 100 हृदय सर्जरियाँ करने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है।

ईएमजीए के पी नागेश ने टीआरएफ के विभिन्न पहलुओं - निधि प्रवाह, खर्च करने योग्य कमाई और संस्थान को समर्थन करने के तरीकों - के बारे में विस्तारपूर्वक कहा। इस बात की ओर इशारा करते हुए कि सिर्फ 20 प्रतिशत रोटेरियन और 60 प्रतिशत क्लब ही टीआरएफ में योगदान दे रहे है, उन्होंने प्रतिनिधियों से उदारतापूर्वक दान करने की अपील की ताकि वर्ष 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर के लक्ष्य को हासिल किया जा सकें।

रोई दक्षिण एशिया कार्यालय की अंतर्राष्ट्रीय अनुदान संचयन प्रबंधक, शकुंतला राहा, ने नए फंडिंग मॉडलों की विशेषताओं, मंडल और वैश्विक अनुदानों के बारे में समझाया और यह भी कि कैसे क्लबों के अनुदान आवेदन का निरीक्षण एवं उसकी प्रक्रिया की जाती है। संवहनीयता सांकेतिक शब्द है। ''परियोजना को वर्षों के निधीकरण के बाद भी ज़ारी रहना चाहिए और साख और अंतर्राष्ट्रीय

समझ को बढ़ाना चाहिए,'' उन्होंने कहा।

जहाँ मंडल 3231 के डीजी जवारीलाल जैन, ने 'जॉय ऑफ़ गिविंग' के बारे में बात की, मंडल 3141 के पीडीजी उल्हास कोल्हाटकर ने 'फाउंडेशन ऑफ़ लाइफ' पर एक सूचनात्मक प्रस्तुति दी। डीआरएफसी के अध्यक्ष और AKS सदस्य जी ए जॉर्ज ने AKS सदस्य होने के विशेषाधिकारों और इसके द्वारा मिलने वाली ख़ुशी और मानसिक संतुष्टि की प्रशंसा की।

वित्त मंत्री ने ''परियोजनाओं की उस विशाल श्रृंखला'' के लिए रोटेरियनों की प्रशंसा की जिसने संपूर्ण राज्य में ''निश्चित रूप से अनेक सुविधाओं से वंचित परिवारों की जिंदगियों को नया अर्थ प्रदान किया है।'' उन्होंने मंडल की REAP (रोटरी एम्पावर्ड एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट) नामक एक पहल के तहत कीटनाशक मुक्त चावल के सिद्धांत को पेश किया। इस पहल के अंतर्गत मंडल ने, बिजुमोन कुरियन और सलाहकार पीडीजी के. पी. रामचंद्रन नायर की अध्यक्षता में, 136 एकड़ कृषिभूमि पर जैविक चावल बोने की योजना बनाई है।

43 मुख्य दानकर्ताओं और अन्य अक्षय निधि दानकर्ताओं के साथ ही, दो नए AKS सदस्यों - रोटरी क्लब कल्लाकुट्टम के सुधि जब्बार और अल्लेप्पी ईस्ट रोटरी क्लब के अध्यक्ष गंगाधर अय्यर- को सेमिनार में सम्मानित किया गया।■

पीडीजी उल्हास कोल्हटकर, AKS सदस्य गंगाधर अय्यर का स्वागत करते हुए।

रोटरी बाराबंकी ने मकर संक्रांति मनाया

टीम रोटरी न्यूज़

यह फसल काटने का समय है और रोटरी क्लब बाराबंकी, मंडल 3120 के रोटरियन, बराल में अपने दत्तक स्कूल विनोबा अवासीय बालिका विद्यालय के विद्यार्थियों के साथ मकर संक्राति मनाने के लिए एकत्रित हुए थे। रोटरी क्लब बाराबंकी के अध्यक्ष सुधीर वर्मा ने कहा, ''हम सभी को स्कूल में छात्राओ के साथ दिन बिताना अत्यंत प्रसन्नता के क्षण थे।''

क्लब के सदस्यों ने आंतरिक वास्ट, स्टॉल्स और फर्श मैट उपहार में दिया और छात्रों को स्कूल में दोपहर का भोजन भेंट किया। बारगांव में 400 वंचित लोगों के बीच ऊनी वस्त्र, शॉल, स्टॉल्स और कंबल वितरित किए गए।■

आई ए के रंग

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिनिधियों और भारतीय DGEs के जीवन साथी।

प्रतिनिधि सांस्कृतिक विनिमय और नेटवर्किंग कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

राजीव शर्मा

नीथा शेट्टी, पुनीता भाटिया और वीना वेंकटाचलपति एक भारतीय पारंपरिक नृत्य का प्रदर्शन करते हुए।

भारतीय DGEs एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान ड्रम पर अपना हाथ आज़माते हुए।

नंदिता गांगुली और वीना वेंकटाचलपति एक इतालवी प्रतिनिधि के साथ।

विनय भाटिया

DGE प्रियेश भंडारी और पत्नी एलोरा के साथ आरआईडी सी भास्कर, माला भास्कर और टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता।

बाएं से: *किरण सिंघल, सीमा जैन, रुक्षण अंकलेसारिया, अनिता हरि, नंदिता गांगुली, एस्थर और आरआईपीई बेरी रेसिन, बिन्दु सोगानी, माला भास्कर, बबिथा रोहिनाथ, पुनीता भाटिया और नीता शेट्टी।*

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में DGEs।

Vinay Bhatia

मोनिका लोजिंस्का द्वारा चित्र
एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रोटरी का यंग टर्क

रोटरी क्लब जयपुर मारुगंधा की अध्यक्ष रिमिका सिंघवी, रोटरी क्लब मैनचेस्टर ट्रेलब्लेज़र्स के सबसे युवा क्लब अध्यक्ष,मार्टिन जड का इंटरव्यू लेती है।

अप्रैल 2017 में 22 वर्ष की आयु पूर्ण कर लेने के साथ ही, मार्टिन विलियम जड को दुनिया का सबसे युवा सेवारत रोटरी अध्यक्ष और रोटरी के 113-वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय इतिहास में सबसे युवा व्यक्तियों में से एक माना जा रहा है। जड का जन्म न्यूज़ीलैण्ड के नार्थ आइलैंड के टोकोरोआ में हुआ था। वह एक घुड़दौड़ प्रशिक्षक के बेटे है। वर्ष 2012 में यहाँ स्थायी रूप से यहाँ बसने से पूर्व वह कैंब्रिज और यूके में बड़े हुए। फिर वर्ष 2014 में वह नवगठित रोटरी क्लब 'मैनचेस्टर ट्रेलब्लेज़र्स' से जुड़े और सालभर के अंदर ही अध्यक्ष मनोनीत चुन लिए गए।

जड वर्तमान में ओल्ढम में रहते है और अपना समय, मैनचेस्टर पिकेडिली की वैट्रोस शाखा में ग्राहक सेवा विभाग में काम करने में, एक मुक्त विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और गणितीय विज्ञान की डिग्री के लिए अध्ययन करने में, 'वर्ल्ड कल्चर फेस्टिवल' नामक अपनी पहली कंपनी को स्थापित करने में, स्थानीय चुनाव में प्रचार करने में और - बेशक - अपने क्लब की मदद करने एवं उसे आगे बढ़ाने में व्यतीत करते है!

अपनी हाल ही की लन्दन यात्रा के दौरान जब मैं मैनचेस्टर में थी तब मेरे और जड के मध्य हुई बातचीत के कुछ अंश नीचे दिए गए है। ऐसी बैठकों में उपस्थिति वैश्विक स्तर पर क्लब की गतिविधियों में अध्यक्ष की औपचारिक मौजूदगी का हिस्सा होती है और इन्हें विश्वव्यापी संयुक्त कार्यवाही के उद्देश्य हेतु रोटरी के लक्ष्यों को स्वीकार करने में महत्वपूर्ण समझा जाता है।

आपका रोटरी से जुड़ने का कारण?

दुनियाभर में रोटेरियनों द्वारा की गई शानदार परियोजनाओं के बारे में पढ़ने के बाद मैं रोटरी से जुड़ने के लिए प्रेरित हुआ था। मेरी स्वयं की भी गरीबी दूर करने में लोगों की मदद करने की अभिलाषा है और ऐसा करने के लिए मैं रोटरी को एक साधन के रूप में देखता हूँ।

इस वर्ष की रोटरी योजनाएं?

एक क्लब होने के नाते, हमने स्वयं के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किये है:

- अपनी सदस्यता में वृद्धि करना
- रोटरी फाउंडेशन के लिए 2,000 पाउंड एकत्रित करना

मुख्य सकारात्मक पहलू यह है कि जो आप कहना चाहते है लोग उसे सुनना चाहते है कुछ नए विचार तेजी से फैल सकते है और रोटरी गतिविधियों के तरीको को बदलने में मदद कर सकते है।

रिमिका सिंघवी, रोटरी क्लब जयपुर मारुगंधा की अध्यक्ष के साथ रोटरी क्लब मैनचेस्टर ट्रेलब्लेज़र्स के अध्यक्ष मार्टिन विलियम ज़ुड़ (दाएं से दूसरे) और क्लब के कुछ सदस्या।

- अन्य समूहों के लिए 2,000 पाउंड की कुल राशी एकत्रित करना
- तीन स्थानीय धर्मार्थ संस्थाओं और एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था की मदद करना

हम इसपर तेजी से प्रगति कर रहे है और निश्चित रूप से इसे हासिल कर लेंगे।

आपके क्लब की महत्वपूर्ण परियोजनाएं?

वर्तमान में, हमारी एकमात्र परियोजना 'WOW जल' है, जो घाना के चार गाँवों में पाइपलाइनों के निर्माण की एक जल परियोजना है ताकि उन्हें मुख्य जल आपूर्ति से जोड़ा जा सके।

फिलहाल हम स्थानीय स्कूलों के लिए एक साक्षरता परियोजना का विकास भी कर रहे है।

कोई अन्य प्राथमिक क्षेत्र?

मेरी अन्य प्राथमिकता रोट्रैक्ट क्लबों के विकास में मदद करने की है। इस समय, हमारे पास रोट्रैक्ट क्लब नहीं है लेकिन मैं जल्द ही एक का निर्माण करना पसंद करूंगा। यूके में रोट्रैक्ट बहुत ज्यादा कमज़ोर स्थिति में है और अधिक क्लबों के सृजन में मदद करने के लिए एक विशाल मुहिम की आवश्यकता है।

क्या हम साथ में कार्य कर सकते है?

मुझे यकीन है कि एक साथ कार्य करने के लिए हम कुछ कर सकते है, शायद आपके पास आपके क्षेत्र में रोट्रैक्ट हो और आप कुछ टिप्स साझा कर सके कि इसकी शुरुआत कैसे की जाए।

एक युवा अध्यक्ष होने के सकारात्मक और नकारात्मक पहलू?

मुख्य सकारात्मक पहलू यह है कि जो आप कहना चाहते है लोग उसे सुनना चाहते है जिसका मतलब होता है कि कुछ नए विचार तेजी से फैल सकते है और बेहतरी के लिए की जाने वाली रोटरी गतिविधियों के तरीको को बदलने में मदद कर सकते है। लोगों को सँभालना भी एक शानदार अनुभव है और मेरे कौशलों को निखारने का यह एक अच्छा तरीका है।

नकारात्मक पहलू यह है कि कुछ लोग उम्र की काबिलियत से तुलना करते है, और मानते है कि युवा लोग उच्च पद सँभालने के योग्य नहीं होते, लेकिन मैं इस वर्ष क्लब का सफलतापूर्वक नेतृत्व करके उन्हें गलत साबित करने के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ।

आज के युवाओं के लिए आपका संदेश?

बाहर निकलिए और कुछ नया करने की कोशिश कीजिये। अगर आपके पास बदलाव के लिए बड़े विचार है, तो उन्हें बताइए। उनके बारे में लोगों को बताइए और उसे वास्तविकता में बदलने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ कीजिये। कार्य करने वाला व्यक्ति बनिए; जो परिवर्तन आप देखना चाहते है उसका निर्माण कीजिए।■

साइकिल चलाते हुए सशक्तिकरण की राह पर

रशीदा भगत

दिसंबर की 19 को, पुणे से लगभग 20 कि मी दूर स्थित गालंदवाड़ी का ि+ज़ला परिषद (ज़ि प) स्कूल एक आनंदोत्सव स्थल के समान प्रतीत हो रहा था। इस स्कूल और अन्य पड़ोसी ज़ि.प. स्कूलों से, 108 लड़कियाँ, अपनी जैतूनी हरी और गुलाबी रंग की यूनिफार्म - स्कर्ट-ब्लाउज और सलवार सूट - को बड़े करीने से पहने हुए वहाँ एकत्रित हुई थी। उत्तेजना और उम्मीद से सुसज्जित होकर, वे सभी अपने शिक्षकों एवं माता-पिताओं के साथ आई थी।

अपनी प्रत्यक्ष भावनाओं एवं खुशियों के साथ लड़कियों ने अपने सशक्तिकरण के स्पष्ट प्रतीक - एक चमचमाती हुई गुलाबी रंग की नई साइकिल - को ग्रहण किया। ''एक वाहन जिसे वे अपना कह सकती थी, और जिस पर बैठकर वे बिना किसी परेशानी और कठिनाई के अपने स्कूल जा सकती थी। यातायात का एक साधन मिलने की ख़ुशी, आत्म विश्वास, कृतज्ञता... कई सारी भावनाएं उन लड़कियों के चेहरों पर देखी जा सकती थी जिन्हें साइकिल प्राप्त हुई थी,'' पुणे शिवाजीनगर के रोटरी क्लब की अध्यक्ष वृंदा वालिम्बे कहती है, जिन्होंने इस परियोजना का दायित्व लिया था।

यह सब क्लब के पूर्व अध्यक्ष नितिन अभ्यंकर के साथ शुरू हुआ जो उस क्षेत्र के लिए कुछ करना चाहते थे जहाँ उनके पूर्वज रहा करते थे। इसलिए क्लब ने इस क्षेत्र में वर्ष 2010 से ही कल्याणकारी गतिविधियाँ करना आरंभ कर दिया था। साइकिल परियोजना दो वर्ष पूर्व केवल 9 साइकिलों के साथ शुरू की गई थी और ''अब हम 500 की संख्या को पार कर चुके है,'' वृंदा मुस्कुराकर कहती है।

बेहतर उपस्थिति

वह कहती है जबसे यह कार्यक्रम शुरु हुआ है, शिक्षकों ने स्कूल में लड़कियों की उपस्थिति में एक महत्वपूर्ण वृद्धि देखी है। साइकिलों के रंग को चमकदार गुलाबी रखने को लेकर एक सतर्क निर्णय लिया गया था ''ताकि समुदाय के अन्य लोग और लड़कियों के परिवार के सदस्य इसे इस्तेमाल करने से बचे और इसे चोरी करने से डरें।'' समुदाय को यह ज्ञात है कि ये साइकिलें केवल लड़कियों द्वारा स्कूल जाने में इस्तेमाल

करने के लिए है, ना कि खेतों या गाँव में दैनिक कार्य करने के लिए।

क्लब ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं के सशक्तिकरण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहता था, ''जैसा कि हम जानते है कि भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेषतौर पर महाराष्ट्र में, सार्वजनिक परिवहन की सुविधा बहुत ही कम है या है ही नहीं। विद्यार्थियों को कई बार स्कूल पहुँचने के लिए लगभग पाँच कि.मी. से भी ज्यादा पैदल चलकर जाना पड़ता है।'' इसी वजह से लड़कियों का नियमित स्कूल जा पाना और भी अधिक मुश्किल हो जाता है। ''स्कूल जाने के लिए सुबह जल्दी निकलना और शाम को देर तक सुनसान क्षेत्रों से गुजरते हुए घंटो तक पैदल चलना जटिल और खतरनाक है, एवं बारिश और ठण्ड के मौसम में यह और भी ज्यादा कठिन होता है,'' वह आगे कहती है।

उन्होंने जाना कि कई बार एक क्षेत्र से केवल दो ही लड़कियाँ स्कूल जाती है और अगर किसी कारण से उनमें से एक लड़की स्कूल नहीं जा सकती, तो दूसरी लड़की को भी जबरदस्ती घर में ही बैठाकर रखते है, क्योंकि एक छोटी लड़की का इतनी दूर अकेले पैदल चलकर जाना सुरक्षित नहीं है। ''महीने के मुश्किल दिन शारीरिक रूप से थका देने वाला होते है और बाकि अन्य दिनों में सुरक्षा का खतरा होता है। ये सब कारण ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों द्वारा स्कूल छोड़ने में अपना योगदान दे रहे थे।''

स्कूल पहुँचने के लिए लगभग पाँच कि.मी. से भी ज्यादा पैदल चलकर सुबह जल्दी निकलना और शाम को देर तक सुनसान क्षेत्रों से गुजरते हुए पैदल चलना लड़कियों के लिए कठिन होता है।

बचाव के लिए जन-सहयोग

तो फिर तय किया गया कि साइकिल परियोजना शुरू की जाएगी, और इस विचार को तब प्राण मिल गए जब वंदना नायक को इस परियोजना के बारे में पता चला। यूएसए के नार्मन के रोटरी क्लब की सदस्य वंदना नायक को क्लब के एक सदस्य बहुत अच्छी तरह जानते है और उनके साथ हम पिछले कुछ सालों से कुछ वैश्विक अनुदान परियोजनाएं कर रहे है। जब वह छह महीने पहले, अपशिष्ट प्रबंधन प्रशिक्षण की एक अन्य वैश्विक अनुदान परियोजना के सिलसिले में पुणे आई थी, ''हम उन्हें इस स्कूल में लेकर आए, और वह बहुत प्रभावित हुई थी,'' वृंदा कहती है।

वह अनफॉरगॉटन फंड्स नामक NGO के साथ काम करती है, और उन्होंने जन-सहयोग द्वारा अधिक साइकिलें खरीदने के लिए धन एकत्रित करने का वादा किया था। उनकी वेबसाइट पर एक अभियान शुरू किया गया और 100 साइकिलें दान करने के लिए पर्याप्त धनराशी एकत्रित हो गई थी। क्लब ने कुछ और धन इकठ्ठा किया और क्षेत्र के विभिन्न ज़ि.प. स्कूलों की कुल 108 लड़कियों को चमचमाती गुलाबी रंग की साइकिलें उपहार में दी गई। आरंभ से ही क्लब के सदस्यों ने निश्चय कर लिया था कि लड़कियों को पुरानी या उपयोग की जा चुकी साइकिलें नहीं दी जाएगी क्योंकि नयी साइकिलें उन्हें स्वामित्व का बेहतर अनुभव कराएगी।

लड़कियों को चुनने का मानदंड उनके घर से उनके स्कूल की दूरी के साथ-साथ उनके परिवार की आर्थिक स्थिति थी। यह जानकारी शिक्षकों से प्राप्त की गई और, इस स्पष्ट विचार के साथ उन्हें साइकिल भेंट की गई कि अगर किसी भी कारण से कोई लड़की स्कूल छोड़ती है तो वह साइकिल किसी अन्य लड़की को दे दी जाएगी। साइकिल स्कूल की संपत्ति है।

क्लब के सदस्यों ने महसूस किया कि इस क्षेत्र में लड़कियों को साइकिल की बहुत आवश्यकता है और पुणे शिवाजीनगर का रोटरी क्लब पुणे के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों को कम से कम 1,000 साइकिलें देना चाहता है। प्रत्येक साइकिल रु 4,500 की आती है, ''जो 75 डॉलर से भी कम है।''

ख़ुशी, आत्म विश्वास, कृतज्ञता... कई सारी भावनाएं उन लड़कियों के चेहरों पर देखी जा सकती थी जिन्हें साइकिल प्राप्त हुई।

स्कूल की आधारिक संरचना

अभ्यंकर कहते है कि स्कूलों को आधारभूत सुविधाएं जैसे स्कूल की ईमारत, शौचालय, ई-शिक्षण किट्स, बेंचें, आदि प्रदान कर क्लब इन स्कूलों पर पिछले कुछ सालों से काम कर रहा है। पुणे शिवाजीनगर के रोटरी क्लब की अगली परियोजना ज़ि.प. स्कूलों को टेबलेट्स प्रदान करके उन्हें पेपर मुक्त बनाने की है। यह 34,000 डॉलर की एक वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से किया जाएगा जो स्वीकृत होने की प्रक्रिया में है। इसके अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को 80 टेबलेट्स देने की योजना है। आपूर्तिकर्ताओं ने शिक्षकों को इन टेबलेट्स का उपयोग करने में प्रशिक्षित करने का दायित्व उठाया है और फिर शिक्षक आगे बच्चों को प्रशिक्षण देंगे।

वृंदा और अभ्यंकर इस परियोजना की सफलता का अधिकांश श्रेय शिक्षकों को देते है ''जो बच्चों के कल्याण में इतनी रूचि रखते है'' और इतने सहयोगी एवं समर्पित है कि जो कार्य हमने किया है उसका वास्तव में कुछ असर पड़ा। उनकी प्रतिक्रिया यह थी कि रोज़ाना साइकिल चलाने से लड़कियों की फिटनेस और ऊर्जा स्तरों में बढ़ोत्तरी हुई है, और इस त्वरित आवागमन से जो उनका समय बचता है, उसे अब वे अपने नियत कार्य को पूर्ण करने और अच्छे नम्बर लाने में उपयोग करती है, वृंदा आगे कहती है।

संवहनीयता पर आते हुए, इसे सुनिश्चित करने के लिए क्लब के नेतृत्वकर्ता पिछले कुछ सालों से एकसाथ काम कर रहे है। ''मैं मेरे पूर्वाधिकारियों का कार्य ज़ारी रख रही हूँ और आने वाले दो अध्यक्ष भी ऐसा ही करेंगे। हम इन गाँवों में जितने हो सके उतने स्कूलों की सेवा करना चाहते है,'' वह आगे कहती है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

टीबी-मुक्त भारत संगोष्ठी का आयोजन नागपुर में किया गया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब नागपुर फोर्ट, मंडल 3030 द्वारा रोटरी इंडिया नेशनल टीबी नियंत्रण और जागरूकता समिति और क्षयरोग और फेफडों की बीमारी के विरुद्ध एक अंतरराष्ट्रीय मंच यूएनआईओएन के सहयोग से टीबी-मुक्त भारत पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

कमेटी अध्यक्ष और पीआरआईडी वाईपी दास इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि थे, और कार्यक्रम का उद्घाटन डीजी डॉ के एस राजन ने किया। यूएनआईओएन के तकनीकी सलाहकार शिव श्रेष्ठ ने टीबी के प्रसार को नियंत्रित करने के लिए उसके रोकथाम के उपायों पर दर्शकों के साथ एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया। अपने संबोधन में, दास ने संगोष्ठी के आयोजन में डीजी के प्रयासों की सराहना की, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि, यह जागरूकता उत्पन्न करेगा और समाज में बहुत आवश्यक व्यवहारिक परिवर्तन का सूत्रपात करेगा। टीबी के उन्मूलन में रोटरी की भागीदारी के तरीके और साधनों पर भी चर्चा हुई।

''संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र सरकार के स्वास्थ्य सेवा निदेशालय में रोटरियनों और टीबी के अधिकारियों को संवेदनशील बनाना था'' डीजी राजन ने कहा। रोटरी क्लब नागपुर फोर्ट के अध्यक्ष कैप्टन मिलिंद हस्तक ने स्वागत भाषण दिया, जबकि पीपी श्रीहरि चावा ने संगोष्ठी की एंकरिंग की। निर्वाचित अध्यक्ष डॉ प्रवीण डाहके ने धन्यवाद ज्ञापन किया।■

हम्पी के विस्मयकारी खंडहर

वी मुत्तुकुमारण

पत्थर के रथ, जिसे गरुड़ा मंडप के रूप में भी जाना जाता हैं का निर्माण कृष्णदेवराय के राज्य में, 1513 सी ई के कलिंग युद्ध में विजय के बाद किया गया।

कितनी ही किताबे पढ़ लेने, इंटरनेट पर ब्राउज़िंग करने या सोशल मीडिया पर खोज करने से आप हम्पी, शक्तिशाली विजयनगर साम्राज्य की राजधानी, के सांस्कृतिक महत्व को ठीक से नहीं जान पाएँगे। यह अब भव्य खंडहरों, हजारों विशाल शिलाखंडों, गुफाओं और विरासती संरचनाओं वाला एक गाँव है जो अब भ्रमण करने वालो को यहाँ पर कभी एक आलीशान साम्राज्य के होने का संकेत देकर विस्मित कर देता है।

कर्नाटक के पूर्व-मध्य में स्थित, विजय का शहर (संस्कृत में 'विजयनगर') होसपेट से 12 कि.मी. की दूरी पर है और तुंगभद्रा नदी के किनारे फैला हुआ था। विजयनगर राजवंश, जिन्होंने हम्पी जैसे समृद्ध केंद्र को अपनी राजधानी बनाने का चुनाव किया था, के स्थापित होने से पूर्व भी हम्पी एक चहलपहल वाला तीर्थ स्थल था। विरूपाक्ष मंदिर, जो मुख्य रूप से भगवान शिव को समर्पित है, का निर्माण बादामी के चालुक्यों के राजा पुल्केसी-खख द्वारा सातवीं शताब्दी में करवाया गया था और इसके उपरान्त आए साम्राज्यों द्वारा इसका प्रसार किया गया। 52 मीटर ऊँचे गोपुरम के साथ, यह शिव मंदिर दूर-दराज के हजारों श्रृद्धालुओं को आकर्षित करता है, खासतौर से मुख्य गर्भ-गृह में दिन में तीन बार की जाने वाली पूजा और अभिषेक का साक्षी होने के लिए। भक्तों के मध्य इसे दक्षिणी काशी के नाम से भी जाना जाता है।

यहाँ पर पहली बार आने वालों को मुख्य गर्भ-गृह तक ले जाने वाले अलंकृत मंडपम की छत पर बने रंगीन भित्ति-चित्रों को देखना चाहिए जो *रामायण* के प्रसंगों को प्रदर्शित करते है। ज़मीन पर बैठकर शिवलिंग की ओर मुँह करके मन्त्रों का जाप कर रहे लोगों की भीड़, जिनमें अधिकतर महिलाएं थी, को देखकर हम चकित हुए। ''यह राहू काल पूजा है और यह शिव को प्रसन्न करने का उत्तम समय है,'' हमारे गाइड रवि कुमार ने चुटकी ली, जो हमें हम्पी के खंडहरों का निरीक्षण करवाते हुए उसके अनमोल परिज्ञान से परिचित करवाता जा रहा था।

गाँवों के समूह

इस स्थल पर, मंदिर के चारों ओर मानव बस्तियों के समूह का होना आम बात है और यह आज भी प्रचलन में है। इसलिए, गोपुरम के सामने दोनों तरफ विरूपाक्ष बाज़ार है जिसमें आसपास के इलाके के लोग अपने सामान और थिन्गामियों को बेचने के लिए खुदरा दुकानों का इस्तेमाल करते है। सटीक तौर पर, शिव मंदिर के सामने का बाज़ार 740 मीटर लम्बा और 45 मीटर चौड़ा है जो उत्सव मंडप तक फैला हुआ है और इसके बाद नंदी मंडप आता है जिसमें 16 वीं शताब्दी में एक ही पत्थर से तराशे गए 3 मीटर ऊँचे अपूर्ण नंदी है।

हम्पी, जिसे तब विजयनगर के नाम से जाना जाता था, वैटिकन के बाद दुनिया का सबसे समृद्ध शहर था। इसके भव्य अतीत के मुकाबले, आधुनिक हम्पी मात्र 25 वर्ग कि मी में फैला है।

इसी तरह, हमने कृष्ण बाज़ार (500 मीटर लम्बा); अचुत बाज़ार (360 मीटर); विठ्ठल बाज़ार (945 मीटर); और हज़ारारामपुरा बाज़ार देखा जो अपने संबंधित मंदिरों के सामने स्थित थे। लेकिन अब इन मंदिरों के बस खंडहर ही शेष है जो कभी अपनी मजबूत संरचनाओं द्वारा विदेशी व्यापारियों से व्यापार की सुविधा प्रदान करते थे। फारस, पुर्तगाल और अन्य यूरोपीय देशों के व्यापारी विजयनगर के बाज़ारों से सोना और बहुमूल्य रत्नों को खरीदने के लिए एक-दूसरे से होड़ करते थे, हमारा गाइड कहता है।

जहाँ विजयनगर साम्राज्य (1336-1565 ईसवीं) ने एक श्रेष्ठ और विशाल साम्राज्य की तरह चार राजवंशों के माध्यम से 229 वर्षों तक राज किया, वहीं इसका स्वर्णिम काल राजा कृष्णदेवराय (1509-29) के राज के दौरान था जो बहुत ही प्रसिद्ध राजा थे और प्रजा को वह करिश्माई रूप से पसंद थे। उनके शासन-काल में, साम्राज्य पूर्व में कलिंग से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला था जिसमें सागर द्वारा साम्राज्य के दोनों तरफ प्राकृतिक सीमा बनाता हुआ पूरा प्रायद्वीपीय भारत और साथ ही दक्षिण का पठार भी शामिल था।

हम्पी, जिसे तब विजयनगर के नाम से जाना जाता था, वैटिकन (15वीं शताब्दी) के बाद दुनिया का सबसे समृद्ध शहर था और इतिहासकारों के

अनुसार, 5 लाख की जनसंख्या के साथ 650 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ यह शहर 1500 ईसवीं में बीजिंग के बाद दूसरा सबसे बड़ा शहर था।

इसके भव्य अतीत के मुकाबले, आधुनिक हम्पी मात्र 25 वर्ग कि.मी. (शायद इससे भी कम) में फैला है जिसमें अत्यंत ऊँचे शिलाखंड, टीले एवं अवास्तविक खंडहर शामिल है। यहाँ पर अनोखी जगहों का एक संग्रह है जिसे इस विरासती गाँव में आने वालों को जरुर देखना चाहिए।

- कडालेकालू गणेश मन्दिर: 4.5 मीटर ऊँची गणेश भगवान की प्रतिमा जिसे एक ही पत्थर से तराशा गया है, एक पूर्ण चने जैसे दिखने के कारण इस नाम से जाना जाता है। भगवान अपने चार हाथों में से प्रत्येक में एक गजदंत, एक अंकुश, एक कमंद और मिठाई से भरा एक कटोरा धारण किये हुए है। इसका निर्माण 15वीं शताब्दी में किया गया था।
- सासीवेकालू गणेश: 2.4 मीटर ऊँची भगवान की इस प्रतिमा को 1506 ईसवीं में तराशा गया था जो सरसों के बीज के समान प्रतीत होती है। इसे पहले सिद्धि विनायक कहते थे और अब इन्हें एक खुले मंडप में प्रतिष्ठापित किया गया है।
- हेमाकुट मंदिर समूह: 33 मंदिरों और मंडपों की एक श्रृंखला जिनका निर्माण रुक-रुक कर 9वीं और 14वीं शताब्दी के मध्य किया गया था, इसका मतलब कि यह विजयनगर साम्राज्य से भी पुराने है।
- बालकृष्ण मंदिर: इसे 1513 ईसवीं में राजा कृष्णदेवराय द्वारा पूर्व वर्ष में कलिंग युद्ध जीतने के बाद बनवाया गया था। भगवान कृष्ण की यह विकृत प्रतिमा अब चेन्नई के एग्मोर पुरातत्व संग्रहालय में है।
- लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर: विजयनगर की मूर्तिकला का एक बेहतरीन नमूना, 6.7 मीटर ऊँची भगवान की यह प्रतिमा आदिशेष, भगवान विष्णु का संरक्षक नाग, की भीमकाय कुंडलियों पर विराजमान है। नाग के सात फण छतर का कार्य करते है जिनके ऊपर तोरण में शेर का मुख है। भगवान विष्णु की चार भुजाएँ और उनकी गोद में विराजमान माता लक्ष्मी की मूर्ती गायब है, जिसे अधिकतर सल्तनत के आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

  1528 ईसवीं में कृष्णदेवराय के निर्देश पर प्रधान पुजारी कृष्णभट्ट द्वारा इस विशाल प्रतिमा को प्रतिष्ठापित किया गया था।
- बदावीलिंग मंदिर: 3 मीटर ऊँचे इस शिवलिंग को एक ही पत्थर से तराशा गया था और दन्तकथाओं के अनुसार इसे एक गरीब महिला (कन्नड़ में बद्री) द्वारा बनाया गया था।

जाने का उचित समय
शीतऋतु: नवम्बर से जनवरी

कैसे पहुंचे
होसपेट रेलवे स्टेशन पर उतरे और एक कैब कर लें। होसपेट से हम्पी 12 कि.मी. की दूरी पर है।

पम्पा देवी की पहाड़ी घाटी

कुछ चट्टानी पहाड़ियां - हेमाकुट, मथंगा, गंध माधव, रुशिमुखा, अन्जनाध्री, मल्यावंथ और जम्बुनाथ - ऊँचाई से घाटी का एक विहंगम दृश्य प्रदान करती है जो सैलानियों और पर्यटकों को लुभाता है। कृता युग में हम्पी एक पम्पा क्षेत्र (पवित्र स्थल) था; त्रेता युग (*रामायण* के दौरान) में किष्किन्धा; द्वापर युग (महाभारत) में भास्कर क्षेत्र; और कलयुग के दौरान विजयनगर था। इस स्थल का नाम 'हम्पी' अंग्रेजी राज के आगमन के बाद पड़ा। देवी पार्वती, जिन्हें पम्पा के नाम से भी जाना जाता है, ने हेमाकुट पहाड़ी पर तुंगभद्रा नदी के किनारे भगवान शिव का विश्वास जीतने के लिए तपस्या की थी, और समय के साथ, कन्नड़ के प्रभाव से 'पम्पा' शब्द

भक्त वीरूपक्ष मंदिर में मंत्र पढ़ते हुए।

का उच्चारण परिवर्तित होकर 'हम्पी' हो गया, रवि कुमार समझाते है।

इन धरोहर रुपी संरचनाओं को नजदीक से देखने के बाद, गाइड ने हमें याद दिलाया कि सबसे बेहतरीन नज़ारा अभी आना बाकि है, जिसके लिए हमें कैब से यात्रा करनी थी। तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी छोर पर स्थित रॉयल सिटी में आपका स्वागत है। अत्यंत जटिल घेरावों की एक पहेली जिसमें शाही निवास (राजा, रानी, गोपनीय दल का), कुलीन जनों के निवास (17 आवास), सेना प्रमुख का प्रांगण (दंडनायक का प्रांगण); और महानवमी दिब्बा (एक विशाल पिरामिडनुमा मंच) शामिल है, हमें इस रॉयल सिटी को तैयार करने में लगी पेचीदा बारीकियों एवं सटीकता पर आश्चर्य करने पर मजबूर करता है।

कुछ विरासती आश्चर्यों की झलक:

- अंतःपुर प्रांगण जिसे *ज़नाना* (महिला) निवास भी कहा जाता है, में दो मंजिला लकड़ी का महल है और लोटस महल में एक ग्रीष्मकालीन आश्रयस्थल है। लोटस महल तक पहुँचने के लिए हमें वीर हरिहर और कृष्णदेवराय (रंग महल) के महलों से गुजरना पड़ा। इस विशाल महल में स्तंभ, मेहराब इस्लामी शैली के है, जबकि मीनार और शिखर जैन वास्तुकला में निर्मित है।

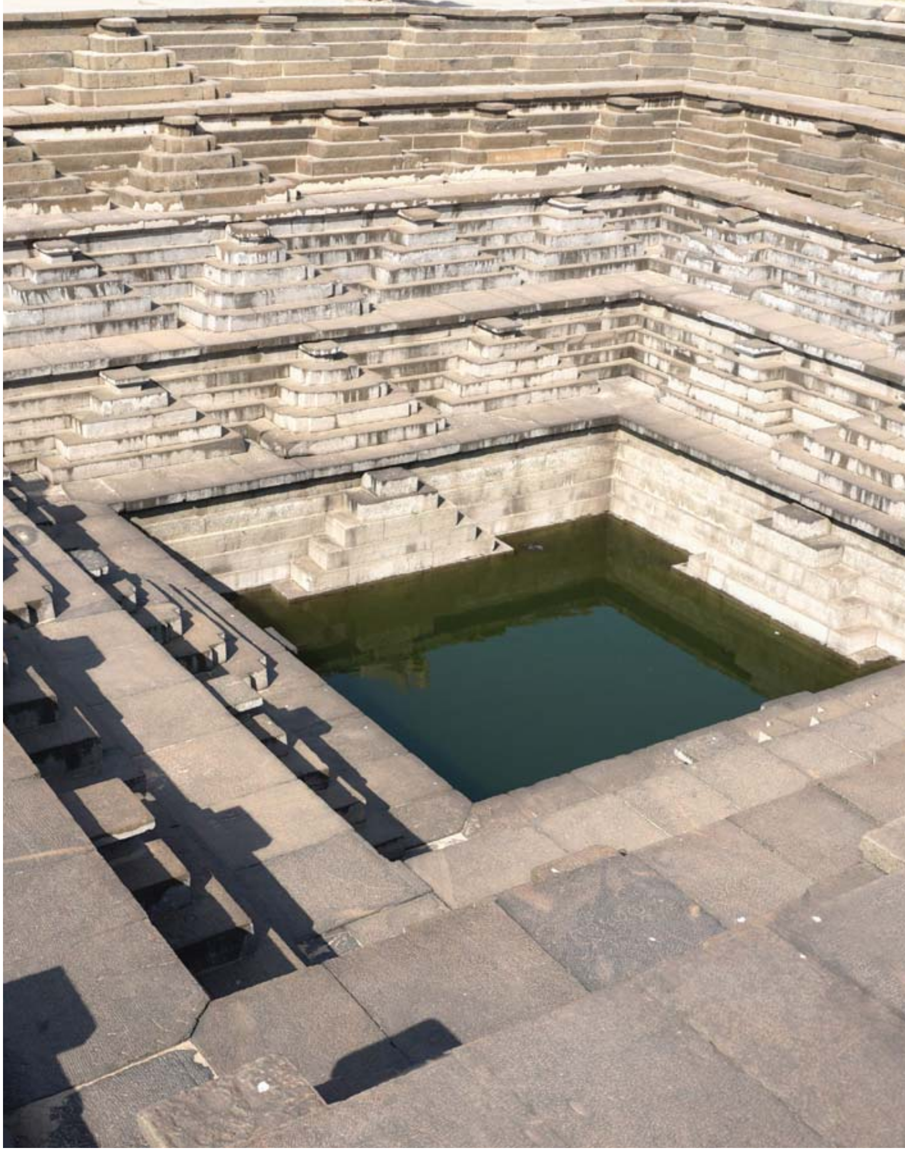

एक प्राकृतिक पुष्कर्णी।

हाथियों का तबेला, एक गुम्बददार और आयताकार संरचना और ईश्वर का निवास राजसी ठाठबाट की भव्य शैली के संकेतक है।

- शाही प्रांगण साम्राज्य का विस्तृत प्रशासनिक कार्यालय है जिसमें लकड़ी के 100 स्तंभों द्वारा खड़ा किया गया विशाल दरबार हॉल शामिल है। 43 इमारतों के साथ 59,000 वर्ग मीटर में फैला यह भवन-समूह राजधानी का केंद्र है और ऊँची दोहरी दीवारों द्वारा संरक्षित है।

1976 से 1986 तक पुरातत्व सर्वेक्षण ने अपने अग्रणी कार्य से इस भवन समूह में दफ़न अनेक इमारतों की खुदाई की थी। गुप्त बैठकों के लिए भूमिगत कक्ष, मुख्य *पुष्कर्णी* (पवित्र तालाब) को मिलाकर 23 जलाशय, सभी को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण दल द्वारा 1980 के दशक के प्रारंभ में खुदाई करके खोज निकाला गया था।

- गुरुत्वाकर्षण के सरल बल के द्वारा रॉयल सिटी को जल की आपूर्ति कराने वाले पत्थर के कृत्रिम जलमार्ग का अनुसरण करते हुए 1986 में खूबसूरत *पुष्कर्णी* की खोज की गई थी। बेसॉल्ट पत्थर की बनी इस बावड़ी को पिरामिड के समान डिज़ाइन किया गया है।
- एक सार्वजनिक स्नान कुंड (5-मीटर गहरा, 77-मीटर लम्बा और 27-मीटर चौड़ा) इतना वृहद है कि इसमें आराम से ओलिंपिक के दो पूल समा सकते है और साम्राज्य के शासनकाल के दौरान यह आम आदमियों द्वारा संरक्षित था।
- शाही प्रांगण के उत्तरपूर्व में स्थित महानवमी दिब्बा 35 वर्ग मीटर में बना एक सीढ़ीदार चबूतरा है जिसे राजपरिवार द्वारा सांस्कृतिक जुलूस और धार्मिक उत्सवों, जैसे दशहरा, को देखने के लिए उपयोग किया जाता था। चबूतरे के हर स्तर पर विजयनगर शैली में गढ़ी गई

लोटस महल में छिपी नलिकाएं कमरे के तापमान को ठंडा रखती हैं।

सजावट है। पत्थर का यह त्रि-स्तरीय पिरामिड 8 मीटर की ऊँचाई तक उठा हुआ है।

- रानी का स्नान गृह भारतीय-इस्लामी शैली में बना हुआ जिसमें 1515 वर्ग मीटर के जल क्षेत्र में 8 फीट गहरा कुंड है जहाँ पर रानी और उनकी दासियाँ मौज-मस्ती करती थी।

विट्ठल मंदिर

यह मंदिर विजयनगर शैली की कला और वास्तुकला को प्रदर्शित करने वाला है। इसे देवराय खख (1422-1446 ईसवीं) द्वारा बनवाया गया था और बाद में, कृष्णदेवराय के शासनकाल में इसमें प्रमुख अंश जोड़े गए। इसमें पाँच प्रमुख मंडप है, जिनमें 56 संगीत स्तंभों वाला नाट्य मंडप और *गरुड़ा* मंडप, मानव रुपी गरुड़ के साथ पत्थर का रथ, पर्यटकों को आकर्षित करते है।

मुख्य ईमारत में पाँच कक्ष है जो गर्भगृह तक ले जाते है जिसमें दो भगवानों - भगवान विट्ठल और रुक्मणी देवी - के खाली मूर्तीतल है।

अच्छी तरह से रचा गया षड्यंत्र

समायोजित तरीके से, बहमनी के पाँच सुल्तानों ने तालीकोटा के युद्ध (1565 सी ई) में विजयनगर पर आक्रमण किया जिसमें आलिया रामराय, एक मंत्री जो राजा सदाशिव (1542-70) की ओर से शासन कर रहा था, मारा गया। अपनी हार को सामने देख राजा ने शाही ख़जाने, 550 हाथी, 1,000 घोड़े एवं अन्य बहुमूल्य संपत्ति के साथ हम्पी खाली कर दिया।

सदाशिव ने भागकर अनंतपुर के पेनागोंडा में शरण ली जहाँ पर अरावीडू वंश, विजयनगर की वंशावली का चौथा एवं आखरी वंश, का प्रारंभ हुआ था। ''लेकिन सल्तनत के आक्रमणकारियों ने छह माह तक राजधानी को लूटा, और आग लगा दी, जिसके बाद इसे त्याग दिया गया और यह शहर एक सुनसान शहर में बदल गया जहाँ कोई इंसान नहीं रहता था,'' होसपेट के रोटरी क्लब के अध्यक्ष-निर्वाचित, रोटेरियन मुनि वासुदेव रेड्डी कहते है।

वर्तमान में हम्पी

1986 में इस गाँव को यूनेस्को विरासत स्थल का दर्जा मिलने के बाद ही इसे विदेशी पर्यटकों के मध्य पहचान मिली। ''राज्य सरकार को जोर-शोर से इसका प्रचार करना चाहिए क्योंकि स्थानीय लोगों के लिए पर्यटन ही कमाई का एकमात्र स्रोत है,'' रवि कुमार कहते है। घटती आबादी (10,000 से भी कम) और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सख्त नियमों के कारण, यहाँ के युवाओं के पास कमाई के केवल दो विकल्प बचते है - या तो पर्यटक गाइड बन जायें या ऑटो चलाए, लेकिन वे नियमित कमाई को लेकर सुनिश्चित नहीं रहते क्योंकि पर्यटकों का आगमन समयानुकूल होता है।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

पीडीजी रामकृष्णन, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, डीजी आर श्रीनिवासन, अपोलो हॉस्पिटल के संस्थापक अध्यक्ष डॉ पी सी रेड्डी विजेता को सम्मानित करते हुए। चित्र में (दाएं से) पीडीजी नटराजन नागोजी, डीजीएन जी चंद्रमोहन पीडीजी पी टी रामकुमार और डीजीई बाबू पेराम (चरम बाएं) शामिल हैं।

दौड़ में रोटरी

जयश्री

रोटरी क्लब ऑफ मद्रास, मंडल 3232, ने हाल ही में मद्रास रेस क्लब (एमआरसी). में रोटरी इंटरनेशनल कप की मेजबानी की। एमआरसी के अध्यक्ष पीडीजी आर रामकृष्णन ने कहा, ''यह हमारे सदस्यों को समाज के लिए श्रेष्ठ कार्य करने - स्वास्थ्य और साक्षरता के जरिए लोगों के जीवन को बेहतर बनाने से लेकर पोलियो को खत्म करने - के लिए धन्यवाद देने का हमारा तरीका था,'' और आगे जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि अनेक लोगों के लिए यह पहली यात्रा थी और वे विशाल मैदानों और परिष्कृत माहौल को देखकर आश्चर्यचकित थे।

वर्ष 1980-84 के बाद दूसरे कार्यकाल में, रामकृष्णन एमआरसी की अध्यक्षता कर रहे हैं। ''वे दौड़ के एक उत्साही अनुयायी है'' और वर्ष 1972 से प्रबंधक रहे है। वह उसी वर्ष रोटरी क्लब मद्रास के सदस्य बने और वर्ष 1992-93 में अविभाजित मंडल 323 के गवर्नर के रूप में सेवा की।

कार्यक्रम का निर्माण रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने के लिए किया गया था। ''हम पहले के वर्षों में कप को प्रायोजित करते थे। मुझे खुशी है कि इसे पुनर्जीवित किया गया है,'' एमडीआर की प्रबंधन समिति के एक सदस्य पीडीजी पी टी रामकुमार ने कहा। उन्होंने अपने पिता, रामकृष्णन और अपोलो के अध्यक्ष डॉ पी सी रेड्डी द्वारा साझा किए गए उत्साह और गर्मजोशी को याद किया। उन्होंने कहा, ''मैं उन दिनों बैंगलोर में दौड़ के लिए उनका ट्रेन टिकट बुक करता था।''

अपोलो हॉस्पिटल के संस्थापक अध्यक्ष डॉ रेड्डी भी एमआरसी समिति के सदस्य हैं और दौड़ में नियमित रूप से भाग लेते हैं। भारत की स्वास्थ्य स्थिति पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्होंने कहा कि वह आज के युवाओं के हृदय की समस्याओं को लेकर चिंतित हैं। ''अमेरिकन हृदय का जीवनकाल 60-70 वर्ष है, लेकिन भारत में हृदय रोगियों की औसत आयु 25-35 है, जो बहुत ही खतरनाक है,'' उन्होंने कहा कि हृदय रोगों के कारण भारत में प्रतिदिन 600 लोगों की मौत होती है। लोगों की मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। ''वे एक परीक्षण से गुजरने के अनिच्छुक हैं, केवल इसलिए कि वे इस बात से डरते हैं कि डॉक्टर कुछ पता लगा सकता हैं। लोग समझ नहीं पाते हैं कि यह हमारी मदद के लिए हैं, और जितनी जल्दी निदान होगा, उतना बेहतर होगा।''

रेड्डी संपूर्ण देश में हृदय स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन करने के लिए टीसीएस और कॉग्निजेंट जैसे कंपनियों के प्रयासों की सराहना करते हैं। पीआरआईडी पी टी प्रभाकर, जो इस कार्यक्रम में उपस्थित थे,ने रोटरी के समर्थन की पेशकश की और पुछा कि रोटरी कहां और कैसे मदद कर सकता है। उन्होंने पोलियो के उन्मूलन में रोटरी की सफलता को रेखांकित किया। डॉ रेड्डी ने कहा, ''मुझे आपके द्वारा किए जा रहे महान कार्य के बारे में पता है और मुझे आपके साथ काम करके बहुत खुशी होगी।''■

एक सरकारी कन्या स्कूल को
रोटरी का उपहार

वी मुत्तुकुमारण

मोगप्पेयर में सरकारी गर्ल्स स्कूल में शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षकों आर सेल्वी और डी रमेश बाबू के साथ छात्रीयाँ।

मोगाप्पेयर ईस्ट स्थित शासकीय कन्या उच्च विद्यालय, जिसे रोटरी क्लब चेन्नई मिड सिटी, मंडल 3232, द्वारा गोद लिया गया है, को अब एक बढ़िया नया 200-मीटर एथलेटिक ट्रैक दिया गया है। किसी समय बुरी हालत में डूबे स्कूल के परिसर में अब सफाई से तैयार किया गया एक खेल का मैदान, चार शौचालय खण्ड, एक फीडर स्कूल, मध्याह्न भोजन के लिए एक नया रसोईघर, भीतर खेले जाने वाले खेलों का एक अखाडा, एक ई-शिक्षण प्रयोगशाला, एक अच्छी तरह से भरा हुआ पुस्तकालय और शुद्ध पेयजल है।

कन्या सशक्तिकरण मिशन के अंतर्गत, क्लब ने सबसे पहले एक शौचालय बनाया (2007-08), और बाद में राज्य सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित होने के पश्चात इसे एक आदर्श स्कूल बनाने के लिए अन्य सुविधाएं जोड़ी।

पूर्व अध्यक्ष और मोगाप्पेयर स्कूल कार्य बल के अध्यक्ष एल. अशोक ने कहा, धीरे-धीरे अकादमिक प्रदर्शन बेहतर हुआ, रु 1.4 करोड़ की लागत से पुरानी ईमारत को एक नए रोटरी खण्ड से बदला गया, जिसका उद्घाटन दिसंबर 2016 में हुआ।

रोटरी समन्वयक और एक शिक्षक एस मुल्लुमती सूचित करती है कि, ''उद्देश्य, खेल की आधारभूत संरचनाओं को मिलाकर सभी सुविधाएं प्रदान करने और उनके रख-रखाव का भी ध्यान रखकर गहन सामुदायिक सेवा करने का है।''

स्कूल ने अब कक्षा 12वीं तक एक उच्चतर माध्यमिक शाला में उन्नत होने के लिए आवेदन किया है और यह लड़कियों की संख्या को दुगुना कर 800 करने का प्रस्ताव रखता है।

गरीब बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को वहन करने योग्य बनाने के लिए, क्लब की एन्स शिक्षकों के साथ एक समिति बनायेंगी ताकि स्कूल का उचित रूप से प्रबंधन एवं देखरेख सुनिश्चित की जा सके।

ज़िला बास्केटबॉल विजेता एस शेमबारुती (कक्षा 9) और उनकी मित्र वी गंगादेवी प्रफुल्लित है कि नई खेल सुविधा के जुड़ने के कारण अब वे उनके खेल को बेहतर बना पाएंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए डीजी आर श्रीनिवासन ने क्लब एवं शिक्षकों की उनके ''समर्पण एवं उत्साह'' के लिए प्रशंसा की, यह कहते हुए कि हालाँकि रोटरी क्लब चेन्नई मिड सिटी ध्यान आकर्षित करने से बचता है, लेकिन वे इस प्रकार की उत्कृष्ट परियोजनाएं करते है।

विधायक वी एलेग्जेंडर जिन्होंने ट्रैक का उद्घाटन किया, ने रोटेरियनों की उनकी मानवीय परियोजनाओं के लिए प्रशंसा की।

क्लब के अध्यक्ष दीपक राजेंद्रन ने कहा कि अब तक स्कूल पर रु 2.5 करोड़ खर्च किये जा चुके है, और सारा धन दान एवं क्लब के सदस्यों के संपर्कों का लाभ उठाकर इकठ्ठा किया गया।

एप्पेनडोर्फ़ इंडिया ने एथलेटिक ट्रैक के निर्माण में पैसा लगाया जिसकी लागत रु 19 लाख हुई।

चित्र : वी मुत्तुकुमारण

विकलांगता को कम करने के लिए पहियों की मदद

टीम रोटरी न्यूज़

जब एक पोलियो पीडित महेश्वरी (20) ने धारापुरम के रोटरी क्लब, मंडल 3202 के पूर्व अध्यक्ष एस एस के थियागराजन से किसी तरह से मदद करने के लिए अनुरोध किया, तो उसने यह सोचा नहीं होगा कि उसे एक नया स्कूटी मिलेगा, जिससे उसे घर और उसके कार्यस्थल के बीच यात्रा करने में आसानी होगी। रोटेरियनों ने दोपहिया वाहन को प्रायोजित किया, विशेष रूप से उसकी विकलांगता में मदद करने के लिए वाहन में आवश्यक बदलाव किया, और विश्व पोलियो दिवस पर, मंडल गवर्नर पी एम शिवशरणन की उपस्थिति में उसे प्रदान किया।

डीजी पी एम शिवशंकरन, महेश्वरी को पीडीजी जॉर्ज सुंदरराज और पत्नी प्रिसिल्ला और क्लब सदस्यों की उपस्थिति में चॉबियाँ सौंपते हुए।

महेश्वरी धारापुरम में एक ज़ेरोक्स की दुकान में काम करती है और उपहार में वाहन देने के लिए वह रोटरी की बहुत प्रशंसा करती है हमारे देश से पोलियो को समाप्त करने के समर्पित प्रयासों के लिए रोटरी को बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे यह जानकर बेहद खुशी है कि इस हत्यारे वायरस की वजह से और अधिक बच्चों को विकलांग नहीं होना पडेगा,'' एक जोरदार मुस्कुराहट के साथ उसने कहा। उस दिन को पोलियो उन्मूलन के लिए रोटरी के प्रयासों के बारे में जागरूकता का सृजन करने और लोगों को अपने आस-पास को स्वच्छ और कूड़ा-कचरा से मुक्त रहने के लिए जागरूकता बनाने के लिए क्लब ने एक रैली का आयोजन कर उस दिन को यादगार बनाया।

चिन्नास्वामी स्कूल में एक हैन्डवाश स्टेशन का उद्घाटन।

स्कूलों में हैंडवॉश स्टेशन

क्लब गम्भीरता से स्कूल के छात्रों को सामान्य स्वच्छता और साफ-सफाई के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रयास कर रहा है। एन चिन्नास्वामी पिळ्ई नगर पालिका एचएस स्कूल के परिसर में हैंड वॉशिंग स्टेशन की स्थापना करने के लिए छात्रों और शिक्षकों से 'धन्यवाद' और उत्साही मुस्कुराहट के उत्साहित रोटरी क्लब धारापुरम, मंडल के अध्यक्ष एस ईश्वरन इस WinS परियोजना को अधिक से अधिक सरकारी स्कूलों में कार्यान्वित करने के लिए तत्पर किया है। वह कहते है, ''इसकी लागत लगभग रु 60,000 आती है; हमे खुशी हैं कि लगभग 500 छात्र नियमित रूप से इस सुविधा का उपयोग कर रहे हैं और इसी तरह की सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए चार और पंचायत प्राथमिक विद्यालयों में कार्य प्रगति पर है।''

पी एस सरवाना सुबियाह, ईरोड के एक रोटरीयन, रु 10,000 की रियायती दर पर एक यूनिट हैंड वॉश फैसिलिटी उपलब्ध कराते हैं। रोटेरियन नियमित रूप से छात्रों को हाथ धोने और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में जागरूक बनाते हैं। ''अभी तक, 15 स्कूलों के लगभग 850 छात्रों ने हमारे WinS प्रोग्राम से लाभ उठाया है,'' ईश्वरन कहते हैं।

क्लब के सचिव एम कालिदास ने कुछ अन्य जन-कल्याणकारी कार्यों को सूचीबद्ध किया है जिसे रोटरियनों ने पिछले कुछ महीनों में समुदाय के लिए किया है।

इसमें रु 50,000 की लागत से एक आवासीय इलाके में बच्चों के लिए प्ले जोन स्थापित करना, एक सीनियर सिटीजन होम का नियमित रूप से दौरा करना और वहाँ रहने वाले निवासियों को दैनिक उपयोग की वस्तुओं जैसे टॉवेल, टॉयलेटरीज और पौष्टिक स्नैक्स उपलब्ध कराना, स्कूली बच्चों को स्कूली बैग और स्टेशनरी सामग्री और लंच बॉक्स उपलब्ध कराना करना शामिल हैं।■

रोई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

रोई दक्षिण एशिया कार्यालय से कुछ महत्वपूर्ण जानकारी, समय सीमा विवरण और अन्य समाचार अपडेट:

- ज़ोन 4 और 6- के क्लबों को निदेशक-मनोनीत चुनाव के लिए 1 मार्च, 2018 को या उससे पहले ई-मतदान संपन्न करना होगा। ई-मतदान के लिंक पहले ही संबंधित क्लब अध्यक्षों को उनकी रजिस्टर्ड ईमेल आईडी पर भेज दिए गए है। किसी भी जानकारी के लिए, कृपया *corporate.governancerotary.org* पर संपर्क करें।
- जनवरी 2018 के लिए क्लब के इनवॉइस रोई की वेबसाइट *www.rotary.org* पर अब उपलब्ध है। अपने क्लब का इनवॉइस देखने के लिए '*My Rotary*' में जाकर - 'Manage' पर क्लिक करें - 'Club District administration' में जाकर 'Club Adiministration' पर क्लिक करें। जितने शुल्क का भुगतान करना है वह 'Payment Due upon Receipt' में दिखाई देगा। स्पष्टीकरण के लिए, निधि खन्ना से *Nidhi.Khannarotary.org* पर संपर्क करें।
- जिन क्लबों को जुलाई 2017 की क्लब देय राशि का भुगतान ना करने पर निलंबित किया गया था उन्हें निलंबन की तिथि से 150 दिनों के अंदर पुनःस्थापन हेतु निम्नलिखित अनुपालनों को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

  - ❐ निलंबन के समय बकाया सभी वित्तीय दायित्वों का भुगतान करें।
  - ❐ उसके बाद इकठ्ठा हुए सभी सदस्यता देय शुल्क का भुगतान करें।
  - ❐ 18% GST के साथ 30 डॉलर प्रति सदस्य के हिसाब से पुनःस्थापन शुल्क का भुगतान करें।
  - ❐ पुनर्स्थापना आवेदन।

कृपया ध्यान दें कि निलंबन तिथि से 150 दिन के पश्चात् क्लब स्थायी रूप से समाप्त हो जाते है और फिर बहाल नहीं किये जा सकते।

- भारतीय दानकर्ता जो आयकर अधिनियम के अंतर्गत सेक्शन 80G का लाभ प्राप्त करना चाहते है उनसे 31 मार्च 2018 के पहले योगदान देने का अनुरोध है। रुपया-सक्षम ऑनलाइन दान रोटरी फाउंडेशन (इंडिया) RF(I) की वेबसाइट *www.rotaryfoundationindia.org* और रोटरी अंतर्राष्ट्रीय की वेबसाइट *www.rotary.org* दोनों पर उपलब्ध है।

निकटतम समय-सीमा पर ध्यान दें:

- क्लबों से अनुरोध है कि वे नवनिर्वाचित क्लब अधिकारियों का 28 फरवरी, 2018 तक ऑन-लाइन विवरण दें ताकि 2018-19 की रोई की आधिकारिक निर्देशिका में उनके नाम सम्मिलित किये जा सकें। क्लब के डेटा से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए, कृपया *datarotary.org* पर संपर्क करें।
- रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए पूर्व पंजीकरण छूट की अंतिम तिथि तेजी से पास आ रही है। 10 डॉलर की छूट प्राप्त करने के लिए, कृपया 31 मार्च, 2018 से पहले *http://www.riconvention.org/en/toronto/register* पर जाकर ऑनलाइन पंजीकरण करें।■

रोटरी पर किताबें

टीम रोटरी न्यूज़

यहाँ पर मंडल 3211 के दो रोटेरियनों द्वारा रोटरी पर लिखी गई दो किताबें है।

Know your Rotary एन भास्करन पिळ्ळई द्वारा लिखा गया एक आशु परिकलक है जिसमें रोटरी के सभी पहलुओं, विभिन्न रोटरी नेतृत्वकर्ताओं की विषय-वस्तुएं, RYLA, सम्मेलन, पुरस्कार, COL, टीआरएफ और भी बहुत जानकारी शामिल है। पीआरआईपी राजेंद्र के साबू ने किताब की प्रशंसा की; "...यह किताब रोटरी की जानकारी वाला कोई साधारण प्रकाशन नहीं है; यह रोटरी के प्रति प्रतिबद्धता और प्यार का परिणाम है। यह किताब...रोटरी के किसी भी शागिर्द/अनुयायी के लिए एक उत्कृष्ट संदर्भ सामग्री है," उन्होंने अपनी प्रस्तावना में लिखा है।

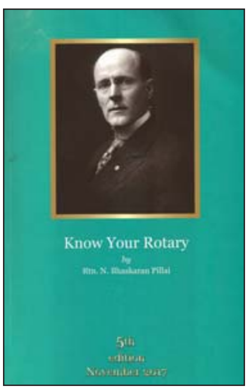

कीमत: रु 399;
ईमेल: bhaskaranpillaingmail.com;
मोबाइल: 9847157170

Rotary Protocol and Decorum रोटरी क्लब अल्लेप्पी के पूर्व अध्यक्ष और मंडल शिष्टाचार समिति के अध्यक्ष टॉमी इपेन द्वारा लिखी किताब ने रोटरी बैठकों में बनाए रखे जाने वाले आवश्यक शिष्टाचारों पर रोशनी डाली, जिसके बारे में ज्ञान शर्मिंदगी से बचने में मदद और क्लब की प्रतिष्ठा को बढ़ाएगा। इस पुस्तक में कुछ बिन्दुओं का मलयालम में अनुवाद भी किया गया है। यह किताब "अत्यधिक सूक्ष्मता वाली है, और देने योग्य है" रोटरी क्लब अल्लेप्पी के पी ओ थॉमस टिप्पणी करते है।

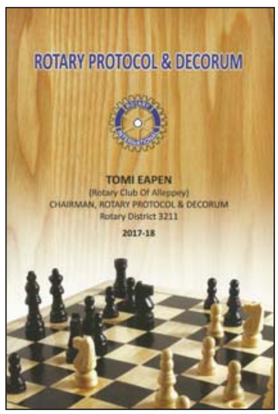

कीमत: रु 50; **मोबाइल:** 9447799689

सितारों तक पहुंचना

जयश्री

रोटरी मंडल 3250 ने अपने मंडल सम्मेलन, *सतरेरी,* दिल्ली में रो ई के निदेशक सी भास्कर, उनकी पत्नी माला, और टीआरएफ न्यासी सुशील गुप्ता की उपस्थिति में मनाया। पीडीजी जे बी कामदार आरआई अध्यक्ष के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में 1,200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के दौरान तीन सेवा परियोजनाओं जिनमें पटना में एक उन्नत कैंसर निदान केंद्र की स्थापना, मुजफ्फरपुर में एक रेटिनोपैथी सेंटर और कोडर्मा में एक डायलिसिस सेंटर स्थापित करने का लंच किया। डीजी विवेक कुमार ने कहा, ''हम इन परियोजनाओं को वैश्विक अनुदान की मदद से पूरा कर रहे हैं,'' उन्होंने कहा कि रेटिनोपैथी केंद्र विशेष रूप से रेटिनल विकारों के साथ समय से पहले जन्में के बच्चों के इलाज में मदद करेगा और यह बिहार में छह रोटरी नेत्र अस्पताल में एक रेफरल अस्पताल के रूप में काम करेगा।

निदेशक भास्कर ने इस पहल के लिए मंडल रोट्रियनों की सराहना की।

पिलखुवा, उत्तर प्रदेश में रोटरी कलब भवन और पैथोलॉजी सेंटर की स्थापना के लिए मंडल ने आरसी पिलखुवा, मंडल 3012 को रु1 लाख का योगदान दिया।

रो ई निदेशक सी भास्कर, आरआईपीआर जे बी कामदार और मिट्टी चांग (बीच में) प्रतिनिधियों के बीच।

डीजी विवेककुमार ने रो ई निदेशक सी भास्कर, आरआईपीआर जे बी कामदार की मौजूदगी में दीपक को रोशनी दी।

शिव खेरा, मैगसे पुरस्कार विजेता शांता सिन्हा, आध्यात्मिक गुरु ऋषि नित्याप्रज्ञा जैसे वक्ताओं ने अपने उत्साहजनक बातों से दर्शकों को प्रेरित किया। एमटीआई चांग, सदस्य - रोई की रोटारैक्टर-इंटरैक्ट कमेटी और रोटरी ई-क्लब के सिलिकॉन वैली मंडल 5170 के आईपीपी ने बताया कि रोटरी के साथ उनकी भागीदारी से उनकी व्यक्तिगत में किस प्रकार से वृद्धि हुई है। वह वर्ष 2005 में एक इंटरैक्टर रहने के बाद, वर्ष 2007 में एक सक्रिय रोटारैक्टर बने और आखिरकार वर्ष 2016 में अपना क्लब शुरू किया।

''यह एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम थी और मुझे प्रसन्नता हुई जब ट्रस्टी गुप्ता जी ने टिप्पणी करते हुए बताया कि वह आखिरी दिन भी सभी दर्शकों को देखकर हैरान हुए। ऐसी बैठकें बेहतर संबंधों को प्रोत्साहित करने और हमें सितारों तक पहुंचने के लिए प्रेरित करने के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप कार्य करती है,'' विवेक कुमार सम्मेलन की सफलता का उपसंहार करते हुए कहा।■

एक स्कूल जी उठी

जयश्री

उन बचपन के दिनों को याद कीजिए जब हम गर्मी की लंबी छुट्टियों के बाद स्कूल के पहले दिन, स्कूल को पुता हुआ, चमकदार ब्लैकबोर्ड के साथ, पुस्तकालय को नई किताबों के साथ जमा हुआ और नए खेल उपकरणों को देखकर रोमांचित महसूस करते थे।

एक विद्यालय को लुभावना और पर्याप्त जोशपूर्ण दिखना चाहिए ताकि वह बच्चों में स्कूल आने के लिए रूचि जगा सके और, इससे अधिक महत्वपूर्ण, शिक्षा ग्रहण करने की उनकी रूचि को कायम रख सके, रोटरी क्लब सिलिगुड़ी सेंट्रल, मंडल 3240, के अध्यक्ष अमित मरोदिया कहते है।

सिलीगुड़ी के बुरी अवस्था वाले एक सरकारी स्कूल बुद्ध भारती भुवन मोहन विद्यामंदिर में जान फूंकने की क्लब की हाल ही की कामयाबी में मोरदिया सहायक थे। ''हर सुबह, ऑफिस जाते समय जब भी मैं इस स्कूल के सामने से गुजरता था, मैं इसकी दयनीय अवस्था को देखकर आहत होता था, फिर एक दिन, क्लब सचिव प्रेम अग्रवाल और समुदाय सेवा अध्यक्ष विकास अग्रवाल के साथ मैं इस स्कूल के प्राचार्य से मदद करने के एक प्रस्ताव के साथ मिला।''

स्कूल में मात्र 50 विद्यार्थी ही पढ़ते है, जिनमें से तीन नि:शक्त है, और छह शिक्षक है। इसकी दीवारों से रंग निकल चुका था, प्रांगण की दीवार गिर चुकी थी, और हर जगह जंगली घास उग रही थी।

स्कूल के प्राचार्य सहयोग करने के लिए बहुत खुश थे और उन्होंने उपयुक्त प्राधिकारियों – प्राथमिक शाला के अध्यक्ष प्रदीप भट्टाचार्य और वार्ड पार्षद कमल अग्रवाल के साथ समन्वय किया। रोटेरियनों ने क्लब के सदस्यों पंकज अग्रवाल, अजय गोयल, गोपाल अग्रवाल, पवन अग्रवाल, घनश्याम और दीपक अग्रवाल के साथ एक समिति का गठन किया, और अक्टूबर के पहले सप्ताह में आवश्यक औपचारिकताओं का पालन करने के बाद नवीनीकरण का कार्य आरंभ किया।

नई प्रांगण की दीवार, हलके नीले रंग से पुता हुआ भवन, फिर से तैयार किया गया फर्श, पुस्तकों के से हुआ पुस्तकालय, हरे बोर्ड, रंगीन

***अबः** जीवंत स्कूल और (दायीं ओर)*
***पहलेः** स्कूल की अत्यंत बुरी हालत।*

छात्र, रोटेरियनों द्वारा आयोजित एक कला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए।

चार्टों, और बच्चों के लिए नयी बेंच और डेस्क के साथ सुसज्जित कक्षाएं, इन सब चीज़ों के साथ जल्द ही स्कूल ने एक नया रूप धारण कर लिया। खेल के मैदान से जंगली घास साफ की गई, नए खेल उपकरण लाए गए और दो शौचालय और पर्याप्त पानी की सुविधा वाले हाथों की धुलाई के स्टेशनों का निर्माण किया गया। बच्चों की डिजिटल साक्षरता में मदद करने के लिए रोटेरियनों ने एक कंप्यूटर लैब स्थापित की। नवीनीकरण की रु 5 लाख की लागत को सदस्यों

लोग स्कूल के प्रबंधन से अगले अकादमिक वर्ष में भर्ती के लिए पहले से ही पूछताछ करने लगे है, जबकि पहले, विद्यार्थियों का मिलना एक बड़ी चुनौती थी।

और क्लब की निधि की मदद से एकत्रित किया गया।

इस नए विद्यालय का आधिकारिक तौर पर उद्घाटन वार्ड पार्षद ने 12 नवम्बर को किया; बच्चों को ''यह हमारा बाल दिवस का तोहफा था। उनके चेहरों की उत्सुकता और विस्मय को संजोए रखना चाहिए,'' मरोदिया कहते है। प्राचार्य से अंत में यह जानना सुखद था कि लोग प्रबंधन से अगले अकादमिक वर्ष में भर्ती के लिए पहले से ही पूछताछ करने लगे है, जबकि पहले, विद्यार्थियों का मिलना एक बड़ी चुनौती थी।■

हैंडलूम को मदद की जरूरत है

किरण ज़ेहरा

रोई निदेशक सी भास्कर, टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता और डीजी रवी चौधरी के साथ, रैंप वॉक के सभागी।

मंडल 3011 के रोटेरियनों ने एनुअल रोटरी डिस्ट्रिक्ट फाउंडेशन बॉल में चकाचौंध और ग्लैमर जोड़ते हुए भारतीय हैंडलूम वस्त्रों की स्वदेशी संस्कृति को अपनी सुंदरत श्रद्धांजलि दी। डीजी रवि चौधरी और उनकी पत्नी रितु द्वारा होटल लीला एम्बिएंस, गुरुग्राम में *ताना-बाना* नामक एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का भव्य रूप से आयोजन किया गया, और इस कार्यक्रम ने विभिन्न भारतीय हैंडलूम और उसके बुनकरों को समर्थन और बढ़ावा दिया।

पीडीजी रूपक जैन द्वारा अपने गवर्नर के कार्यकाल (1996-97) के दौरान पहले रोटरी बॉल का आयोजन किया था।

विभिन्न राज्यों से बुनाई कला को रेखांकित करते हुए, अध्यक्षों, असिस्टेंट गवर्नरों और उनकी पति/पत्नी ने रैंप पर अपना जलवा बिखेरा और एक भव्य शो पेश किया। रैंप शो के बारे में बात करते हुए डीजी रवि चौधरी ने कहा कि ''रोटेरियनों और उनके पति/पत्नी ने पारंपरिक भारतीय वस्त्रों और उनकी प्राचीन विरासत के केंद्रीय विषय-वस्तु को उजागर करने के लिए शानदार काम किया है।''

यह उद्योग, संपूर्ण विश्व के समक्ष देश के अद्भुत निर्दोष कौशल और विशेषज्ञता को प्रदर्शित करने के अतिरिक्त, कृषि के बाद ग्रामीण भारत में दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है। हैंडलूम का कार्बन फूटप्रिंट कम होता है, क्योंकि वे निम्नतम अवसंरचना, तकनीक और शक्ति का उपभोग करते हैं। ''फैशन और वस्त्र का संपूर्ण व्यवसाय कारीगरों और बुनकरों के इर्दगिर्द घूमता है। यह बड़े ही दुख का विषय है कि बुनकरों का समुदाय लुप्त होता जा रहा है। इनके बारे में जागरूकता फैलाना और कला का संरक्षण करने के

हैंड्लूम का कार्बन फूटप्रिंट कम होता है, क्योंकि वे निम्नतम अवसंरचना, तकनीक और शक्ति का उपभोग करते हैं।

लिए आवश्यक कदम उठाना समय की मांग है जो हमारे समर्थन के बिना विलुप्त हो सकती है,'' चौधरी जी कहते हैं।

इस शो को अपनी अवधारणा, कोरियोग्राफी और प्रस्तुतिकरण के लिए लोगों ने अत्यंत प्रशंसा की। भारत के बुनकरों की कला को प्रदर्शित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, आरआईडी सी भास्कर और विशिष्ट अतिथि ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने डीजी से चेन्नई में होने वाले अगले गवर्नर्स इंस्टिट्यूट में इस शो को फिर से आयोजित करने का अनुरोध किया।

यह बताते हुए कि भारतीय हैंडलूम को आकर्षित करने के लिए किसी चकाचौंध की कोई आवश्यकता नहीं है, चौधरी ने कहा कि ''यह दुख की बात है कि हमें अपने वस्त्रों की मूल समृद्धि को बढ़ावा देना होगा। हमारे हैंड्लूम उद्योग को हमारे समर्थन की आवश्यकता है और भारतीय रोटेरियन के रूप में इस पुनीत अभियान में हम भी अपना योगदान दें।''

इस कार्यक्रम में कुछ हैंड्लूम जैसे खादी, मंगलगिरि कपास, तुसार रेशम, इक्कात, पेटोला, कुची कढाई, फुलकारी, पेठानी ब्रोकेड, मेखेला चादोर, मुगा रेशम को प्रदर्शित किया गया था।■

इस वर्ष के प्रथम पठन

संध्या राव

दो लघु उपन्यासों का विषय है - संघर्ष, पहला श्रीलंका और दूसरा वियतनाम के बारे में

इस साल मैंने दो पुस्तकों के साथ शुरुआत की, अनोखी बात ये है कि दोनों का विषय है संघर्ष। ये मैंने जान बूझ कर नहीं चुना था, स्वतः ही हुआ, कदाचित मेरे अवचेतन में युद्ध की निरर्थकता के बारे में जानने की जिज्ञासा रही थी।

कोमोडोर अजीत बोयागोदा की किताब *ए लॉन्ग वॉक : वॉर, कैप्टिविटी एंड रिटर्न* जैसा उन्होंने सुनीला गलपट्टी को बताया। LTTE (लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम) द्वारा बनाए गए बंदियों में बोयागोदा श्री लंका के सर्वोच्च अधिकारी थे जो आठ साल तक उनकी क़ैद में रहे। उनकी रिहाई के बाद, उन पर गद्दार होने का आरोप लगाया गया और नौसेना से अवकाश ग्रहण करने के लिए दबाव डाला गया। बातचीत के लहज़े में लिखी गई इस सरल और निर्बाध पुस्तक में वो नौसेना में शामिल होने, अपने रैंक में पदोन्नति, उनके जहाज के डूबने व LTTE द्वारा बंदी बनाए जाने, उनकी हिरासत में बिताये गए वर्षों और बंदीकर्ताओं से उनकी बातचीत और इन अनुभवों के दुष्परिणामों का ज़िक्र करते हैं।

दूसरी पुस्तक *दी सॉरो ऑफ़ वॉर* के लेखक हैं बाओ निन्ह (मूल नाम-होआंग ओ फूओंग)। 1990 में प्रकाशित, इसे व्यापक रूप से उत्कृष्ट कृति माना जाता है जो 'अमरीकी वियतनाम युद्ध किसे कहते हैं और वियतनामीयों का इसे अमरीकी युद्ध करार देने का नज़रिया' बताती है। निश्चित ही उपन्यास के रूप में प्रस्तुत यह पुस्तक स्पष्ट रूप से लेखक के स्वयं के अनुभवों पर आधारित है, यह पुस्तक नायक केन द्वारा युद्धकाल में बिताये गए वर्षों के बारे में बताती है जो अब, शवों की चीखती चिल्लाती आत्माओं के जंगल को साफ़ कर रहा है। यह वो जगह है जहां 1969 में उसकी 500 सैनिकों की शक्तिशाली बटालियन का नामोनिशान मिटा दिया गया था: उसमें सिर्फ दस जीवित बचे थे जिस में एक वो है।

जब LTTE ने श्रीलंकाई नौसेना के सबसे बड़े जहाज 'सागरवर्धने' को डुबोया तब बोयागोदा उसका संचालन कर रहा था। उन्हें और उनकी प्रमुख आपूर्ति सहायक विजिथा को बन्दी बना लिया गया। वह सहज ही टाइगर्स के लिए सौदेबाजी की चीज़ बन गया - ऐसा नहीं था कि श्रीलंका सरकार इस पर ध्यान दे रही थी। आठ साल की लम्बी सौदेबाज़ी के बाद कैदियों के बदले बोयागोदा और विजिथा की रिहाई हुई। बंदीकर्ताओं से बोयागोदा की बातचीत के माध्यम से हमें तमिल टाइगर्स की विचारधारा का पता चलता है। हालांकि उनसे सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है, मगर जुदाई, अनिश्चितता और अभाव के वर्ष झेलने के बावजूद भी उनमें कोई क्रोध, कड़वाहट या नफरत नहीं है। वह यथार्थ हैं और दार्शनिक हैं। वास्तव में, कई लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि वे दुश्मन से हमदर्दी की भावना 'स्टॉकहोम सिंड्रोम' से पीड़ित है।

जुलाई 2016 में *द वायर* में प्रकाशित एक लेख 'द रिस्क्स ऑफ़ टेस्टिमनी : मेमोरीज ऑफ़ कैप्टिविटी विथ द तमिल टाइगर्स' में, सुनीला गलापट्टी लिखते हैं: मित्रों को ये कहानी बताने में बहुत समय लगता : कि अभी अभी मेरी एक किताब प्रकाशित हुई है, जिस पर बिना किसी से चर्चा किए चुपचाप मैंने पांच साल तक काम किया; कि ये संस्मरण उस नौसैनिक अधिकारी के शब्दों में है जिसे श्रीलंका के गृहयुद्ध के दौरान आठ वर्षों तक बंदी रखा गया था और वह उस अनुभव को सरल और विश्वसनीय तरीके से बताते हैं। इसकी विश्वसनीयता ही कहानी की सबसे आश्चर्यजनक बात है और लोग लगभग तुरंत पूछते हैं, ''क्या वो स्टॉकहोम गए थे?'' मैंने कहा कि यह कमोडोर का एक मज़ाक है, 'शायद मुझे स्टॉकहोम सिंड्रोम है,' जिसे कह कर वे हंसते हैं। यह बात उन्हें या मुझे कैसे पता? ये सवाल पूछने वालों की तुलना में हम कुछ अधिक नहीं जान पाए।

खुद बोयागोदा कहते हैं, ''मुझे पता है कि टाइगर्स अत्यंत क्रूर थे। ऐसे कई लोग हैं जो इस बात की गवाही दे सकते हैं और कई वो भी जो अब इस दुनिया में नहीं रहे। मेरा अनुभव उतना बुरा नहीं था इसलिए, कोई भी मुझ पर विश्वास नहीं करता।'' पुस्तक का यही दृष्टिकोण? गृह युद्ध के अन्य पहलुओं का एक विचारशील प्रतिबिंब है। उदाहरण के लिए, वे कहते हैं,उनकी कैद की

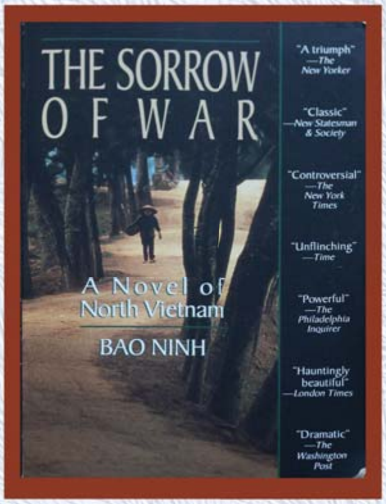

शुरुआत में: ''कैदी के रूप में मेरी पहली सुबह, मैंने खिड़की पर 'ठक ठक' आवाज़ सुनी । बाहर एक गार्ड था, वह जानना चाहता था, क्या मैं जानता हूँ कि समय क्या हुआ है। मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि मुझे अभद्र भाषा सुनने की आदत नहीं थी। मैंने उस गार्ड को नजरअंदाज करने की कोशिश की लेकिन वो भी ज़िद्दी था। मेरा खून खौल गया, मैं मुड़ा और कहा, 'अधिकारी को संबोधित करने का एक तरीका होता है - मैं श्रीलंका नौसेना में कमांडर हूं' गार्ड फ़ौरन पलटा और बोला, 'आप यहां कोई कमांडर नहीं है -सिलोन नेवी कमांडर - आप यहां तमिल ईलम के कैदी हैं।' गुस्से में उसने अनजाने ही मेरी तरफ राइफल उठा ली थी. मुझे पहला अनिवार्य सबक सिखाने के लिए, मैं गार्ड श्रीधरन को धन्यवाद देता हूँ। इस दुनिया में एक कैदी होना आम आदमी होने से कितना अलग था। मुझे जल्दी ही इसके अनुरूप ढलना होगा।''

कहानी का वर्णन बड़े ही करीने से किया गया है और कमोडोर ने अपनी समझ से, घटनाक्रम को यथावत रखा है। निष्पक्ष रूप से देखा जाये तो, बोयागोदा की दलील तर्कसंगत और सही प्रतीत होती है, मसलन उनकी रिहाई पर जब उन्होंने कहा ''उन्हें हमें रिहा होते हुए देख कर बहुत तकलीफ़ हुई होगी, जबकि वास्तव में, कैद में तो वो खुद थे। मुझे मोहन की मां की बात याद आ गई, जिसने उससे कहा था कि 'दूसरों को आज़ाद कराने की कोशिश में तुम, अपनी स्वतंत्रता ही खो चुके हो।' इनमें से अधिकांश कार्यकर्ता, यहां तक कि LTTE में स्वेच्छा से आये हुए भी, तब शामिल हुए थे जब वो किशोर थे। उस वक़्त दिमाग आतंकवाद के लिए अधिक उन्मुक्त होता है ।

अंततः आप एक ही वज़ह की अपेक्षा ज़िंदगी को ज़्यादा जीना चाहते हैं। इसीलिये मेरा मानना है कि लड़ाई तीस साल तक नहीं चलेगी। यदि LTTE अपने किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता था तो उन्हें दस सालों में उसे प्राप्त कर लेना चाहिए था ... ज़रा सोचिये कि एक निर्वाचित सरकार के लिए एक दशक से अधिक समय तक लोकप्रिय समर्थन बनाये रखना कितना मुश्किल है। फिर इसकी यह संभावना कितनी कम है कि एक स्वयंभू नागरिक सेना अपने लोगों का समर्थन रख पाये?'' गृह युद्ध ने श्रीलंका को तबाह कर दिया और *लॉन्ग मार्च* इस में एक महत्वपूर्ण सम्भावना है।

''या क्रॉन्ग पोको नदी के किनारे, सेन्ट्रल हाइलैंड्स में बी 3 युद्ध के मैदान की उत्तरी सीमा पर, लड़ाई में लापता शरीर-संग्रहण करने वाली टीम को 1976 के शुष्क मौसम का इंतजार है।'' इस तरह *दी सॉरो ऑफ़ वॉर* शुरू होता है। यह अतीत में ले जाता है: बचपन, हरे भरे खेत, सैनिकों के पल्टन, प्यार और इंतज़ार, तेज़ बारिश, भूख और घर की ज़िद, परिवारों का विनाश, रक्त और संगीन की यादें। एक उपन्यास के लिए जिसमे इतना अधिक है, उसके लिए यह किताब बहुत छोटी है, सिर्फ 227 पृष्ठ। इसकी शैली परिष्कृत है, लेखक और नायक का व्यक्तित्व लगातार एक दूसरे में बिलीन और अलग होता है, लड़ाई की यादों, उस से पहले और बाद के जीवन के संस्मरण के साथ यह उपन्यास आगे बढ़ता है। ''उसके बाद के सभी परीक्षण निबंध, लघु कथाएँ और लघु उपन्यास के बाद ये उपन्यास आता है, फिर एकाएक उन्हें एहसास होता है कि सैनिक के रूप में यह आखिरी साहसिक कारनामा है। वो उत्सुक हैं, क्यूंकि यह उनके जीवन की सबसे गंभीर चुनौती है। इसे लिखने में उन्होंने खुद को पागलपन के कगार पर चढ़ाया है। पलायन का कोई उपाय नहीं, कोई बचाने वाला नहीं। अकेले ही इस लेखन चुनौती को पूरा करना होगा, एक सिपाही के रूप में उनका अंतिम कर्तव्य।''

युद्ध समाप्ति के 40 साल बाद भी, युद्ध के प्रभाव केवल जमीन पर या स्मारकों और संग्रहालयों और इतिहास की पुस्तकों में ही नहीं, बल्कि लोगों के ज़ेहन में और वियतनाम की हवा में पूरी तरह घुले हुए हैं । 2006 में *द गार्जियन* में एक लेख में, सुज़ैन गोल्डनबर्ग चर्चा करती है कि बाओ निन्ह ने पुनः प्रकाशन क्यों नहीं किया, हालाँकि उन्होंने एक उपन्यास और लिखा था *स्टेप्स* बाओ ने सुज़ैन से कहा, ''मैंने वर्तमान में जो भी लिखा उसकी तुलना उससे की जो मैंने पहले लिखा था, और पाया कि यह पहले की तरह स्वाभाविक नहीं था। कुल मिला कर उसके बाद उन्होंने अभी तक एक भी उपन्यास प्रकाशित नहीं किया है।''

जैसा कि गोल्डबर्ग लिखती हैं, ''जब इसे पहली बार प्रकाशित किया गया ... निन्ह का उपन्यास ... एक रहस्योद्घाटन था ... कोई

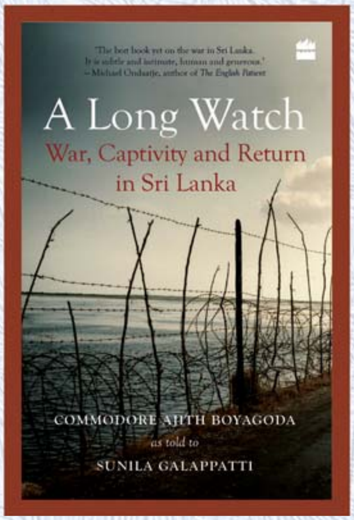

उपन्यासकार युद्ध की पाशविकता के बारे में लिखने की हिम्मत नहीं रखता और ना ही इसकी वजह से वियतनामी पीढ़ी को हुई स्थायी क्षति की पीड़ा पर।'' गोल्डबर्ग ने कवि डुओन्ग तुओंग को उद्धृत किया, युद्ध के बारे में यह पहली ईमानदार किताब थी: वियतनाम युद्ध के ''अधिकांश उपन्यासों ने सैनिकों की वीरता की सराहना की, पर कभी भी उन लोगों की अन्तर्भावना जानने की कोशिश नहीं की जिन्होंने लड़ाई में भाग लिया था।'' स्पष्टतः ईमानदारी ने उन से बात की जो युद्ध से सीधे प्रभावित थे क्योंकि इसे युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों द्वारा पसंद किया जाता था - इसका अनुवाद कर पुराने अमेरिकी सैनिक भी चाव से पढ़ते थे - और वियतनामी आधिकारियों सहित लेखक यूनियन द्वारा इसकी निंदा की गई । ऐसा प्रतीत होता है कि यह उपन्यास पहले वियतनामी भाषा में *द डेस्टिनी ऑफ़ लव* के नाम से प्रकाशित हुआ था ।

हालांकि उपन्यास की कहानियाँ कही-कहीं अस्वाभाविक लगती हैं, पर उसके हर पन्ने से सचाई की बू आती है जो अंतर्मन को भीतर तक झकझोर देती हैं। यह आज भी उतनी ही प्रभावित करती हैं जितनी उस वक़्त जब कम्युनिस्ट पार्टी ने पहली बार इसे प्रतिबंधित कर दिया था। और जैसा कई साहित्यकारों ने दिखाया है, कि सत्य को निगलना मुश्किल है। किताबें उन सचाइयों को सामने लाती हैं।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका एवं वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कक्षा में बेहतर प्रदर्शन के लिए

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब सेलम, मंडल 2982, ने ग्लोबल एजुकेशन सलूशन (जीईएस), ऑस्ट्रेलिया, जो आरआईएलएम की प्रमाणित प्रशिक्षण भागीदार है, और भारतीय कैरियर शिक्षा और विकास परिषद (आईसीईडीसी), मुंबई के सहयोग से तीन दिवसीय शिक्षक प्रदर्शन विकास प्रशिक्षण का आयोजन सेलम के रोटरी हॉल में किया था। कार्यक्रम में इस क्षेत्र के आसपास के सरकारी स्कूलों के 100 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डीजी धर्मेश आर पटेल ने किया, और इस कार्यक्रम को साक्षरता विषय पर एक बहु-क्लब रोटरी बैठक के रूप में विस्तारित किया गया।

रोटरी क्लब सेलम के अध्यक्ष वेंकटाचलपति ने कहा कि जीईएस के सीईओ राकेल श्रॉफ और निदेशक जीवन डी कुन्हा, जी थोलकापिया अरसु, एक रोटेरीयन और प्राचार्य, एवीएस कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी, डी रमेश कुमार, सीआईआई-सेलम के उपाध्यक्ष, और जी सेंथिलकुमार, रोटरी क्लब सेलम गैलेक्सी के अध्यक्ष के साथ एक पैनल चर्चा ने जिला साक्षरता समिति को TEACH की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से समझते हुए और व्यवहार्य लक्ष्य बनाने में मदद की।

''अगर यह एक स्मार्ट क्लास है तो शिक्षक को अपनी भूमिका को समझना आवश्यक है। वे केवल वीडियो के माध्यम से एक पाठ पढ़ाकर अपने कार्य को पूरा हुआ नहीं समझ सकते हैं। उन्हें कक्षा को संवादात्मक बनाने के बारे में

जी ई एस की सीईओ, रैकेल राकेल श्रॉफ, शिक्षक के साथ बातचीत करती हुयी।

सीखना होगा,'' उन्होंने आगे कहा। प्रशिक्षण ने उन्हें अपनी भूमिका को समझने और कक्षा में बेहतर भागीदारी सुनिश्चित करने और छात्रों के सीखने के परिणामों को समझने में मदद की है।

''यह एक मूल्यवान कार्यक्रम था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम कक्षा के वातावरण को बेहतर बना सकते हैं यदि हमने जो सीखा है, उसे यहाँ उत्साह से लागू करें,'' लक्ष्मी ने कहा, जो सहदेवपुरम सरकारी मध्य विद्यालय में पढ़ाती हैं।

नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन के अतिरिक्त, नेशन बिल्डर अवार्ड के माध्यम से शिक्षकों की सेवाओं की पहचान और प्रशंसा भी करता है।■

सम्मेलन

संगीत का श्रवण करें

रेंडी ड्रज़िन

टोरंटो अपने एक जीवंत संगीत दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है जिसमें स्टेडियमों से लेकर छोटे बारों तक के सभी प्रकार के स्थान, और प्रत्येक संगीत शैली सम्मिलित है। जब आप 2018 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए 23 से 27 जून तक शहर में होंगे, तब कुछ समय निकाल कर जीवंत सुमधुर संगीत सुनने का आनंद उठाएं।

अद्भुत मेसी हॉल शास्त्रीय और समकालीन संगीत समारोहों की मेजबानी करता है। वर्ष 1982 तक मैसी हॉल टोरंटो सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा और टोरंटो मेंडेलसनहाँ कोयर का घर था, जिसके बाद वे नव निर्मित रॉय थॉमसन हॉल में चले गए।

जून 28 को, सम्मेलन के समापन के ठीक बाद, एरीथा फ्रैंकलिन सोनी सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स पर अपनी कला प्रस्तुत करने वाली हैं। सोनी सेंटर का कार्यक्रम देखने लायक है।

हॉर्सशू टावर्न शहर में सबसे प्रसिद्ध छोटा स्थल है। वर्ष 1947 में स्थापित हो जाने के बाद, कई प्रसिद्ध हस्तियाँ अपने करियर के शुरुआती चरणों में इस स्टेज पर अपनी कला का जलवा बिखेर चुके है, जिसमें रॉलिंग स्टोन्स, पुलिस और विली नेल्सन शामिल हैं।

जैज़ के उत्साही समर्थक जैज़ बिस्त्रो का लुफ्त उठाना चाहते हैं, जहाँ संगीत के साथ लज़ीज़ व्यंजनों उपलब्ध कराया जाता है, और दि रेक्स, एक दशक पुराना होटल, बार और रेस्तरां में आप जैज और ब्लूज. को सुनने का आनंद उठा सकते हैं।

लैटिन संगीत के प्रेमी लैला लाउंज में एकत्र होकर लैटिन फ्यूजन व्यंजन खाने के दौरान साल्सा बैंड का आनंद उठा सकते हैं। साल्सा के प्रशिक्षक शुक्रवार और शनिवार की रात को संगीत का शिक्षण कराते हैं।

पूर्व पंजीकरण छूट 31 मार्च तक समाप्त हो जाएगी। ***riconvention.org*** **पर विजिट करें**

जेल में साफ पेयजल

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब मुर्शिदाबाद के अध्यक्ष डॉ रवि एस प्रसाद, मंडल 3291 के डी जी ब्रोजो गोपाल कुंडु, बेरहमपुर सेंट्रल सुधारक होम के अधीक्षक टी आर भूटिया और रोटरी क्लब टॉलीगंज के अध्यक्ष सैलेन भौमिक जेल के अंदर जल उपचार संयंत्र के उद्घाटन में।

रोटरी क्लब, टॉलीगंज, मंडल 3291 के अध्यक्ष सैलेन भौमिक कहते है कि ''सुधार की बात आती है तो क्यों न हम पानी से शुरू करें?'' वह हाल ही में बेरहमपुर केंद्रीय सुधार गृह में रोटरी क्लब मुर्शिदाबाद, मंडल 3291 और अनीर वॉटर मशीनरी, कोलकाता के सहयोग से स्थापित वॉटर प्यूरीफायर का जिक्र कर रहे थे। भौमिक, जो सिक्किम सरकार के ग्रामीण प्रबंधन विकास विभाग के तकनीकी सलाहकार हैं, कहते हैं कि ''इससे पहले, कैदी जेल के अंदर सीधे नल से पानी पीते थे। पानी आर्सेनिक से प्रदूषित होता हैं।, और इस रासायन के लंबे समय तक संपर्क में रहने से त्वचा, फेफड़ा, मूत्राशय और किडनी में कैंसर हो सकता है। इसके कारण त्वचा मोटी और काले रंग की हो सकती हैं।''

वह आगे कहते हैं कि सिक्किम और पश्चिम बंगाल के कई इलाके साफ पेय जल की कमी से पीडित है। जर्मनी में एक जल उपचार और प्रबंधन पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्हें अपने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने की प्रक्रिया को समझने में मदद की।

उन्होंने 2002 में एक शोध और विकास इकाई की स्थापना की थी और उन्होंने जर्मन तकनीक का भारतीयकरण किया जिसमें उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त था। जर्मनी द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले अवशोषण तकनीक को स्थानीय जरूरतों के अनुसार संशोधित किया जाना था क्योंकि ''यहाँ के पानी की विशेषता और आर्सेनिक की मात्रा जर्मन के पानी से भिन्न थी।'' जब वह अपने शोध में सफल हुए तो उन्होंने इसका उपयोग रोटरी के माध्यम से जरूरतमंदों के लिए करने का निर्णय लिया। ''क्लब के अध्यक्ष के रूप में मैंने अपने सदस्यों से पूछा और वे इस पर सहमत हो गए। अब हम इस क्षेत्र के अन्य स्कूलों और अस्पतालों में शुद्धि संयंत्र स्थापित करने जा रहे हैं।''

सुधारक गृह के अधीक्षक ने भी पुष्टि की है कि पहले प्रदूषित जल पीने के कारण जेल के कैदियों में पेट के विकार और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में वॉटर प्यूरीफायर स्थापित होने के बाद बहुत कमी आई है।■

भावनाओं की धुंध को छंट जाने दो

भरत और शालन सवुर

क्यों मैं एक दिन खुश और दूसरे दिन उदास रहता हूँ?'' एक संवेदनशील किशोर ने रोते हुए पूछा। पिता ने समझदारी से जवाब दिया, ''बेटा, यह हमारे विकास का हिस्सा है। एक पंछी जो अपने पंखों को ऊपर नीचे नहीं फड़फड़ा सकता वो उड़ नहीं सकता।'' कौन है जिसने जीवन में अलग-अलग समय पर उच्च आत्म सम्मान और निम्न आत्म सम्मान का सामना ना किया हो? हमें पदोन्नति, तारीफ, यहाँ तक कि चापलूसी भी मिलती है जो हमारे आत्म सम्मान को राकेट की तरह ऊपर उठा देती है। नौकरी छिन जाने, वित्तीय असफलताओं, आलोचनाओं का सामना करने पर हमारा आत्म सम्मान पानी में पत्थर की तरह डूब जाता है।

हर बार जब भी हमारे आत्म सम्मान में वृद्धि होती है, हमें भगवान के जैसा होने की अनुभूती होती है। हर बार जब भी हम गिरते है, हम एक दोषपूर्ण इंसान की तरह अनुभव करते है। और जब भी हमारा दिमाग महिमा और विनम्रता के बीच अपने पंख फड़फड़ाता है, हमें अपने बारे में कुछ अनमोल चीज़ का ज्ञान होता है - कि हम अपने दृष्टिकोण में लचीले हो सकते है। जैसा कि पिता ने कहा था: हम विकास करते है।

सब कुछ सही हो जाएगा अगर हम धार्मिकता, विनम्रता को वहीं छोड़ दे और आगे बढ़े। तकलीफें तब शुरू होती है जब हम इन्हें हमारे साथ रहने देते है। जो अनुभव बदलाव, बढ़त, और आभास के एजेंट हो सकते थे वे फिर हमारे अंदर की भावनाओं में सम्मिलित होने के कारण विकृत होने लगते है। ओह हाँ, हमारी भावनाएं इन अनुभवों के इर्द-गिर्द घूमती रहती है और हम निरंतर अपनी तरफ या तो प्रशंसा, प्यार, आभासी आराधना का ध्यान खींचना चाहते है जो उच्च आत्म सम्मान से पीड़ित होने के लक्षण है; या फिर सहानुभूति, सदमा, नाराज़गी का जो निम्न आत्म सम्मान से पीड़ित होने के लक्षण है। ध्यान आकर्षित करने के लिए, उच्च आत्म सम्मान वाला व्यक्ति शेखी बघारता है और निम्न आत्म सम्मान वाला व्यक्ति दोष लगाता है। हालाँकि, दोनों ही अवस्थाएं स्वास्थ्य में वृद्धि करने वाले स्थायी रास्ते के रूप में नहीं अपनाई जा सकती। और यह गहन चिंतन का विषय है।

उच्च आत्म सम्मान आक्रामकता को जन्म देता है जब मांगे पूरी नहीं होती, गुस्सा चिड़चिड़ापन आता है जब ध्यान नहीं दिया जाता और वहाँ दूसरों के ऊपर अपनी प्रधानता समझने का घमंड होता है। ऐसा उत्तेजित दिमाग तेजी से नाटकीय व्यवहार, वातोन्माद, संत्रास के चौथे गियर में पहुँच जाता है और अधिवृक्क रस की निरंतर वृद्धि रक्तचाप को बढ़ा सकती है, और उद्दीप्य आंत्र सहलक्षण, बैचेन पैर, थकावट की वजह हो सकती है।

निम्न आत्म सम्मान मानसिक खलबली, उदासी के दौर, शिकायत करने की सनक, खाने की तृष्णा एवं परिस्थितियों और लोगों में, बल्कि खुद के अंदर भी, नकारात्मकता देखने की प्रवृत्ति को जन्म देता है। यह अनवरत चिंतित अंतर्भाव अवसाद की ओर ले जाता है, तंत्रिकावसाद शरीर की रोग प्रतिरोधकक्षमता को कम करता है और तंत्रिकाओं, दिल को प्रभावित करता है और अस्थिर रक्तचाप चिंता में वृद्धि करता है।

तो, मुझे लगता है कि भावनाओं पर काम करने का वक्त आ गया है। जब हम अतिसंवेदनशील होते है,

हमारी अवधारणा विकृत हो जाती है। विकृति स्वयं को निकम्मा समझने में है। विकृति स्वयं को मानवजाति को मिले तोहफे के रूप में देखने में भी है। इसलिए, हमें फिर से अपनी भावनाओं की तरफ जाना होगा, उनपर ध्यान देना होगा, उनके बुखार को शांत करना होगा, उनमें कुछ संतुलन, कुछ परिपक्वता डालनी होगी ताकि वे अनुभवों से स्वयं को मुक्त कर सकें।

अगर हम अपनी भावनाओं को गहराई से देखे तो हमें महसूस होगा कि वह हमारे अस्तित्व में उठती और गिरती रहती है बिल्कुल ज्वारीय लहरों की तरह क्योंकि हम बहुत ज्यादा आत्मलीन है - हम सदा तवज्जो, अनुमोदन, सहानुभूति, खुशामद, आश्वासन की अभिलाषा करते है। इसलिए, निम्न आत्म सम्मान से ग्रसित व्यक्ति विषादपूर्वक बार-बार कहता है, ''मैं बेकार हूँ, मुझे लगता है मैं असामान्य हूँ'' और सुनने वाले की तरफ से स्वाभाविक प्रतिक्रिया आती है, ''बिल्कुल नहीं! तुम बहुत अच्छे हो, बहुत बुद्धिमान हो'' और भी बहुत कुछ। उच्च आत्म सम्मान वाला व्यक्ति कहता है, ''जब मैं कमरे में प्रवेश करता हूँ, सब मुझे ही देखते है! और सुनने वालों से प्रतिक्रिया आती है, वाह! हाँ, तुममें आकर्षण है...'' इत्यादि। इन अत्यधिक लालसाओं के लिए स्वयं को आंकने की कोई जरूरत नहीं है, हमें बस स्वयं से परे ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। आप देखेंगे, हमारे ध्यान ने गलत मार्ग ले लिया है जो कि हमेशा स्वयं की ओर जाता है। यह बिल्कुल आंखों का स्वयं को देखने की कोशिश करने जैसा है! इसलिए स्वयं पर अत्यधिक ध्यान हमें तनाव और तकलीफ देता है।

बाहर की तरफ देखें। अपने घर को ध्यान से देखकर, उसकी सुन्दरता, उसकी सुखदता, उसकी गर्मजोशी की प्रशंसा करके हम बाहरी प्रक्रिया की शुरुआत कर सकते है। प्रशंसा एक मधुर आलिंगन है - हम उन चीज़ों और परिस्थितियों को महसूस करते है जो हमें खुश, सकुशल और सुरक्षित रखती है। फिर हम हमारे जीवन में लोगों की तरफ प्यार और हमदर्दी से देखते है - उनके दयालु स्वभाव को, मुसीबत में होने पर उनके द्वारा दिखायी जाने वाली हिम्मत को, उनके सामंजस्य, निश्चय और हास्य को। हम इस प्रेमभाव को उन लोगों तक विस्तारित करते है जो दिनभर में हमारे सामने आते-जाते है - विक्रेता या कर्मचारी जो दिन-प्रतिदिन लगातार, बिना कोई शिकायत किये काम करते रहते है और हम विपरीत परिस्थितियों में भी उनके इस हिम्मत ना हारने वाले ज़ज्बे को सलाम करते है।

मेरा यकीन मानिये, जब आप इस अभ्यास को रोजाना करेंगे, तो आपके स्वयं के द्वारा निर्मित सख्त आवरण नर्म पड़ जायेगा और वास्तव में कुछ अच्छा होगा - आप महसूस करेंगे कि आपने अपने अंदर दूसरों के लिए कितना प्रेम दबाए रखा था। आप इसे महसूस करेंगे और यह एहसास एकदम चमत्कारी होगा। जब हम सभी की ओर प्यार और आभार से देखते है, हम वास्तव में अपने ह्रदय को मिठास, इस प्रेम की कोमलता में डुबो देते है और इसे अत्यंत आराम मिलता है और यह स्वस्थ महसूस करता है।

बुद्ध की उपस्थिति। हमें अपने दिमाग को अपने और सबके प्रति निष्पक्ष होना सिखाने की भी जरुरत है - हमें समझने वाला और अपनाने वाला बनना होगा ना कि मांग करने वाला और समालोचक। अभ्यास : आईने में देखिये। अपने अंदर बुद्ध की कल्पना करें, जो शांत और स्थिर है। इस शांतिदायक स्थिति में रहिये। देखिये की कहीं आपका दिमाग बुद्ध से अलग बनने की मांग तो नहीं कर रहा, इस मनोरम उपस्थिति पर बिना कोई धारणा बनाये स्वयं पर ध्यान दीजिये। बुद्ध की उपस्थिति जैसी भी है एकदम उचित है। अपने अंदर की समरसता को महसूस कीजिये। आतंरिक समरसता एक परिपक्व, संतुलित, स्वस्थ आत्म सम्मान को चिन्हित करती है।

अब, दूसरे लोगों पर अभ्यास कीजिये। उनके अंदर बुद्ध के होने की कल्पना कीजिये। ना कोई मांग, ना कोई अवलोकन, इसलिए, ना कोई आशा, ना कोई चिंता। फिर से, समरसता को महसूस कीजिये। इस काल्पनिक पद्धति का अपनी सभी गतिविधियों के साथ अभ्यास कीजिये। इससे स्वयं को नीचा दिखाने वाले विचारों और स्वयं को प्रोत्साहित करने वाले विचारों को त्यागने की प्रवृत्ति विकसित होती है। और आप अपने स्वयं के रूप में आ जाते है। भावनात्मक धुंध के छंट जाने के कारण एक स्पष्टता उभरती है। टिप्स : अपने व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण रास्ते पर सुनिश्चित रूप से सतत बढ़ते रहने के लिए, दूसरों से स्वयं की तुलना करना बंद कीजिये। और, हाँ, उन लोगों से दूर रहिये जो हर मौके पर आपको नीचा दिखाने की कोशिश करते है।

एक स्थायी मार्ग पर चलना और एक स्थिर बुनियादी ज्ञान की तरफ दिमाग को ले जाना आवश्यक है। हम सबके अंदर एक गुण है जिसमें परिपूर्णता है बजाए मात्रा के जिसमें खालीपन है। इसलिए, हताश मत होइए। अपने अंदर विद्यमान बुद्ध को मजबूती प्रदान कीजिये और अपनी परिपूर्णता में वापिस लौटिये। जब दिमाग शांति और समरसता में होता है, शरीर आराम और सहूलियत महसूस करता है। और फिर यह सहजता से आपके द्वारा चुना गया कोई भी अभ्यास, कोई भी गतिविधि कर सकता है। आपकी मुस्कुराहट एक उज्जवल मिलान बिंदु है जहाँ मस्तिष्क और होंठ और आंखें तालमेल में होती है। आपकी मुस्कुराहट एक सुन्दर तुल्यकारक है क्योंकि यह कहती है, मैं ठीक हूँ। आप ठीक है। और आपकी आतंरिक उपस्थिति चमकती है।

लेखक *फिटनेस फॉर लाइफ* और *सिम्पली स्पिरिचुअल-यू आर नैचुरली डिवाईन* किताबों के लेखक है और *फिटनेस फॉर लाइफ* कार्यक्रम के शिक्षक है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

उचित गद्दा खरीदें

रशीदा भगत

आप अपने बिस्तर के लिए गद्दे का चयन करते या खरीदते वक्त कितना समय लगाते है? और कितनी जल्दी हम गद्दों को घुमाते है, या उसे पलटते है, या उसे एक नए गद्दे से बदलते है? यही सवाल हमारे द्वारा उपयोग किये जाने वाले तकिये के लिए भी उचित है।

दुर्भाग्यवश, भारत में, दुबई फर्नीचर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी (DFMC), जो उच्च गुणवत्ता वाले गद्दों - सेर्टा ब्रांड जो कि यूएस में पहले नंबर पर है और किन्नाकोइल ब्रांड जिसकी मिडिल ईस्ट में 60 प्रतिशत मार्केट हिस्सेदारी है - का निर्माण करती है, के कार्यकारी निदेशक एस. सुन्दर राजन कहते है।

वह कहते है की पश्चिमी देशों के अतिरिक्त दुबई जैसी जगहों पर भी, गद्दे खरीदने से पहले लोग बहुत सारी जाँच पड़ताल करते है क्योंकि उन्हें लगता है कि सही गद्दे का चुनाव, उसका सही इस्तेमाल और उसका रख-रखाव आपकी सेहत में बहुत योगदान देता है। ''आप आपके जीवन का एक तिहाई हिस्सा बिस्तर पर बिताते है, इतना समय आप रोजाना और कहीं नहीं बिताते... चाहे वह आपकी कार हो, सोफा हो, या एक कुर्सी हो। रात में एक अच्छी नींद आपको ताज़ा, चुस्त, चपल रखेगी और अगले दिन आप अच्छे काम की आशा रख सकते है। लेकिन रात में एक अच्छी नींद के बगैर, आप अगले दिन ख़राब महसूस करेंगे,'' वह कहते है।

एक उभरता हुआ बाज़ार

वह कहते है कि भारत में लोग अभी-अभी रात्रि की एक अच्छी नींद का महत्व समझने लगे है; ''युवा अब स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे है, जिसे जिमों के प्रसार से देखा जा सकता है, लेकिन एक अच्छे गद्दे का महत्व समझना अभी बाकि है।'' और इसलिए भारत में कपास के गद्दों के बाद, नारियल-जटा और फोम के गद्दे प्रचलित है, लेकिन एक गुणवत्ता वाले स्प्रिंग गद्दों के बाज़ार का विकसित होना अभी बाकि है।

उनके अनुमान से भारतीय गद्दों का बाज़ार रु 300-400 करोड़ का है, कपास के बाज़ार को छोड़कर जो पूरी तरह असंगठित क्षेत्र के हाथों में है। स्प्रिंग के गद्दों का बाज़ार बहुत छोटा है, और संगठित क्षेत्र में मुख्यतः नारियल की जटा और फोम के गद्दों के बाज़ार का वर्चस्व है, और कुछ हिस्सा लेटेक्स बाज़ार का है। विकसित देशों में अनुपात उल्टा है जहाँ स्प्रिंग के गद्दों का बाज़ार लगभग 90 प्रतिशत है और बाकि चीज़ों का सिर्फ 10 प्रतिशत, वह कहते है।

लेकिन इस बाज़ार की बढ़ने की संभावना है और इसलिए उनकी कंपनी ने सेर्टा ब्रांड के गद्दों के साथ भारत में प्रवेश किया है, जो मूल रूप से उत्कृष्ट स्प्रिंग गद्दे है। ''हमारी कंपनी के शोरूम बेंगलुरु, मुंबई और अब चेन्नई में भी है।'' भारत में उनके पास 14 जगहों पर फ्रेंचाईज़ी है और धीरे-धीरे फ़ैल रहे है, कोलकाता और बाकि के पूर्वी एवं उत्तर पूर्वी हिस्सों पर फैलना उनका अगला लक्ष्य है। ''भारत में एक बार लोग गद्दे खरीद लेते है और उसका उपयोग

विकसित देशों में ग्राहक गद्दों का चयन करने में बहुत समय लगाते है। भारत में ग्राहक गद्दे को छूते और महसूस करते है, और ज्यादा से ज्यादा उसपर बैठते है। लेकिन केवल छूने और महसूस करने और उस पर बैठने से आप निश्चय नहीं कर सकते। आपको लेटना होगा।

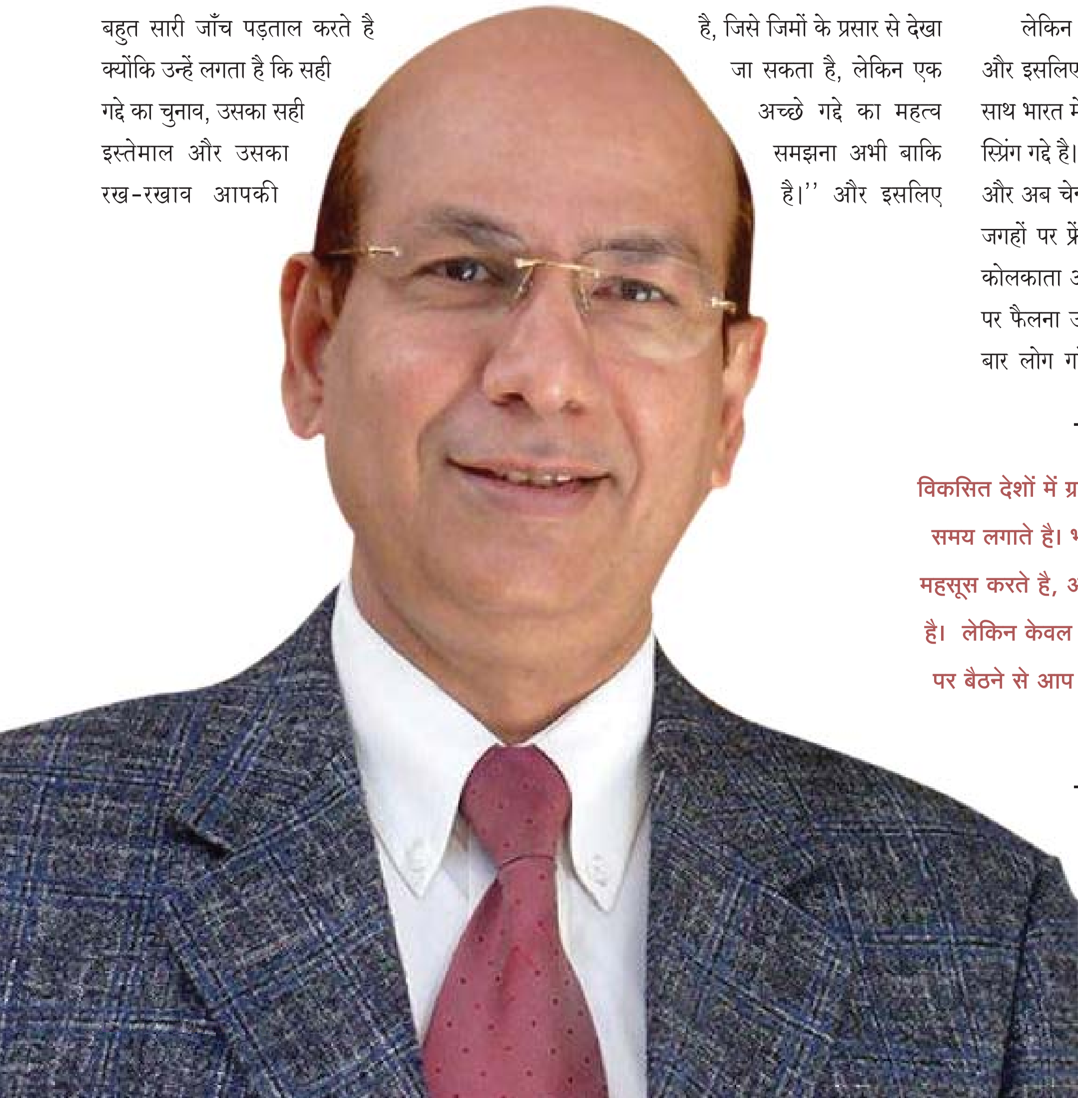

एस सुन्दर राजन, कार्यकारी निदेशक, दुबई फर्नीचर मैन्युफेक्चरिंग कंपनी।

हमारी होटल व्यवसाय में मजबूत पकड़ है और भारत में अधिकतर पाँच सितारा होटलें हमारे सेर्टा गद्दों का इस्तेमाल करते है क्योंकि वे हमारी ब्रांड और गुणवत्ता पर भरोसा करते है।

करने लगते है, फिर उन्हें अहसास होता है कि वे अब तक किस चीज़ से चूक गए थे, और फिर बाते फैलती है और उनके पड़ोसी और दोस्त हमारे पास आते है।''

इन गद्दों की कीमत सिंगल साइज़ के लिए रु 30,000 से शुरू होकर रु 1.5 से 2 लाख तक की है। ''लेकिन हमारा ज़ोर गुणवत्ता पर है, मुख्यतः स्प्रिंग के बने हमारे गद्दों में लगने वाले कच्चे माल पर हमने बहुत ज्यादा ध्यान दिया है। वायर यूरोप से और स्प्रिंग बनाने वाली मशीने यूएस से मँगवाई जाती है। गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया जाता है।'' इसके बाद फोम को जर्मनी के बेयर से सप्लाई किये गए विशेष केमिकल और बेल्जियम से आने वाले फैब्रिक का उपयोग करके दुबई में बनाया जाता है। फोम को दुबई में बनाकर भारत भेजा जाता है, जहाँ गद्दों को संकलित जाता है। कर्मचारियों को भी दुबई में प्रशिक्षित करके पुणे भेजा जाता है, DFMC ने एक निर्माण कारखाना स्थापित किया है जिसकी एक दिन में 200 गद्दे बनाने की क्षमता है।

राजन कहते है कि यद्यपि सेर्टा अभी तक घरेलू बाज़ार में एक अग्रणी कंपनी नहीं है, फिर भी ''हमारी होटल व्यवसाय में मजबूत पकड़ है और भारत में अधिकतर पाँच सितारा होटलें हमारे सेर्टा गद्दों का इस्तेमाल करते है क्योंकि वे हमारी ब्रांड और गुणवत्ता पर भरोसा करते है और वापस आकर कहते है कि उनके मेहमान इसकी गुणवत्ता और सहूलियत के बारे में बहुत बात करते है।''

गद्दों का रख-रखाव

तो गद्दों का रख-रखाव कितना महत्वपूर्ण है, और कितनी जल्दी आपको इन्हें बदलना चाहिए?

''आपके गद्दों को 7-10 सालों के बीच बदलना बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन यह अवधि इस बात पर निर्भर करती है कि आप गद्दों का रख-रखाव कैसे करते है,'' राजन कहते है। वह गद्दों को हर तीन महीने में एक बार घुमाने का सुझाव देते है; और अगर यह दो-तरफ वाला है तो ''गद्दे को हर छह माह में एक बार पलटना अति आवश्यक है। यह उसके टिकाऊपन को सुनिश्चित करता है और रीढ़ को उचित सहारा एवं आराम देता है और अच्छा महसूस करवाता है। तो केवल एक अच्छा गद्दा खरीदना ही महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उसका रख-रखाव भी उतना ही महत्वपूर्ण है।''

उस अवधारणा का क्या कि पीठ दर्द से पीड़ित लोगों को सख्त कपास के गद्दों का इस्तेमाल करना चाहिए? ''वास्तव में यह मिथ्या है; सख्त सतह मायने नहीं रखती। यदि किसी व्यक्ति को पीठ में समस्या है और वह किसी नरम गद्दे पर लेटता है, तो दर्द बढ़ जाता है। इसलिए, उसे उस गद्दे का चयन करना चाहिए जो उसके लिए सही हो... हमारे पास बहुत नर्म से लेकर बहुत सख्त गद्दों तक की श्रृंखला है... तो अपने लिए उपयुक्त गद्दे का चयन करें। यदि आप सही गद्दे का चुनाव करते है, तो आप आराम से सो सकते है, लेकिन यह आपकी समस्या को ठीक नहीं करेगा।''

गद्दे का चयन

तो कैसे आप आपके लिए उपयुक्त गद्दे का चुनाव करते है?

वह कहते है कि विकसित देशों में ग्राहक गद्दों का चयन करने में बहुत समय लगाते है; शोरूम पर जाने से पहले वे इंटरनेट पर कुछ खोज करते है ''और उनके दिमाग में कुछ रहता है कि किस प्रकार का

स्प्रिंग गद्दों का निर्माण।

उत्पाद उन्हें खरीदना है। शोरूम में गद्दों की श्रृंखला होती है और ग्राहक आम तौर पर गद्दे पर लेटते है, उस पर दायें-बायें करवट लेते है और अक्सर यदि कोई एक व्यक्ति आता है, तो वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ दोबारा आता है और वे सब अलग-अलग गद्दों की जांच-परख करते है और फिर निश्चय करते है कि कौनसा गद्दा खरीदना है। यहाँ तक कि वे ढीले कपड़े पहन कर आते है जो रात्रि के वस्त्रों की तरह होते है। यह एक प्रक्रिया है; वे प्रक्रिया से गुजरते है और आखिरकार चुनाव करते है।''

लेकिन भारत में, , ग्राहक इस प्रक्रिया के तहत नहीं चलते; ''वे छूते और महसूस करते है, और ज्यादा से ज्यादा उसपर बैठते है। लेकिन केवल छूने और महसूस करने और उस पर बैठने से आप निश्चय नहीं कर सकते। आपको लेटना होगा।''

राजन अफ़सोस करते है कि ज्ञान और जागरूकता की कमी के कारण, भारत में बहुत अमीर लोगों के घरों में भी साधारण गद्दे होते है। ''लोगों के पास मर्सिडीज़ और बीएमडब्ल्यू है, एक शानदार, सुसज्जित घर है, लेकिन वे एक सस्ते नारियल की जटा वाले गद्दे का इस्तेमाल करते है, बजाय एक गुणवत्ता वाले गद्दे को इस्तेमाल करने के जो रात्रि की एक अच्छी नींद के लिए बेहद जरुरी है।''

तकिये

उसी प्रकार, जो तकिया आप इस्तेमाल करते है वह भी बहुत महत्वपूर्ण है। DFMC 12 विभिन्न

लोगों के पास मर्सिडीज़ और बीएमडब्ल्यू है, एक शानदार, सुसज्जित घर है, लेकिन एक सस्ता गद्दा, बजाय एक गुणवत्ता गद्दे को इस्तेमाल करने के जो रात्रि की एक अच्छी नींद के लिए बेहद जरुरी है।

प्रकार के तकियों का निर्माण करता है; ''अगर आप सही गद्दे और तकिये का चयन करते है, तो अगले दिन आपकी ताजगी, ऊर्जा स्तर और हाल-चाल यह प्रदर्शित करेगा कि आपकी रात्रि की नींद अच्छी थी।''

भारत में भी, अधिकतर घरों में हम पहले पलंग खरीदते या बनाते है और फिर गद्दे खरीदते है। तो बेस कितना महत्वपूर्ण होता है? ''अति महत्वपूर्ण; यह घर की नींव की तरह होता है। हम दो तरह के बेस बनाते है; स्प्रिंग और प्लेटफार्म। प्लेटफार्म बेस कनाडियाई देवदार की लकड़ी का बना होता है, यह गद्दे के वजन को संभालता है, उसे अच्छी तरह सहारा देता है और उसके टिकाऊपन को सुनिश्चित करता है और इसकी कीमत गद्दे की कीमत का लगभग 40 प्रतिशत होती है।''

वह आगे कहते है कि बहुत से ग्राहक शोरूम आते है, गद्दे का अनुभव करते है और केवल गद्दा खरीदते है। ''लेकिन उन्हें वही अनुभव, सहारा और आराम महसूस नहीं होता क्योंकि जो बेस या पलंग वो घर में उपयोग करते है वह अलग होता है। और वे कहते है कि उन्हें वैसी अनुभूती नहीं हो रही है और यह कि आपके गद्दे एक सा अनुभव नहीं देते है। जब हम जाँच पड़ताल करते है, तो हम पाते है कि बेस सही नहीं है और वह गद्दे का वजन नहीं झेल पा रहा है जो 100 किलोग्राम तक वजनी हो सकता है।''

बच्चों के गद्दे

यह जानना रोचक है कि कंपनी बच्चों के लिए भी अलग प्रकार के गद्दे बना रही है और हमारे बच्चों के गद्दे मध्य पूर्व में काफी प्रचलित है। ''फिर से, ऐसी गलत धारणा है कि बच्चों के लिए आपको बहुत मुलायम गद्दे खरीदना चाहिए। लेकिन बहुत मुलायम गद्दे बच्चों के लिए अधिक उपयुक्त नहीं है, क्योंकि उनका मेरुदंड निर्माण अवस्था में होता है और शुरुआती दिनों में उसको बहुत अच्छे सहारे की जरुरत होती है। बच्चे को गद्दे में धंसना नहीं चाहिए; गद्दे को इतना सख्त होना चाहिए कि वह बच्चे के मेरुदंड को समुचित सहारा दे सके जिससे कि वह अच्छी तरह एवं सीधे बढ़ सके।''

साथ ही, बच्चों के गद्दों में कुछ विशेष गुण है; उसका कपड़ा अधिक मुलायम है, जल प्रतिरोधी है, अग्नि प्रतिरोधी है, सूक्ष्मजीवीरोधी है, और एलर्जी रोधी है। इसकी लागत लगभग रु 20,000 है।■

TRF WAS-MGI Chair

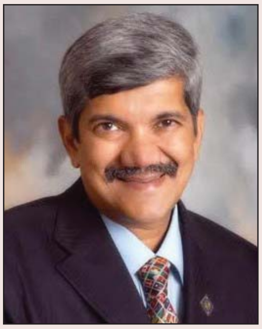

PDG Vinay Kulkarni will continue to chair the TRF's WAS-MGI (Water and Sanitation – Major Gift Initiative) Committee formed in 2016–17. The Committee has a goal of raising $25 million over 3–5 years, besides educating Rotarians and Friends of Rotary on the global need for water and sanitation. The Committee also works closely with Endowment/Major Gift Advisors to solicit contributions.

Kulkarni is also a member of TRF Fund Development Committee since July 1, 2017. His term ends in 2020.

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,17,324

Clubs : 35,594

Districts : 539

Rotaractors : 2,49,527*

Clubs : 10,849*

Interactors : 5,14,487*

Clubs : 22,369*

RCC members: 2,26,343*

RCC : 9,841*

* As on January 2, 2018

Membership Summary

As on January 2, 2018

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	112	4,593	218	60	225	173
5	2982	67	2,966	93	61	111	43
5	3000	123	5,132	412	289	653	195
4	3011	75	3,304	634	57	106	25
4	3012	83	3,260	611	68	125	55
5	3020	93	4,135	199	117	461	351
4	3030	92	4,954	613	74	307	164
4	3040	92	2,008	213	53	119	136
4	3053	69	2,695	423	16	37	93
4	3054	130	6,300	1,004	92	305	473
4	3060	98	4,074	420	64	119	130
4	3070	102	2,961	267	67	156	54
4	3080	75	3,270	214	71	215	108
4	3090	78	2,111	83	32	36	122
4	3100*	72	1,673	71	11	73	146
6	3110	110	3,882	296	51	49	104
6	3120	78	3,328	359	37	56	50
4	3131	130	5,340	1,035	106	275	80
4	3132	105	4,068	411	63	199	138
4	3141	90	5,352	1,121	118	252	87
4	3142	83	3,069	453	67	186	69
5	3150	98	3,575	347	93	228	109
5	3160	69	2,398	114	23	46	81
5	3170	128	5,583	398	58	302	160
5	3181	70	3,064	228	31	172	104
5	3182	79	3,259	238	32	271	91
5	3190	128	4,992	564	144	349	50
5	3201	139	5,182	318	99	124	47
5	3202	128	4,813	234	100	431	45
5	3211	137	4,393	262	12	89	123
5	3212	95	3,864	231	111	271	126
5	3231	67	2,820	112	55	196	237
5	3232	97	3,939	522	137	303	82
6	3240	86	2,968	338	61	146	151
6	3250	98	3,774	677	46	205	176
6	3261	66	2,419	213	16	102	42
6	3262	96	3,283	378	44	68	75
6	3291	145	3,782	710	78	131	587
India Total		**3,683**	**1,42,583**	**15,034**	**2,714**	**7,499**	**5,082**
5	3220	67	1,871	230	82	199	77
6	3271	80	1,417	240	49	16	13
6	3272	155	3,064	438	41	36	36
6	3281	204	5,674	793	228	84	186
6	3282	138	3,927	381	133	43	41
6	3292	114	4,360	645	121	113	109
S Asia Total		**4,441**	**1,62,896**	**17,761**	**3,368**	**7,990**	**5,544**

**Non-districted.*

Source: RI South Asia Office

रोज़गार मेला ज़रा हटके

किरण ज़ेहरा

मंडल 3141 के रोटेरियनों द्वारा मुंबई में आयोजित एक रोजगार मेले ने बेरोजगारों को नौकरी दिलाने के साथ-साथ उनके परिवारों को बेहतर आजीविका प्रदान करने में मदद की।

वह नियोक्ताओं को उसकी शारीरिक विकलांगता के बारे में बताने को लेकर हमेशा चिंतित रहती थी। ''मैं उन्हें फ़ोन करती थी, इंटरव्यू का समय निर्धारित होता था। लेकिन, उनके द्वारा मुझे एक व्हीलचेयर पर देखे जाने और मुझे मेरी अपंगता के कारण अस्वीकृत किये जाने के डर ने मुझे कभी आमने-सामने बैठकर होने वाले इंटरव्यू में शामिल नहीं होने दिया,'' प्रियेशा कृष्णन सारंग कहती है। 13 वर्ष की उम्र से ही व्हीलचेयर का सहारा लेने वाली उस लड़की ने कभी नहीं सोचा था कि रोटरी रोजगार मेले में शामिल होने से उसकी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल जाएगी। वह अब यूरेका फोर्ब्स यूरोएबल - भारत का पहला अत्याधुनिक कॉल सेंटर जिसे निःशक्तजनों द्वारा ही संचालित किया जाता है - में काम करती है और उसने अपनी पहली तनख्वाह भी प्राप्त कर ली है।

मंडल 3141 के रोटरी क्लबों ने मिलकर 16 से 23 सितंबर, 2017 के मध्य अँधेरी, माटुंगा और मुलुंद जैसी अलग-अलग जगहों पर एक बड़े रोजगार मेले का आयोजन किया, जिसने समाज के विभिन्न तबके के लोगों को आकर्षित किया। यूरेका फोर्ब्स, ब्लू डार्ट, एचडीएफसी, एलआईसी इंडिया, और 90 अन्य कंपनियों ने रोजगार मेले में हिस्सा लिया, जिनका भुगतान पैकेज रु 1.4 लाख से लेकर रु 3 लाख सालाना तक का था। हालाँकि,

3000 उम्मीदवारों में से केवल 1,000 उम्मीदवार ही इंटरव्यू में सफल हो पाए और कंपनियों द्वारा चुने गए। 650 उम्मीदवारों को तुरंत ही नियुक्ति पत्र सौंप दिए गए जिनमें से एलआईसी ने 230 व्यक्तियों को नौकरी पर रखा।

''लगभग पाँच महीने से अधिक समय तक हमने रोजगार मेले की योजना बनाई और पूरे मुंबई में प्रकाशन एवं सोशल मीडिया - व्हाट्सएप ग्रुपों और फेसबुक पोस्टों - के माध्यम से इसका प्रचार किया, इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि यह समारोह हर उस व्यक्ति को आकर्षित कर सके जो नौकरी की तलाश में है,'' मंडल सचिव गिरीश मित्तल कहते है।

बेरोजगार युवाओं को नौकरी दिलाने के इस मेले के मुख्य उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, *रोटरी रोज़गार मेले* को ''सूट और बोर्डरूम के बिना अनौपचारिक रखा गया था। सभी नियोक्ता और कर्मचारी आमने-सामने बैठे थे। वे तात्कालिक साक्षात्कार के लिए अनौपचारिक कपड़ों में आ सकते थे और उस संगठन की जॉब प्रोफाइल एवं कार्य संस्कृति पर चर्चा कर सकते थे जिससे वे जुड़ने जा रहे थे। नियोक्ता संभावित कर्मचारियों से मिले जिससे भर्ती प्रक्रिया में लगने वाला महत्वपूर्ण समय बच गया।''

इंटरव्यू का समय निर्धारित होता था। लेकिन, उनके द्वारा मुझे एक व्हीलचेयर पर देखे जाने के डर ने मुझे कभी आमने-सामने बैठकर होने वाले इंटरव्यू में शामिल नहीं होने दिया।

प्रियेशा कहती है, ''मैं अपनी अवस्था के बारे में मेरे नियोक्ता से पूर्ण रूप से खुलकर चर्चा कर सकी और यह जाना कि समर्थन और समायोजन उपलब्ध थे।'' अपने नियोक्ता की प्रशंसा करते हुए, वह आगे कहती है, ''उनके पास केवल व्हीलचेयर वाले लोगों के लिए विशेष कार्यस्थल है। हालाँकि, नौकरी के लिए चुने जाने से लेकर कैरियर में वृद्धि तक, हमारा मूल्यांकन सख्त प्रदर्शन मापदंडों के आधार पर किया जाता है। उसमें कोई रियायत नहीं है।''

कुछ नियोक्ताओं ने अपने नवीन कर्मचारियों को काम पर आने के बाद उनके कौशल विकास कार्यक्रमों का लाभ लेने के लिए भी प्रोत्साहित किया। मुलुंद के पंकज एस. हांडे, जिन्हें आईटी सोर्स टेक्नोलॉजी द्वारा नौकरी के लिए चुना गया कहते है, ''ये प्रशिक्षण कार्यक्रम मुझे नवीनतम प्रचलित सॉफ्टवेयरों के साथ अपडेट होने में मेरी मदद करेंगे और कैरियर में मेरी वृद्धि के लिए लाभकारी होंगे।''

श्रीपद एस बाने, जिन्हें एक निजी कंपनी में सुरक्षा कर्मचारी के रूप में नियुक्त किया गया, के लिए इस रोजगार मेले ने उन्हें उनकी ''ज़िंदगी लौटा दी। अब मैं मेरी बच्ची को नृत्य कक्षा के लिए भेज सकता हूँ। उसका बड़ा मन था लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे। इस नौकरी के लिए मैं रोटरी का जितना भी धन्यवाद करूं कम है।''

डी जी प्रफुल्ल शर्मा ने मंडल 3141 के उन सभी क्लबों और रोटेरियनों की प्रशंसा की एवं उन्हें धन्यवाद दिया जिन्होंने इस रोजगार मेले को सफल बनाने के लिए अपना योगदान दिया। यह परियोजना अब एक वार्षिक घटना बनने जा रही है।■

रोटरी क्लब विल्लुपुरम-मंडल 2982

सुद्धा संमार्ख पयिर्ची निलयम नामक एक NGO, जो 70 अनाथों एवं कुड्डालोर के 40 बेघर लोगों को भोजन और आवास प्रदान करता है, को क्लब ने सीलिंग फेन और मच्छरदानी दान की।

रोटरी क्लब भोपाल मिडटाउन-मंडल 3040

एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें शहर के 15 हायर सेकेंडरी स्कूलों के 850 बच्चों ने भाग लिया और विभिन्न विषयों पर अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया।

रोटरी क्लब बरेली मेट्रो-मंडल 3110

एक उप-जूनियर बैडमिंटन खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें अलग-अलग स्कूलों से 80 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इसे जूनियरों को प्रोत्साहित करने के एक समारोह के रूप में आयोजित किया गया था।

रोटरी क्लब पानीपत साउथ-मंडल 3080

समुदाय को एक एम्बुलेंस वैन दान की गई और इसकी देख-रेख जन सेवा दल द्वारा की जाएगी। वाहन का उपयोग सुविधाओं से वंचित मरीजों को अस्पताल ले जाने के लिए किया जाएगा। यह इस वस्त्र उद्योग शहर के श्रमिक वर्ग के लोगों को लाभान्वित करते हुए हर साल 500 से भी अधिक मरीजों की मदद करेगा।

विधियाँ

रोटरी क्लब अलाहाबाद नार्थ-मंडल 3120

दीवाली के त्यौहार को चिन्हांकित करने के लिए ट्री ऑफ़ जॉय के उत्सव के अवसर पर इलाहबाद नगर निगम वार्ड के 40 सफाई कर्मचारियों को कपड़े, टॉवेल, मिठाइयाँ और घरेलु सामान देकर सम्मानित किया गया।

रोटरी क्लब चिन्चवाड़-मंडल 3131

मालावाली बच्चों के लिए एक दन्त और हीमोग्लोबिन जाँच शिविर का आयोजन किया गया। बच्चों को डेंटल किट्स बांटी गई और उन्हें मौखिक स्वच्छता बनाए रखने के बारे में भी सिखाया गया।

रोटरी क्लब नेल्लोर-मंडल 3160

क्लब ने तीन स्वास्थ्य शिविर आयोजित किये जिसमें 300 लोगों की जांच की गई और रोगियों को मुफ्त में दवाइयां दी गई। पंद्रह लोगों को आँखों की सर्जरी करवाने की सलाह दी गई।

रोटरी क्लब सांगली-मंडल 3170

सांगली के विधायक सुधीर गाडगिल ने एक छत सौर ऊर्जा परियोजना का उद्घाटन किया। परियोजना को दी रोटरी सिल्वर जुबली ट्रस्ट की सहायता से निष्पादित किया गया।

रोटरी क्लब अम्बरनाथ वेस्ट-मंडल 3142

क्लब द्वारा गोद लिए गए स्कूल में एक बोरेवेल स्थापित किया गया जो आसपास के 15 गाँवों को लाभान्वित करेगा। परियोजना की लागत रु 65,000 आई और स्कूल ने इलाके में पानी की कमी की समस्या को सुलझाने के लिए रोटरी को धन्यवाद देने हेतु एक प्रशंसा-पत्र भेजा।

रोटरी क्लब पाडूबीदरी-मंडल 3182

कपड़ा उद्योग कर्मचारियों और जनता के लिए सरकारी अस्पताल की मदद से एक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया जिसमें करीब 150 लोगों की विभिन्न रोगों के लिए जाँच की गई।

रोटरी क्लब तुमकुर ईस्ट-मंडल 3190

NHAI के साथ साझेदारी में एक पांच दिवसीय नेत्र शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें सिरसा तालुक के कराजीवनहल्ली के 400 ट्रक चालकों को चश्में वितरित किये गए। होसाकोटे के 'ग्लोब आई फाउंडेशन अस्पताल' द्वारा रोगियों की जाँच की गई। परियोजना की कुल लागत रु 2 लाख आई।

रोटरी क्लब उदूमालपेट तेजस-मंडल 3202

उदूमालपेट पुस्तकालय में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया गया। क्लब के अध्यक्ष एस. नागराज ने समारोह का उद्घाटन किया जिसमें स्कूल के बच्चों के लिए एक विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई।

रोटरी क्लब अल्लेप्पी-मंडल 3211

होप परियोजना के अंतर्गत, रु 1.5 लाख की लागत से अल्लेप्पी जनरल हॉस्पिटल के एक लघु ऑपरेशन थिएटर का नवीनीकरण किया गया। इसका उद्घाटन नगरपालिका अध्यक्ष थॉमस जोसफ द्वारा किया गया और फ़लक को डीजी सुरेश मैथ्यू द्वारा अनावरित किया गया।

रोटरी क्लब टिन्नेवेली-मंडल 3212

डेंगू पर एक जागरूकता रैली निकाली गई जिसमें लगभग 500 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम को ज़िला प्रशासन, प्राधिकरण और स्वास्थ्य विभाग का प्रोत्साहन मिला और इसने समुदाय में रोटरी की अच्छी छवि का निर्माण भी किया।

विधियाँ

रो ई मंडल-3231

'स्कूल्स इनटू स्माइल्स' परियोजना के अंतर्गत गुडीयट्टम के सरकारी हायर सेकेंडरी स्कूल को एक ई-शिक्षण किट दान की गई। डीजी के जवारीलाल जैन ने स्कूल प्राधिकरण को किट प्रदान की। परियोजना से लगभग 400 बच्चे लाभान्वित होंगे।

रोटरी क्लब सिलिगुड़ी मिडटाउन-मंडल 3240

रोटरी क्लब बिरतामोडे मिडटाउन, मंडल 3292, के साथ साझेदारी में रोटेरियनों ने थीम 'मैत्री' के अंतर्गत नेपाल में नए वस्त्र वितरित किए। क्लब के अध्यक्ष आशीष गुप्ता ने दोनों क्लबों के रोटेरियनों के साथ मिलकर सुविधाओं से वंचित लोगों और स्कूल के बच्चों को लेखन सामग्री, दवाइयां और स्वच्छता संबंधी वस्तुएं वितरित की।

रोटरी क्लब दरभंगा-मंडल 3250

आदर्श माध्यमिक विद्यालय में एक हैप्पी स्कूल परियोजना पूर्ण की गई। ज़िला मजिस्ट्रेट चंद्रशेखर सिंह ने चार नवीनीकृत शौचालयों, नयी जल सुविधा एवं पुस्तकालय का उद्घाटन किया और शिक्षकों को खेल उपकरण सौंपें। पिछले कुछ महीनों में क्लब ने स्कूल की आधारभूत संरचना के विभिन्न तत्वों को अपग्रेड किया।

रोटरी क्लब बेलीगुंगे अपटाउन-मंडल 3291

यंग स्टार क्लब की गणसास्थ्य समिति के सहयोग से पिकनिक गार्डन इलाके के डेंगू संक्रमित क्षेत्रों में मच्छरदानी बांटी गई। इस पहल से इलाके में रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि हुई।

रोटरी क्लब लुम्बिनी सिद्धार्थनगर-मंडल 3292

मर्चावर क्षेत्र के बाढ़ पीड़ितों के लिए भोजन वितरण कार्यक्रम के साथ एक बहुत बड़े स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। परियोजना में सभी क्लबों ने हिस्सा लिया जिससे 800 लोग लाभान्वित हुए क्योंकि स्वास्थ्य परीक्षण के बाद उन्हें मुफ्त में दवाइयां प्रदान की गई। क्लब की अध्यक्ष सावित्री गुरुंग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित

एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

किताब के लोकार्पण का सूत्र

LBW

टीसीए श्रीनिवास राघवन

पिछले साल मैंने एक किताब लिखी। प्रकाशक ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अभी के चलन के अनुसार किताब का लोकार्पण करना चाहता हूँ। मैंने कहा नहीं, क्योंकि मेरे लिए ये विपणन की पूर्णतः अनावश्यक नवीन पद्धति है। ये वास्तव में बिक्री को नहीं बढ़ाते है - मुझे यह कहने के लिए क्षमा कीजिए - अधिकतर लोग जो किताब लोकार्पण समारोह में शामिल होते है वे पढ़ने वाले लोगों में से नहीं होते। वे केवल दिखावे के लिए आते है। कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले लोगों में से मात्र बीस फीसदी लोग ही किताब खरीदते है। जो अधिकतम 50-75 प्रतियों के बराबर होती है। बाकि लोग सिर्फ सैंडविच और समोसा खाते है और चाय की चुस्की लेते है। कुछ लोग समारोह शुरू होने के पहले ही निकल जाते है लेकिन लेखक द्वारा देखे जाने से पहले नहीं। बिना खरीदी किये लोगों का खिसक लेना एकदम विवेकपूर्ण है क्योंकि वैसे भी किसे याद रहने वाला है?

इन लोकार्पणों का अर्थशास्त्र बड़ा ही रोचक है। दिल्ली के बुद्धि के केंद्र, भारतीय अंतर्राष्ट्रीय केंद्र में, लांच से पूर्व की चाय पर 200 लोगों को न्यौता देने की लागत लगभग रू30,000 आती है। कभी-कभी, यदि आप एक प्रसिद्ध लेखक है तो प्रकाशक लोकार्पण के बाद जश्न मनाने के लिए एक कॉकटेल पार्टी भी रख सकता है। इसकी लागत लगभग रू60,000 आती है। और अगर आप वास्तव में मशहूर है, तो फिर लगभग 50 लोगों का एक छोटा सा रात्रिभोज भी होता है जहाँ केवल स्टार्टर के रूप में स्कॉच और भुने हुए झींगे परोसे जाते है। बहुत से लोग हिसाब लगाते है कि रू500 की एक किताब खरीदने के बदले अगर मुफ्त में असीमित स्कॉच मिलती है तो यह किफ़ायती है, खासतौर पर जब आप अगले दिन उस किताब को आधी कीमत में बेच सकते हो या किसी को तोहफे में दे सकते हो।

कुछ लोग समारोह शुरू होने के पहले ही निकल जाते है लेकिन लेखक द्वारा देखे जाने से पहले नहीं। बिना खरीदी किये लोगों का खिसक लेना एकदम विवेकपूर्ण है क्योंकि वैसे भी किसे याद रहने वाला है?

पिछले सात सालों में, मैं केवल तीन लोकार्पण समारोहों में गया हूँ क्योंकि वे किताबें मेरे बहुत अच्छे दोस्तों द्वारा लिखी गई थी। बाद में मैंने उन सबसे पूछा, जिनमें से दो अत्यंत शर्मीले और संकोची व्यक्ति थे, कि क्यों वे लोकार्पण के लिए तैयार हुए। उन्होंने कहा कि प्रकाशक ने उन्हें ऐसा करने के लिए परेशान कर दिया था। मेरे प्रकाशक ने मुझसे कुछ नहीं कहा, जब मैंने जूलियस सीज़र की तरह तीन बार ना बोल दिया।

बहुत कुछ लेखक को एडवांस भुगतान करने पर भी निर्भर करता है। जितना ज्यादा एडवांस होगा, उतनी ही ज्यादा किताब की मार्केटिंग करने की जरूरत होगी ताकि उसकी वसूली की जा सके। इसलिए लोकार्पण एडवांस के अनुसार चलता है: लोकार्पण के बाद का खाना जितना महंगा होगा, उतना ही ज्यादा एडवांस रहा होगा। कार्यक्रम स्थल भी एक स्पष्ट संकेत है। एक पाँच सितारा होटल में लोकार्पण का मतलब है की बहुत मोटा एडवांस का भुगतान किया गया है। दूसरी ओर, एक कॉलेज के सभामंडप में लोकार्पण का बस यही मतलब नहीं कि कोई एडवांस नहीं दिया गया, बल्कि इसका मतलब यह भी है कि गरीब लेखक स्वयं चाय और ग्लूकोस बिस्किट का पैसा दे रहा है।

फिर आते है भारी भरकम तर्क-वितर्क करने वाले लोग जिन्हें किताब के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यहाँ पर मुझे एक भयानक राज़ साझा करना चाहिए। उनमें से एक ने मुझसे कहा कि उसने वास्तव में किताब नहीं पढ़ी और जल्दी-जल्दी उसके कवर पर लिखे विषय पर सरसरी नज़र डालने के बाद उसे बस उड़ा दी। मैं ऐसा सोचता हूँ क्योंकि अधिकतर तर्क-वितर्क करने वाले, यह कहने के बाद कि किताब कितनी शानदार है, ज्यादातर इस बारे में कहते है कि वे दुनिया के बारे में क्या सोचते है बजाए इसके कि लेखक क्या कहना चाहता है।

अधिकतर तर्क-वितर्क करने वाले, यह कहने के बाद कि किताब कितनी शानदार है, ज्यादातर इस बारे में कहते है कि वे दुनिया के बारे में क्या सोचते है बजाए इसके कि लेखक क्या कहना चाहता है।

यहाँ एक और समस्या है: एक तर्क-वितर्क करने वाले के रूप में, या एक सहभागी के रूप में भी, क्या आप भीड़ को यह कह सकते है कि यह एक सड़ी किताब है? क्या यह किसी दूल्हे को उसकी शादी वाले दिन यह कहना कि वह एकदम बेवक़ूफ़ लग रहा है?

इस दौरान, प्रकाशकों और लेखकों की किताब के प्रचार के महत्वपूर्ण पहलू - एक अच्छी तरह से लिखी गई समीक्षा - पर से नज़र हट गई है। हालाँकि लेखक लोकार्पण पर की गई बकबक से ज्यादा ऐसी समीक्षाओं को महत्व देते है। इसके अलावा, आज की डिजिटल दुनिया में, समीक्षाएं अनमोल है क्योंकि आप किताब की समीक्षा पढ़ने के बाद फ़ौरन किताब खरीद सकते है।

क्लिक, क्लिक, क्लिक।

खरीद ली।■

संक्षेप में

काम के लती लोगों को खदेड़ने के लिए ड्रोन

एक जापानी फर्म 'ताईसे' ऑफिस में कार्य-समय के बाद अत्यधिक काम करने वालों को बाहर निकालने के लिए ड्रोनों का इस्तेमाल करने की योजना बना रही है। ड्रोन पूरे कार्यालय में कर्मचारियों के ऊपर उड़ते हुए स्कॉटिश गाना, *ऑल्ड लेंग साइन*, बजाएगा जिससे कि वे घर जाने के लिए मजबूर होंगे। जापान सालों से अत्यधिक ओवरटाइम को खत्म करने का प्रयास कर रहा है जो कर्मचारियों में स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का कारण बन रहा है। हालाँकि, ओसाका यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर का विचार यह है कि काम के लती लोग उनका अधूरा काम घर ले जा सकते है और वह काम के बोझ को कम करने एवं अधिक कर्मचारियों की नियुक्ति की अनुशंसा करते है।

स्मार्ट बाथरूम

शावर को शुरू करने, पानी के तापमान को नियंत्रित करने, बाथटब को भरने से लेकर टॉयलेट सीट को गर्म करने तक - ये सभी काम आप अपने स्मार्टफ़ोन पर इन्सटाल्ड 'अमेज़न एलेक्सा' को एक आदेश देकर कर सकते है। इसके अलावा, कोह्लर भी टॉयलेट के लिए एक स्मार्ट ढक्कन लेकर आ रहा है जो आपके, उसके पास पहुंचने पर स्वतः ही खुल जायेगा। कंपनी ने उसके डिजिटल सहायक को लॉस वेगास के CES शो में प्रदर्शित किया। बेशक, अपने टॉयलेट को स्वयं फ्लश करने का आदेश देना हास्यास्पद लग सकता है। लेकिन घरों एवं जीवन में अधिक वॉइस सहायकों के आगमन के बाद, आगामी वर्षों में आवाज और हाव-भाव पर प्रतिक्रिया देने वाली एक रहने की जगह को बनाना शायद सहज महसूस होगा।

अकेलेपन की मंत्री

यूके में अब अकेलेपन से निपटने एवं सामाजिक अलगाव का सामना करने के लिए एक मंत्री है। ट्रेसी क्राउच, वर्तमान में खेल एवं नागरिक समाज मंत्री, को ब्रिटिश प्रधान मंत्री थेरेसा मे द्वारा अतिरिक्त पद संभालने के लिए नियुक्त किया गया है। इस पद का सृजन मारी गई लेबर सांसद जो कॉक्स की स्मृति में किया गया है जिन्होंने स्वयं को सामाजिक अलगाव का सामना कर रहे लोगों की पूरे जोश के साथ मदद करने के लिए समर्पित किया था। अध्ययन बताते है कि नौ मिलियन से अधिक लोग अक्सर अकेला महसूस करते है जबकि 200,000 वृद्धजन ने एक माह तक किसी से बात नहीं की। ट्रेसी अकेलेपन पर जो कॉक्स समिति की अनुशंसाओं का पालन करेंगी और लोगों को जोड़ने वाली गतिविधियों की रूपरेखा बनाने के लिए एक कोष का निर्माण करेंगी।

चेन्नई का ISO घर

सुराना परिवार के खडज प्रमाणित घर सुधर्मा में स्वागत है। यहाँ पर हर एक गतिविधि सटीकता के साथ कार्य करती है और हर एक वस्तु को अच्छे तरीके से ध्यानपूर्वक सूचीबद्ध किया गया है। उनकी गुणवत्ता नीति के नियमों के अनुसार, यह हर समय प्रभावी, आवश्यकता आधारित भोजन, घर की देखभाल और सुविधा प्रबंधन प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। खडज दिशा-निर्देशों के अनुसार, परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक ओहदा और कार्य सौंपा गया है; हर कमरे का भी एक नाम है - रसोईघर *अन्नलक्ष्मी* है; भोजन कक्ष तृप्ति है; पूजा का कमरा *केवल्यधाम* है; बच्चों का कमरा *शिशु कुटीर* है, इत्यादि। परिवार से विभिन्न मापदंडों में प्रगति करने की अपेक्षा है, जिसमें स्वास्थ्य शामिल है।

कनाडियाई प्रधानमन्त्री पोंगल का उत्सव मनाते है

एक आकर्षक मुद्रा में, कनाडियाई प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो ने एक कुर्ता और पारंपरिक वेष्टि पहनकर पोंगल का उत्सव मनाया। उन्होंने उनके फेसबुक पोस्ट, जिसे छह घंटे के अंदर 21,000 लाइक्स मिले, में ''इनिया तै पोंगल नल्वाल्तुक्कल!'' (पोंगल की बधाइयां) कहकर कनाडियाई तमिल लोगों का अभिवादन किया। जनवरी 14 को, उन्होंने कनाडा के तमिल समुदाय को पोंगल की बधाइयां देने के लिए एक वीडियो भी साझा किया। टोरंटो के मेयर, जॉन टोरी, ने पोंगल की तैयारी करने में ट्रूडो की मदद की।

जयश्री द्वारा संकलित,
एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35

Inspiration
AROUND EVERY CORNER

The ring that changed everything

Serving others is pretty much reflexive for Rotarians, whether it's spreading hope or orchestrating critical connections. When the husband of Lesley Barmania, a Rotarian from Canada, became seriously ill in Korea just after they attended the 2016 convention, fellow Rotarians put her in touch with In-Seok Kim, a Rotarian from Busan, who launched an emergency blood drive for her husband's rare type. The connection proved to be lifesaving.

**Find your inspiration at the Rotary Convention in Toronto.
Register today at riconvention.org.**

Rotary

TORONTO 2018

ROTARY CONVENTION
23-27 JUNE 2018
TORONTO, ONTARIO, CANADA